ٱلْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَٰتٌ ۚ فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ ٱلْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِى ٱلْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا۟ مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ
ٱللَّهُ ۗ وَتَزَوَّدُوا۟ فَإِنَّ خَيْرَ ٱلزَّادِ ٱلتَّقْوَىٰ ۖ وَٱتَّقُونِ يَٰٓأُو۟لِى
ٱلْأَلْبَٰبِ ١٩٧ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُوا۟ فَضْلًا مِّن
رَّبِّكُمْ ۚ فَإِذَآ أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَٰتٍ فَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ عِندَ
ٱلْمَشْعَرِ ٱلْحَرَامِ ۖ وَٱذْكُرُوهُ كَمَا هَدَىٰكُمْ وَإِن كُنتُم مِّن
قَبْلِهِۦ لَمِنَ ٱلضَّآلِّينَ ١٩٨ ثُمَّ أَفِيضُوا۟ مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ ٱلنَّاسُ
وَٱسْتَغْفِرُوا۟ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ١٩٩ فَإِذَا قَضَيْتُم
مَّنَٰسِكَكُمْ فَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ كَذِكْرِكُمْ ءَابَآءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ
ذِكْرًا ۗ فَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا وَمَا لَهُۥ فِى
ٱلْءَاخِرَةِ مِنْ خَلَٰقٍ ٢٠٠ وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا
حَسَنَةً وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ٢٠١ أُو۟لَٰٓئِكَ
لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا۟ ۚ وَٱللَّهُ سَرِيعُ ٱلْحِسَابِ ٢٠٢
۞ وَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ فِىٓ أَيَّامٍ مَّعْدُودَٰتٍ ۚ فَمَن تَعَجَّلَ فِى يَوْمَيْنِ
فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ ۖ لِمَنِ ٱتَّقَىٰ ۗ وَٱتَّقُوا۟
ٱللَّهَ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ٢٠٣ وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن
يُعْجِبُكَ قَوْلُهُۥ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَيُشْهِدُ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا فِى
قَلْبِهِۦ وَهُوَ أَلَدُّ ٱلْخِصَامِ ٢٠٤ وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِى ٱلْأَرْضِ
لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ ٱلْحَرْثَ وَٱلنَّسْلَ ۚ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ

ٱلۡفَسَادَ ٢٠٥ وَإِذَا قِيلَ لَهُ ٱتَّقِ ٱللَّهَ أَخَذَتۡهُ ٱلۡعِزَّةُ بِٱلۡإِثۡمِۚ
فَحَسۡبُهُۥ جَهَنَّمُۖ وَلَبِئۡسَ ٱلۡمِهَادُ ٢٠٦ وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَشۡرِي
نَفۡسَهُ ٱبۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ ٱللَّهِۚ وَٱللَّهُ رَءُوفُۢ بِٱلۡعِبَادِ ٢٠٧ يَٰٓأَيُّهَا
ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱدۡخُلُواْ فِي ٱلسِّلۡمِ كَآفَّةٗ وَلَا تَتَّبِعُواْ خُطُوَٰتِ
ٱلشَّيۡطَٰنِۚ إِنَّهُۥ لَكُمۡ عَدُوّٞ مُّبِينٞ ٢٠٨ فَإِن زَلَلۡتُم مِّنۢ بَعۡدِ مَا
جَآءَتۡكُمُ ٱلۡبَيِّنَٰتُ فَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٢٠٩ هَلۡ
يَنظُرُونَ إِلَّآ أَن يَأۡتِيَهُمُ ٱللَّهُ فِي ظُلَلٖ مِّنَ ٱلۡغَمَامِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ
وَقُضِيَ ٱلۡأَمۡرُۚ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرۡجَعُ ٱلۡأُمُورُ ٢١٠

Theme	
Restrictions during Hajj. Performance of Hajj (pilgrimage). Hypocrisy vs. True belief. Commandment of entering into Islam completely.	हज के दौरान पाबंदियाँ। हज (ज़ियारत) की अदायगी। निफ़ाक़ बनाम सच्चा ईमान। इस्लाम में मुकम्मल तौर पर दाख़िल होने का हुक्म।
Tarjumani	
Hajj is in the well-known months. One who undertakes to perform it, must abstain from husband-wife relationship, obscene language, and wrangling during Hajj. Whatever good you do. Allah	हज के महीने सबको मालूम हैं | जो शख़्स इन मुकर्रर महीनों में हज की नीयत करे, उसे खबरदार रहना चाहिए कि हज के दौरान में उससे कोई शहवानी फ़ेल, कोई बादअमली, कोई लड़ाई-झगड़े की बात सरज़द न हो | और जो नेक काम तुम करोगे,

knows it. Take necessary provisions with you for the journey, but piety is the best of all provisions. Fear Me, O People endowed with understanding. There is no blame on you, if you seek the bounty of your Rabb during this journey. When you return from Arafat, (stop at Muzdalifah and) praise Allah at Al-Mashar Al-Haram. Praise Him as He has guided you, for before this you were of the people who had lost the Right Way. Then return from where the people return and seek Allah's forgiveness; surely, Allah is Forgiving, Merciful. When you have fulfilled your sacred duties, praise Allah as you used to praise your forefathers or with deeper reverence. There are some who say: "Our Rabb! Give us abundance in this world." Such people will not have any share in the hereafter. But there are others who say: "Our Rabb! Give us the good life, both in this world and in the Hereafter	वह अल्लाह के इल्म में होगा | सफ़रे-हज के लिए जादे-राह साथ ले जाओ, और सबसे बेहतर जादे-राह परहेज़गारी है | पस ऐ होशमन्दो! मेरी नाफ़रमानी से परहेज़ करो | और अगर हज के साथ-साथ तुम अपने रब का फज्ल भी तलाश करते जाओ तो इससे मुज़ायाका नहीं | फिर जब अरफ़ात से चलो तो मशअरे-हराम (मुज़दलिफा) के पास ठहरकर अल्लाह को याद करो और उस तरह करो जिसकी हिदायत उसने तुम्हें की है, वरना इससे पहले तो तुम लोग भटके हुए थे | फिर जहाँ से और सब लोग पलटते हैं वहीँ से तुम भी पलटो और अल्लाह से माफ़ी चाहो, यक़ीनन वह माफ़ करनेवाला और रहम फरमानेवाला है फिर जब अपने हज के अरकान अदा कर चुको तो जिस तरह पहले अपने आबा व अज्दाद का जिक्र करते थे, उस तरह अब अल्लाह का जिक्र करो, बल्कि उससे भी बढ़कर | (मगर अल्लाह को याद करनेवाले लोगो में भी बहुत फर्क है) उनमें से कोई तो ऐसा है, जो कहता है कि ऐ हमारे रब, हमें दुनिया ही में सब कुछ दे दे | ऐसे शख्स के लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं |और कोई कहता है कि ऐ हमारे रब, हमें

and save us from the torment of the fire. Such people shall have their due share in both worlds according to what they have earned, Allah is swift in settling the accounts. Pat Celebrate the praises of Allah during the appointed days (11th, 12th and 13th of Dhul-Hijjah). There is no sin if anyone hastens to leave Mina after two days and there is no sin to stay there a day longer, provided he spends these days in piety. Fear Allah and remember that you will surely be gathered before Him. Among the people, there is one whose speech fascinates you in this worldly life; he may even call upon Allah to witness what is in his heart, yet, he is your staunch opponent. And when he leaves you, he directs his efforts towards causing mischief in the land, destroying crops and cattle. Allah, Whom he makes his witness, does not like mischief. When it is said to him "Fear Allah," arrogance carries him off to sin. Hell will	दुनिया में भी भलाई दे और आखिरत में भी भलाई, और आग के अज़ाब से हमें बचा | ऐसे लोग अपनी कमाई के मुताबिक़ (दोनों जगह) हिस्सा पाएँगे और अल्लाह को हिसाब चुकाते कुछ देर नहीं लगती | ये गिनती के चन्द रोज़ हैं जो तुम्हें अल्लाह की याद में बसर करने चाहिएँ | फिर जो कोई जल्दी करके दो ही दिन में वापस हो गया तो कोई हरज नहीं, और जो कुछ देर ज्यादा ठहरकर पलटा तो भी कोई हरज नहीं | बशर्ते कि ये दिन उसने तकवा के साथ बसर किए हों -- अल्लाह की नाफ़रमानी से बचो और खूब जान रखो की एक रोज़ उसके हुज़ूर में तुम्हारी पेशी होनेवाली है | इनसानों में कोई तो ऐसा है जिसकी बातें दुनिया की ज़िन्दगी में तुम्हें बहुत ही भली मालूम होती हैं और अपनी नेक नीयती पर वह बार-बार ख़ुदा को गवाह ठहराता है, मगर हकीकत में वह बदतरीन दुश्मने-हक़ होता है | जब उसे इकतिदार हासिल हो जाता है तो ज़मीन में उसकी सारी दौड़-धूप इसलिए होता है कि फ़साद फैलाए, खेतियों को ग़ारत करे और नस्ले-इनसानी को तबाह करे – हालाँकि अल्लाह (जिसे वह गवाह बना रहा था) फ़साद को हरगिज़

be the proper place for such a person, which is indeed an evil refuge. And among people there is one who would give away his life to seek the pleasure of Allah. Allah is affectionate to His devotees. O believers! Enter into Islam completely and do not follow the footsteps of Shaitan, surely, he is your open enemy. If you falter after clear signs have come to you, then keep in mind that Allah is Mighty, Wise. Are they waiting for anything other than Allah to come down to them in the covers of clouds and the angels and make His decision known? Ultimately, all matters will be presented to Allah for decision.	पसन्द नहीं करता— और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अपने वक़ार का ख़याल उसको गुनाह पर जमा देता है। ऐसे शख्स के लिए तो बस ज़हन्नम ही काफी है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है। दूसरी तरफ़ इनसानों ही में कोई ऐसा भी है जो रिज़ा-ए-इलाही की तलब में अपनी जान खपा देता है और ऐसे बन्दों पर अल्लाह मेहरबान है। ऐ ईमान लानेवालो, तुम पूरे के पूरे इस्लाम में आ जाओ और शैतान की पैरवी न करो कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। जो साफ़-साफ़ हिदायत तुम्हारे पास आ चूका हैं अगर उनको पा लेने के बाद फिर तुमने लगजिश खाई, तो खूब जान रखो कि अल्लाह सब पर ग़ालिब और हकीम व दाना है (इन सारी नसीहतों और हिदायतों के बाद भी लोग सीधे न हों, तो) क्या अब वे इसके मुन्तज़िर हैं कि अल्लाह बादलों का चत्र लगाए फरिश्तों के पारे साथ लिए ख़ुद सामने आ मैजूद हो और फ़ैसला ही कर डाला जाए?—आखिरकार सारे मामलात पेश तो अल्लाह ही के हुज़ूर होनेवाले हैं।

Tafsir

The Hajj takes place during certain well-known months. If anyone undertakes the obligation of hajj in them, there must be no sexual intercourse, no wrongdoing, nor any quarrelling during hajj. Whatever good you do, Allah knows it. Take provision, but the best provision is fearful awareness of Allah. So be fearful of Me, people of intelligence! [2:197]	**हज कुछ मुक़र्रर और मारूफ़ महीनों में अदा किया जाता है। पस जो शख़्स इन महीनों में हज की नियत कर ले, तो हज के दौरान न कोई शहवानी अमल हो, न कोई गुनाह, और न ही कोई झगड़ा। तुम जो भी नेकी करोगे, अल्लाह उसे जानता है। ज़ाद-ए-राह ले लो, और बेहतरीन ज़ाद-ए-राह अल्लाह का तक़्वा है। पस ऐ अक़्ल वालो! मुझसे डरो। [अल-बक़रह: 197]**
The Hajj takes place during certain well-known months.	**हज चंद मालूम और मारूफ़ महीनों में अदा किया जाता है।**
Allah now explains the difference between the times of ‘umrah and hajj. The period during which ihram may be assumed for ‘umrah is any time throughout the entire year, but hajj is only at one particular time each year. So the ayah means that the months when the hajj takes place are well-known months, or the time of the hajj falls during well-known months, or the time when the actions of the hajj	अल्लाह अब उमरा और हज के औक़ात के दरमियान फ़र्क़ को वाज़ेह फ़रमाता है। उमरा के लिए एहराम बांधने का वक़्त पूरे साल में किसी भी वक़्त हो सकता है, लेकिन हज हर साल एक मख़सूस वक़्त पर ही अदा किया जाता है। लिहाज़ा इस आयत का मतलब यह है कि हज के महीने मालूम और मारूफ़ हैं, या यह कि हज का वक़्त मारूफ़ महीनों में वाक़े होता है, या यह कि हज के आमाल का वक़्त मारूफ़ है, या यह कि हज सिर्फ़ चंद मख़सूस महीनों में अदा

take place is well-known, or it may mean simply that the hajj occurs in certain months.	होता है।
There is disagreement about exactly which months are referred to as “well-known”. Ibn Masud, Ibn ‘Umar, ‘Aṭa’, ar-Rabi, Mujahid and az-Zuhri said that the months of hajj are all of Shawwal, Dhu-l-Qadah, and Dhu-l-Hijjah. Ibn ‘Abbas, as-Suddi, ash-Shabi and an-Nakhai say that it is Shawwal, Dhu-l-Qadah, and only the first ten days of Dhu-l-Hijjah. That is related from Ibn Masud and is also stated by Ibn az-Zubayr. Both are transmitted from Malik. Ibn Habib related the latter and Ibn al-Mundhir the former. The point of the disagreement is specifying when someone owes a sacrifice. Those who say that all of Dhu-l-Hijjah is included in the months of Hajj do not think that a sacrifice is owed if the actions occur after the Day of Sacrifice, because that is still within the months of hajj.	“मालूम महीनों” से मुराद कौन से महीने हैं, इस बारे में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। इब्न मसऊद, इब्न उमर, अता, रबी', मुजाहिद और ज़ुहरी कहते हैं कि हज के महीने पूरा शव्वाल, ज़ुलक़ादा और ज़ुलहिज्जा हैं। जबकि इब्न अब्बास, सुद्दी, शाबी और नख़ई के नज़दीक ये शव्वाल, ज़ुलक़ादा और ज़ुलहिज्जा के सिर्फ़ इब्तिदाई दस दिन हैं। यह क़ौल इब्न मसऊद से भी मनक़ूल है और इब्न ज़ुबैर ने भी यही कहा है। दोनों अक़वाल इमाम मालिक से भी मरवी हैं। इब्न हबीब ने दूसरे क़ौल को और इब्न मुनज़िर ने पहले क़ौल को रिवायत किया है। इस इख़्तिलाफ़ का असल नुक्ता यह है कि यह मुतअय्यन किया जाए कि किस वक़्त किसी पर क़ुर्बानी वाजिब होती है। जो लोग यह कहते हैं कि पूरा ज़ुलहिज्जा हज के महीनों में शामिल है, उनके नज़दीक अगर आमाल यौम-ए-नहर के बाद भी अंजाम दिए जाएँ तो क़ुर्बानी वाजिब नहीं होती, क्योंकि वह अब भी हज के महीनों के अंदर हैं। जबकि

According to the second view, hajj ends on the Day of Sacrifice, and a sacrifice is owed by anyone who does the actions later than that since he is outside its time.	दूसरे क़ौल के मुताबिक हज यौम-ए-नहर पर ख़त्म हो जाता है, और जो शख़्स उसके बाद आमाल करे उस पर क़ुर्बानी वाजिब होती है क्योंकि वह उसके वक़्त से बाहर हो चुका होता है।
Allah does not name the months of hajj in His Book since they were well-known to the people addressed. It is possible in Arabic for the plural 'months' to be applied to two months and part of a third month.	अल्लाह तआला ने अपनी किताब में हज्ज के महीनों के नाम ज़िक्र नहीं किए, क्योंकि वे मुख़ातिब लोगों के दरमियान पहले से मालूम थे। अरबी ज़बान में यह मुमकिन है कि जमा "महीने" का इतलाक़ दो महीनों और तीसरे महीने के एक हिस्से पर भी किया जाए।
They disagree about adopting ihram for hajj outside the months of hajj. Ibn 'Abbas says that part of the Sunnah is to adopt ihram during the months of hajj. 'Aṭa', Mujahid, Ṭawus and al-Awzai said that if someone adopts ihram for hajj before the months of hajj, it can only be considered an 'umrah and not hajj. He is like someone who prays before the time of the prayer. It does not satisfy the obligation, but is supererogatory. Ash-Shifi'iand	वह इस बात में इख़्तिलाफ़ करते हैं कि हज के महीनों से पहले हज के लिए इहराम बांधना दुरुस्त है या नहीं। इब्न-ए अब्बास कहते हैं कि सुन्नत का हिस्सा यह है कि इहराम हज के महीनों ही में बांधा जाए। अता, मुजाहिद, ताऊस और औज़ाई का कहना है कि अगर कोई शख़्स हज के महीनों से पहले इहराम बांधे तो वह सिर्फ उमरा शुमार होगा, हज नहीं। वह उस शख़्स की तरह है जो नमाज़ के वक्त से पहले नमाज़ अदा करे। इससे फ़र्ज़ अदा नहीं होता बल्कि वह नफ़्ल शुमार होती है।

Abu Thawr say that. Al-Awza'i says that he adopts ihram for 'umrah. Ahmad ibn Hanbal says that it is disliked. Malik, however, in his well-known position, says that ihram for hajj can be assumed at any time during the entire year and that is also the position of Abu Hanifah. An-Nakha'i said that a person does not come out of ihram until he finishes his hajj based on the words of Allah: "They will ask you about the crescent moons. Say: 'They are set times for mankind and for the hajj.' Ash-Shabi said is sounder because that is undefined while this ayah is specific. It is possible that it is part of the text which is undefined for some people because these months are more excellent than others. On this basis the position of Malik is sound. Allah knows best.	इमाम शाफ़ई और अबू थौर भी यही कहते हैं। औज़ाई कहते हैं कि वह उमरा के लिए इहराम बांधता है। अहमद बिन हंबल के नज़दीक यह मकरूह है। लेकिन इमाम मालिक अपने मशहूर क़ौल में कहते हैं कि हज का इहराम पूरे साल में किसी भी वक्त बांधा जा सकता है, और यही मौक़िफ़ अबू हनीफ़ा का भी है। नख़ई ने कहा कि आदमी इहराम से उस वक्त तक नहीं निकलता जब तक वह अपना हज मुकम्मल न कर ले, और इसकी दलील अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: "वह आप से चाँद के बारे में पूछते हैं। कह दीजिए: यह लोगों के लिए औक़ात के तअय्युन और हज के लिए हैं।" शाबी ने कहा कि यह बात ज़्यादा दुरुस्त है, क्योंकि वह (आयत) आम है जबकि यह आयत ख़ास है। मुमकिन है कि यह नस कुछ लोगों के लिए गैर मुतअय्यिन हो, क्योंकि यह महीने दूसरे महीनों के मुक़ाबले में ज़्यादा फ़ज़ीलत रखते हैं। इसी बुनियाद पर इमाम मालिक का मौक़िफ़ ज़्यादा मज़बूत मालूम होता है। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।
If someone undertakes the	**अगर कोई शख़्स उन में हज की**

obligation of hajj in them.	**फ़र्ज़ियत अदा करे।**
This means if someone obliges himself to do hajj by making the inward intention and performing the outward action of setting off and vocalising the talbiyah in words. Ibn Ḥabib and Abu Hanifah say that the *talbiyah* is the definitive action of setting off on hajj but ash-Shafi'i said that that is not the case because the *talbiyah* is not one of the pillars of hajj. That is also the view of al-Hasan ibn Ḥayy. Ash-Shafi'i says that the intention and the adoption of *ihram* is enough.	इस का मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स नीयत-ए क़ल्बी करके और ज़ाहिरी अमल यानी रवाना होकर और अल्फ़ाज़ में तलबिया कह कर अपने ऊपर हज लाज़िम कर ले। इब्न-ए हबीब और अबू हनीफ़ा कहते हैं कि तलबिया हज के लिए रवाना होने का क़तई अमल है, लेकिन इमाम शाफ़ई कहते हैं कि ऐसा नहीं है, क्योंकि तलबिया हज के अरकान में से नहीं है। यही राय हसन बिन हय्य की भी है। इमाम शाफ़ई के नज़दीक नीयत और इहराम बांध लेना ही काफ़ी है।
The literalists and others say that linguistically the root of the word for 'undertakes the obligation' (*farada*) means to make a notch or cut. From that is derived *furdah*, the notch in an arrow, an inlet in the bank of a river or a crevice in a mountain. So hajj is obligatory for the slave of Allah in the same way that the notch is necessary for an arrow. It is also said that *farada* means to	ज़ाहिरिया और दीगर अहल-ए इल्म कहते हैं कि लुग़वी एतिबार से लफ़्ज़ "फ़र्ज़" (फ़रज़ा) की अस्ल का मतलब किसी चीज़ में निशान लगाना या काटना है। इसी से "फ़ुर्दह" निकला है, जो तीर के पिछले हिस्से का शिगाफ़, दरिया के किनारे का दहाना या पहाड़ की दरार को कहते हैं। इस तरह हज अल्लाह के बंदे पर उसी तरह लाज़िम है जैसे तीर के लिए वह शिगाफ़ ज़रूरी होता है। यह भी कहा गया है कि "फ़र्ज़" का मतलब वाज़ेह

make clear, and this goes back to cutting because cutting something makes it distinct from other things. The Arabic particle ‘*man*’ is in the nominative by the *ibtida’* and has the meaning of the precondition whose *khabar* is ‘*farada*’.	करना है, और यह भी काटने ही की तरफ लौटता है, क्योंकि किसी चीज़ को काटना उसे दूसरी चीज़ों से मुमताज़ कर देता है। अरबी का लफ़्ज़ "मन" मुबतदा होने की वजह से मरफ़ू होता है, और इसमें शर्त का मअनी पाया जाता है जिसकी ख़बर "फ़र्ज़" है।
there must be no sexual intercourse,	**कोई जमा (जिन्सी तअल्लुक़) नहीं होना चाहिए।**
The word used for sexual intercourse here is *rafath*. Ibn ‘Abbas, Jubayr, as-Suddi, Qatadah, al-Hasan, ‘Ikrimah, az-Zuhri, Mujahid and Malik said that *rafath* means sexual intercourse and that sexual intercourse invalidates the hajj. Scholars agree that sexual intercourse before ‘Arafah invalidates the hajj and makes a new hajj obligatory as well as a sacrifice. ‘Abdullah ibn ‘Umar, Ṭawus, ‘Aṭa’ and others said that it means obscene speech to a woman, like saying, ‘When we come out of *ihram*, we will do such-and-such to you’ without using an indirect	यहाँ जनसी ताल्लुक़ के लिए जो लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है वह "रफ़स" है। इब्न अब्बास, जुबैर, अस-सुद्दी, क़तादा, हसन बसरी, इक्रिमा, ज़ुहरी, मुजाहिद और इमाम मालिक ने कहा कि रफ़स से मुराद जमाअ (जनसी ताल्लुक़) है, और यह कि जमाअ हज को फ़ासिद कर देता है। उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि अरफ़ा से पहले जमाअ करना हज को बातिल कर देता है और इसके नतीजे में नए हज की अदायगी और क़ुर्बानी दोनों लाज़िम हो जाते हैं। अब्दुल्लाह बिन उमर, ताउस, अता और दीगर ने कहा कि इससे मुराद औरत के साथ फ़हश कलाम करना भी हो सकता है, जैसे यह कहना: "जब हम एहराम

allusion. Ibn 'Abbas said that. He recited while he was in *ihram*:	से निकलेंगे तो हम तुम्हारे साथ फलाँ फलाँ काम करेंगे", बिना किसी किनाया के। इब्न अब्बास ने यही कहा और उन्होंने हालत-ए-एहराम में यह आयत तिलावत की:
They walk softly with us.	वो हमारे साथ नरमी से चलते हैं।
If the birds tell truly, we will have a touch.	अगर परिंदे सच कहते हैं तो हमें एक लम्स नसीब होगा।
His companion, Husayn ibn Qays, said to him, 'Do you speak lewdness (*tarfuthu*) while you are in *ihram*?' He answered, '*Rafath* is what is said in the presence of women.' Some people say that it is coarse language mentioning women, whether in their presence or not. It is also said, by some, to apply to all sexual activity which might take place between a man and his wife. Abu 'Ubaydah said that it is foolish talk.	उन के साथी, हुसैन बिन क़ैस, ने उन से कहा: "क्या तुम हालत-ए-एहराम में फ़हश बात (तर्फ़ुथ) करते हो?" उन्होंने जवाब दिया: "रफ़स वह है जो औरतों की मौजूदगी में कही जाए।" बाज़ लोग कहते हैं कि इससे मुराद औरतों का ज़िक्र करते हुए भद्दी या फ़हश गुफ़्तगू है, ख़्वाह उनकी मौजूदगी में हो या न हो। बाज़ के नज़दीक यह हर उस जनसी अमल पर भी लागू होता है जो एक मर्द और उसकी बीवी के दरमियान हो सकता है। अबू उबैदा ने कहा कि इससे मुराद बेहूदा बात है।
Ibn al-Arabi said, 'What is meant by "no rafath" is a legal prohibition, rather than an existential one. We find and see	इब्न अल-अरबी ने कहा: "'रफ़स न हो' से मुराद वजूदि (हक़ीक़ी) नफ़ी नहीं बल्कि शरई मुमानअत है। हम देखते और पाते हैं कि रफ़स वाक़े

that which is called rafath, and the report of the Almighty cannot be contrary to what it reports. So the words refer to a legal existence rather than a physical one. It is similar to His words: “Divorced women should wait by themselves for three menstrual cycles.” It means legally and not physically because there are divorced women who do not wait. Therefore the negation refers to the legal ruling and not physical existence. The same is true of His words: “No one may touch it except the purified.” If we say that it refers to human beings, which is sound, then it means legally that no one should touch it. If it is touched by someone in this state, it is contrary to the legal ruling. This is a fine point that scholars have missed. They say that a report can mean a prohibition. That does not exist and is not sound. They can differ in reality and description.’	होता है, और अल्लाह तआला की ख़बर उसके ख़िलाफ़ नहीं हो सकती जो वह बयान करता है। लिहाज़ा ये अल्फ़ाज़ शरई वजूद पर दलालत करते हैं न कि तबई वजूद पर। यह उसी तरह है जैसे अल्लाह तआला का फ़रमान है: ‘तलाक़याफ़्ता औरतें अपने आप को तीन हैज़ तक रोके रखें।’ इसका मतलब शरई है न कि तबई, क्योंकि कुछ तलाक़याफ़्ता औरतें इद्दत नहीं गुज़ारतीं। पस नफ़ी का ताल्लुक़ शरई हुक्म से है न कि ख़ारिजी वजूद से। इसी तरह अल्लाह तआला के इस फ़रमान का भी यही हुक्म है: ‘इसे कोई हाथ न लगाए मगर पाक लोग।’ अगर हम कहें कि इससे मुराद इंसान हैं, जो कि दुरुस्त है, तो इसका मतलब यह होगा कि शरअन किसी को इसे नहीं छूना चाहिए। अगर कोई शख़्स इस हालत में इसे छू ले तो वह शरई हुक्म के ख़िलाफ़ होगा। यह एक बारीक नुक़्ता है जिसे उलेमा ने नज़रअंदाज़ किया है। वह कहते हैं कि ख़बर कभी नह्य (मुमानअत) के मानी में भी आ सकती है, हालाँकि ऐसा नहीं है और यह बात दुरुस्त नहीं। क्योंकि हक़ीक़त और वस्फ़ में इख़्तिलाफ़ हो सकता है।”

no wrongdoing,	**कोई गुनाह नहीं,**
Fusuq (wrongdoing) in this context means all acts of disobedience according to Ibn ‘Abbas, ‘Ata’ and al-Hasan. Ibn ‘Umar and a group said that, in this context, it means committing those acts of disobedience to Allah which are specific to the state of *ihram* for hajj, such as killing game, paring nails, cutting hair and the like. Ibn Zayd and Malik said that it means sacrificing to idols, going by Allah’s words: ‘Or some deviance (fisq) consecrated to other than Allah.’ Ad-Dahhak said it means exchanging obscene epithets. Indicating that are the words: ‘How evil is it to have a name for evil conduct (fusuq)!’ Ibn ‘Umar also said that it is cursing. That is attested to by the words of the Prophet: ‘Cursing a Muslim is wrongdoing (fusuq) and	फुसूक (गुनाह या नाफ़रमानी) से इस मक़ाम पर मुराद हर क़िस्म की नाफ़रमानी है, जैसा कि इब्न अब्बास, अता और हसन बसरी के नज़दीक है। इब्न उमर और एक जमाअत ने कहा कि यहाँ इससे मुराद वह नाफ़रमानियाँ हैं जो हालत-ए-एहराम में ख़ास तौर पर ममनूअ हैं, जैसे शिकार करना, नाख़ून काटना, बाल काटना वग़ैरह। इब्न ज़ैद और इमाम मालिक ने कहा कि इससे मुराद बुतों के लिए क़ुर्बानी करना है, जैसा कि अल्लाह तआला के इस फ़रमान में है: "या वह फ़िस्क़ जो अल्लाह के सिवा किसी और के नाम किया गया हो।" ज़हहाक ने कहा कि इससे मुराद फ़हश अल्क़ाब का तबादला है, जिसकी तरफ़ यह आयत इशारा करती है: "कितना बुरा है बुरे अमल (फुसूक) का नाम!" इब्न उमर ने यह भी कहा कि इससे मुराद गाली देना है, और इसकी ताईद नबी के इस फ़रमान से होती है: "मुसलमान को गाली देना फुसूक है

killing him is unbelief.' The first position is the soundest since it includes all the other possibilities. The Prophet said, 'Anyone who makes hajj and does not engage in sexual intercourse or wrongdoing returns as he was on the day his mother bore him.' And: 'An accepted hajj has no repayment except the Garden.' He also said, 'By the One who has my soul in His hand, there is no action between heaven and earth better than jihad in the Way of Allah or an accepted hajj, in which there is no sexual intercourse, wrongdoing or quarrelling.' The *fuqaha'* state that the accepted hajj is one in which one does not disobey Allah while performing it. Al-Farra' said, 'It is one after which one does not disobey Allah.' An accepted hajj is one in which, and after which, one does not disobey Allah. Al-Hasan said, 'An accepted hajj is that a person returns from it abstinent with respect to this world, desiring the Next	और उसे क़त्ल करना कुफ्र है।" पहला क़ौल ज़्यादा दुरुस्त है क्योंकि यह तमाम दूसरे मआनी को शामिल कर लेता है। नबी ने फ़रमाया: "जो शख़्स हज करे और उसमें न जमाअ करे और न फुसूक का इर्तिकाब करे, वह ऐसे लौटता है जैसे उसकी माँ ने उसे जनम दिया था।" और फ़रमाया: "मक़बूल हज का बदला जन्नत के सिवा कुछ नहीं।" नीज़ फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, आसमान व ज़मीन के दरमियान कोई अमल अल्लाह की राह में जिहाद या मक़बूल हज से बेहतर नहीं, जिसमें न जमाअ हो, न फुसूक और न झगड़ा।" फ़ुक़हा कहते हैं कि मक़बूल हज वह है जिसमें आदमी उसकी अदायगी के दौरान अल्लाह की नाफ़रमानी न करे। अल-फ़र्रा ने कहा: "वह हज है जिसके बाद भी इंसान अल्लाह की नाफ़रमानी न करे।" यानी मक़बूल हज वह है जिसके दौरान और उसके बाद भी अल्लाह की नाफ़रमानी न की जाए। हसन बसरी ने कहा: "मक़बूल हज यह है कि आदमी उससे वापस आए

World.' Other things are said as well.	तो दुनिया से बे-रग़बत और आख़िरत का ख़्वाहिशमंद हो जाए।" इसके अलावा भी दूसरे अक़वाल बयान किए गए हैं।
nor any quarrelling during hajj.	और हज के दौरान कोई झगड़ा न हो।
Jidal (quarrelling) is argumentation and is derived from the word *jadl* which means twisting. A rein which is braided (*majdul*) is derived from the same root. It is also possible that *jidal* comes from the word *jadalah* which means the earth. It is as if each of the opponents stands against the other person and one overcomes the other.	जिदाल (झगड़ा) से मुराद बहस व तकरार है, और यह लफ़्ज़ "जदल" से निकला है जिसका मतलब मरोड़ना या बल देना है। इसी अस्ल से "मज्दूल" (बुनी हुई लगाम) का लफ़्ज़ भी निकला है। यह भी मुमकिन है कि "जिदाल" लफ़्ज़ "जदाला" से निकला हो जिसका मानी ज़मीन है। गोया हर फ़रीक दूसरे के मुकाबिल खड़ा होता है और एक दूसरे पर ग़ालिब आने की कोशिश करता है।
Scholars disagree about its exact meaning here and offer six possibilities. Ibn Masud, Ibn 'Abbas and 'Ata' say that *jidal* here means to argue with a Muslim until you make him angry to the extent that that	उलमा ने यहाँ इसके दुरुस्त मानी के बारे में इख़्तिलाफ़ किया है और छह इहतिमालात बयान किए हैं। इब्न मसऊद, इब्न अब्बास और अता कहते हैं कि यहाँ जिदाल से मुराद किसी मुसलमान से इस क़दर झगड़ा

leads to insults. As for discussing points of knowledge, that is not forbidden. Qatadah said that it means abuse. Ibn Zayd and Malik ibn Anas said that here it means the disagreements people used to have about which of them was in the authentic places of Ibrahim, which used to happen in the Jahiliyyah when Quraysh stood where the rest of the Arabs did not stand, and so, according to this interpretation, it means that there must be no quarrelling about its sites. One group say that it refers to when one group say, ‘The hajj is today’ and another group say, ‘The hajj is tomorrow.’ Mujahid and a group said, ‘It is to argue about the months according to the Arab reckoning. It used to happen that some would be at ‘Arafah while others were at Muzdalifah and they would quarrel about who was in the right.’	करना है कि वह गुस्से में आ जाए और बात गाली-गलौज तक पहुँच जाए। अलबत्ता इल्मी मसाइल पर गुफ़्तगू मना नहीं है। क़तादा ने कहा कि इससे मुराद बदज़बानी है। इब्न ज़ैद और इमाम मालिक ने कहा कि यहाँ इससे मुराद वह इख़्तिलाफ़ात हैं जो लोग इस बारे में करते थे कि उनमें से कौन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मुक़र्रर किए हुए मक़ामात पर है। यह जाहिलिय्यह के ज़माने में होता था जब कुरैश वहाँ खड़े होते थे जहाँ बाकी अरब नहीं खड़े होते थे। इस तफ़्सीर के मुताबिक इसका मतलब है कि उन मक़ामात के बारे में कोई झगड़ा न हो। एक जमाअत का कहना है कि इससे मुराद यह है कि एक गिरोह कहे: “हज आज है” और दूसरा कहे: “हज कल है।” मुजाहिद और एक जमाअत ने कहा: “इससे मुराद अरबों के हिसाब के मुताबिक महीनों के बारे में झगड़ा करना है।” पहले ऐसा होता था कि कुछ लोग अरफ़ात में होते थे और कुछ मुज़दलिफ़ा में, और वे इस बात पर झगड़ते थे कि कौन सही है।

According to these two last interpretations, it means that there must be no quarrelling about the time and place of hajj. These two positions are the soundest of what is said regarding the interpretation. The Prophet said, 'Time revolves as it did on the day that Allah created the heavens and the earth.' It means that the hajj has returned to the day and time it used to have. When the Prophet performed hajj, he said, 'Take your rites from me.' So he clarified the stations and places of hajj. Muhammad ibn Kab al-Qurṭubi said, '"Quarrelling" is that one group says, "Our hajj was more accepted than your hajj," and the others say the same.' It is also said that the quarrelling occurred with respect to boasting about ancestors. Allah knows best.	उन आख़िरी दो अक़वाल के मुताबिक इसका मतलब यह है कि हज के वक़्त और मक़ाम के बारे में कोई झगड़ा न हो। इन दोनों आराओं को इस तफ़्सीर के बारे में सबसे ज़्यादा दुरुस्त क़रार दिया गया है। नबी ने फ़रमाया: "ज़माना उसी हालत पर लौट आया है जिस हालत में अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया था।" यानी हज अपने अस्ल दिन और वक़्त पर वापस आ गया है। जब नबी ने हज अदा किया तो फ़रमाया: "मुझ से अपने मनासिक सीख लो।" इस तरह आप ने हज के मक़ामात और आमाल को वाज़ेह फ़रमा दिया। मुहम्मद बिन काब अल-क़ुर्तुबी ने कहा: "'जिदाल' यह है कि एक गिरोह कहे: 'हमारा हज तुम्हारे हज से ज़्यादा मक़बूल है' और दूसरा गिरोह भी यही कहे।" यह भी कहा गया है कि झगड़ा अपने आबा-ओ-अजदाद पर फ़ख़्र करने के बारे में होता था। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

Whatever good you do, Allah knows it.	तुम जो भी नेकी करते हो, अल्लाह उसे जानता है।
This means that Allah will repay you for your actions because repayment is only made by the one who has knowledge of the matter concerned. It is also said that this is encouragement to use good words instead of obscenities and to be pious and godfearing rather than wrongdoing and argumentative. It is said that the word 'good' refers to people restraining themselves so that they do not do what is forbidden.	इस का मतलब यह है कि अल्लाह तुम्हारे आमाल का बदला देगा, क्योंकि बदला वही देता है जो मुतअल्लिक़ा मामले का इल्म रखता हो। यह भी कहा गया है कि इसमें इस बात की तरगीब है कि इंसान फ़हश कलाम के बजाय अच्छे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करे और गुनाह और झगड़े की बजाय तक़्वा और परहेज़गारी इख़्तियार करे। यह भी कहा गया है कि यहाँ "नेकी" से मुराद यह है कि लोग अपने आप को रोके रखें ताकि वे ममनूअ कामों का इर्तिकाब न करें।
Take provision;	"ज़ादे राह ले लो;"
This is a command to people to take provisions for their hajj. Ibn 'Umar, 'Ikrimah, Mujahid, Qatadah and Ibn Zayd said, 'The ayah was revealed about a group of Arabs who used to go on hajj with no provisions. One of them would say, "How	"यह लोगों को हुक्म है कि वह अपने हज के लिए ज़ादे राह साथ लेकर जाएँ। इब्ने उमर, इक्रिमा, मुजाहिद, क़तादा और इब्ने ज़ैद ने कहा है: "यह आयत अरबों के एक ऐसे गिरोह के बारे में नाज़िल हुई जो बग़ैर ज़ादे राह के हज के लिए जाया करते थे। उनमें

could we make hajj to the House of Allah and He not feed us?" So they were dependent on other people for their needs. They were forbidden to do that and commanded to take provisions.' 'Abdullah ibn az-Zubayr said, 'People used to rely on one another and not take provisions, and so they were commanded to take provisions. When the Prophet travelled, he took a camel carrying provisions. Three hundred men of Muzaynah came to him and when they were about to leave, he said, "Umar, give the people provisions.' Some people say that the expression refers to a righteous companion, but Ibn 'Aṭiyyah said that this specification is weak. A more fitting meaning of the ayah is to store up provision for the Next World in the form of righteous actions.	से एक कहता था: 'हम अल्लाह के घर का हज करने जाएँ और वह हमें खाना न दे?' चुनाँचे वह अपनी ज़रूरतों के लिए दूसरे लोगों पर बोझ बन जाते थे। उन्हें इससे मना किया गया और ज़ादे राह साथ लेने का हुक्म दिया गया।" अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने कहा: "लोग एक दूसरे पर भरोसा कर लेते थे और ज़ादे राह साथ नहीं लेते थे, इसलिए उन्हें ज़ादे राह लेने का हुक्म दिया गया। जब नबी सफ़र करते तो एक ऊँट ज़ादे राह उठाए हुए साथ होता था। मुज़ैना के तीन सौ आदमी आप के पास आए, और जब वह वापस जाने लगे तो आप ने फ़रमाया: 'उमर! लोगों को ज़ादे राह दे दो।'" बाज़ लोगों ने कहा है कि इस इबारत से मुराद नेक साथी है, लेकिन इब्ने अतिय्या ने कहा कि यह तख़्सीस कमज़ोर है। आयत का ज़्यादा मुनासिब मतलब यह है कि इंसान आख़िरत के लिए नेक आमाल की सूरत में ज़ादे राह जमा करे।"
The first position is sounder because what is meant is actual	"पहला क़ौल ज़्यादा दुरुस्त है, क्योंकि यहाँ मुराद हक़ीक़तन हज के सफ़र

provision for the hajj journey as we mentioned. It is as al-Bukhari related from Ibn ‘Abbas: ‘The people of Yemen used to go on hajj and not take provisions. They would say, “We are relying on Allah.” When they came to Makkah, they begged from people, so Allah Almighty sent down: “Take provision, but the best provision is fearful awareness (taqwa) of Allah.”’ This is what the text suggests and is the position of most commentators. Ash-Shabi says that it means specifically dates and sawiq (barley mush). Ibn Jubayr says biscuits and sawiq.	के लिए ज़ादे राह लेना है, जैसा कि हमने ज़िक्र किया। यही बात इमाम बुख़ारी ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है: “यमन के लोग हज के लिए जाते थे और ज़ादे राह साथ नहीं लेते थे। वह कहते थे: ‘हम अल्लाह पर भरोसा करते हैं।’ फिर जब मक्का पहुँचते तो लोगों से माँगते थे, चुनाँचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: ‘ज़ादे राह ले लो, और बेहतरीन ज़ादे राह तक़्वा है।’” आयत के ज़ाहिर अल्फ़ाज़ भी इसी मफ़हूम की ताईद करते हैं, और अक्सर मुफस्सिरीन का यही मौक़िफ़ है। शाबी कहते हैं कि इससे ख़ास तौर पर खजूर और सवीक़ (जौ के सत्तू) मुराद हैं। इब्ने जुबैर कहते हैं कि इससे बिस्कुट और सवीक़ मुराद हैं।"
Ibn al-Arabi said, Allah commands the people of wealth to take provisions. Those who have no money and have a craft by which they support themselves, and those who beg, are not being addressed here. Those addressed are people who have wealth but who leave	"इब्नुल अरबी ने कहा: “अल्लाह तआला मालदार लोगों को ज़ादे राह लेने का हुक्म देता है। जो लोग माल नहीं रखते लेकिन किसी हुनर के ज़रिये अपना गुज़ारा करते हैं, या जो सवाल करते हैं, वह इस ख़िताब में शामिल नहीं हैं। ख़िताब उन लोगों से है जिनके पास माल मौजूद हो लेकिन

their wealth and go out without provisions, saying, “We are relying on Allah.” Reliance (tawakkul) has preconditions. Those who meet those preconditions go out without provision and are not addressed by this. Most people who go out lack the degree of reliance and neglect its realities. Allah knows best.’ Abu’l-Faraj al-Jawzi said, ‘Iblis has muddled some people who claim to be relying on Allah, they go out without provision and imagine that this is true reliance on Allah. They are gravely in error. A man said to Ahmad ibn Hanbal, “I want to set out for Makkah based on reliance on Allah without provisions.” Ahmad said to him, “Go out without going in a caravan.” “No,” he answered, “only with them.” He said, “Then you are relying on other people’s sacks!”	वह अपना माल छोड़ कर बग़ैर ज़ादे राह के यह कहते हुए निकल पड़ें कि: ‘हम अल्लाह पर भरोसा करते हैं।’ तवक्कुल की कुछ शर्तें होती हैं। जो लोग उन शर्तों को पूरा करते हैं, वह बग़ैर ज़ादे राह के निकलते हैं, और यह हुक्म उनके बारे में नहीं है। लेकिन अक्सर लोग जो इस तरह निकलते हैं, वह तवक्कुल के उस दर्जे से महरूम होते हैं और उसकी हक़ीक़तों को नज़रअंदाज़ करते हैं। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।” अबुल फ़राज अल-जौज़ी ने कहा: “इब्लीस ने बाज़ उन लोगों को धोखे में डाल दिया है जो अल्लाह पर तवक्कुल का दावा करते हैं। वह बग़ैर ज़ादे राह के निकलते हैं और गुमान करते हैं कि यही हक़ीक़ी तवक्कुल है, हालाँकि वह सख़्त ग़लती में हैं। एक शख़्स ने इमाम अहमद बिन हंबल से कहा: ‘मैं बग़ैर ज़ादे राह के अल्लाह पर तवक्कुल करते हुए मक्का जाना चाहता हूँ।’ इमाम अहमद ने फ़रमाया: ‘तो क़ाफ़िले के बग़ैर निकल जाओ।’ उसने कहा: ‘नहीं, बल्कि क़ाफ़िले के साथ।’ इमाम अहमद ने फ़रमाया: ‘फिर तो तुम दूसरे लोगों की थैलियों पर

	भरोसा कर रहे हो!'
but the best provision is fearful awareness of Allah.	"और बेहतरीन ज़ादे राह तक़वा है।"
Allah reports that the best provision is avoiding what is forbidden and so Allah commands us here to add fearful awareness to taking provision. It means to fear Allah by following His command to take provision. It is said that it can mean that the best provision is that by which the traveller is kept safe from destruction or from the need to beg. It is said that it makes it clear that this world is not the abode of permanence. The people with knowledge of subtle indications (*isharat*) say that Allah is reminding us of the journey to the Next World and commands us to take fearful awareness of Him as provision. Fearful awareness is the provision of the Next World. Al-Asha said:	"अल्लाह तआला बयान फ़रमाता है कि बेहतरीन ज़ादे राह हराम चीज़ों से बचना है, इसी लिए यहाँ अल्लाह ने ज़ादे राह लेने के साथ तक़वा इख़्तियार करने का भी हुक्म दिया है। इसका मतलब यह है कि अल्लाह के इस हुक्म पर अमल करते हुए कि ज़ादे राह लो, अल्लाह से डरो। यह भी कहा गया है कि बेहतरीन ज़ादे राह वह है जिसके ज़रिये मुसाफ़िर हलाकत या लोगों से सवाल करने की हाजत से महफ़ूज़ रहे। यह भी कहा गया है कि इसमें इस बात की वज़ाहत है कि दुनिया हमेशा रहने की जगह नहीं है। अहले इशारात व मआरिफ़त कहते हैं कि अल्लाह तआला हमें आख़िरत के सफ़र की याद दिला रहा है और हुक्म देता है कि इस सफ़र के लिए तक़वा को ज़ादे राह बनाओ। तक़वा ही आख़िरत का ज़ादे राह है। अल-अशा ने कहा:"

If you do not travel with a provision of fear of Allah,	"अगर तुम अल्लाह के ख़ौफ़ (तक़वा) का ज़ादे राह लेकर सफ़र नहीं करते,"
you will meet those with provision after you die	"तो मरने के बाद तुम ऐसे लोगों से मिलोगे जिनके पास ज़ादे राह होगा।"
And regret that you are not like them	"और अफ़सोस करोगे कि तुम उन जैसे नहीं थे।"
and that you did not prepare as they prepared.	"और तुमने वैसी तैयारी नहीं की जैसी उन्होंने की थी।"
Someone else said:	"किसी और ने कहा:"
Death is a swollen sea	"मौत एक तुग़यानी मारता हुआ समुंदर है"
in which the devices of the swimmer disappear.	"जिसमें तैरने वाले के तमाम सहारे ख़त्म हो जाते हैं।"
Soul! I am speaking, so listen to words	"ऐ नफ़्स! मैं बात कर रहा हूँ, पस इन बातों को ग़ौर से सुनो"
from a compassionate good counsellor.	"एक मेहरबान और ख़ैरख़्वाह नसीहत करने वाले की बातें।"
In his grave, a man's only companions	"क़ब्र में इंसान के सिर्फ़ यही साथी होते हैं"
are fear of Allah and righteous deeds.	"अल्लाह का ख़ौफ़ (तक़वा) और नेक आमाल।"

So have taqwa of Me, people of intelligence!	"पस ऐ अक़्ल वालो! मुझ से डरो।"
Those with intelligence are singled out, even though the command is to everyone, because they are those through whom the proof of Allah is established. They receive His commands and undertake to carry them out. The word used for intelligent people is the plural of *lubb*, which refers to the core of anything.	"अक़्ल वालों को ख़ास तौर पर मुख़ातब किया गया है, अगरचे यह हुक्म सब के लिए है, क्योंकि यही वह लोग हैं जिनके ज़रिये अल्लाह की हुज्जत क़ाइम होती है। वह अल्लाह के अहकाम को क़बूल करते हैं और उन पर अमल करने का एहतिमाम करते हैं। अक़्लमंद लोगों के लिए जो लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है वह "लुब्ब" की जमअ है, और "लुब्ब" किसी चीज़ के ख़ालिस और अस्ल मग़ज़ को कहते हैं।"
There is nothing wrong in seeking bounty from your Lord. When you pour down from 'Arafat, remember Allah at the Sacred Landmark. Remember Him because He has guided you, even though before this you were astray. [2:198]	"तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो। फिर जब तुम अरफ़ात से वापस लौटो तो मशअर-ए-हराम के पास अल्लाह को याद करो। और उसे याद करो क्योंकि उसने तुम्हें हिदायत दी, हालाँकि इससे पहले तुम गुमराहों में से थे। [2:198]"
There is nothing wrong in seeking bounty from your Lord.	"तुम पर इस बात में कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश

	करो।"
The word used here for 'wrong' (*junaḥ*) means wrong action. After mentioning the things prohibited during hajj, namely sexual intercourse, wrongdoing and quarrelling, Allah mentions that trade is allowed. It means that there is nothing wrong in seeking bounty from Allah. In the Quran, the phrase 'seeking bounty' is used for engaging in trade. Allah Almighty says: '…spread through the earth and seek Allah's bounty…' Evidence for the soundness of this is found in al-Bukhari where Ibn 'Abbas is reported as observing: "Ukaẓ, Majinnah and Dhu 'l-Majaz were markets in the time of the Jahiliyyah and people thought it sinful to trade during the festivals, and then this was revealed about the hajj festival. So the ayah is evidence that it is permitted for someone on hajj to trade during it while performing the rites of	"यहाँ "गुनाह" के लिए जो लफ़्ज़ "जुनाह" इस्तेमाल हुआ है, उसका मतलब ग़लत अमल है। हज के दौरान ममनूअ चीज़ों यानी जिमा, गुनाह और झगड़े का ज़िक्र करने के बाद अल्लाह तआला ने यह बयान फ़रमाया कि तिजारत जायज़ है। इसका मतलब यह है कि अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करने में कोई गुनाह नहीं। क़ुरआन में "फ़ज़्ल तलाश करने" की ताबीर तिजारत के लिए इस्तेमाल हुई है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "...ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो..." इस की ताईद सहीह बुख़ारी की इस रिवायत से होती है जिसमें इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं: "उकाज़, मजनह और ज़ुल-मजाज़ जाहिलियत के ज़माने में बाज़ार थे, और लोग समझते थे कि हज के दिनों में तिजारत करना गुनाह है। फिर हज के बारे में यह आयत नाज़िल हुई।" लिहाज़ा यह आयत इस बात की दलील है कि हाजी के लिए दौरान-ए-

hajj. Intending to do so is not shirk and does not detract from the sincerity of the person concerned.	हज तिजारत करना जायज़ है जबकि वह हज के मनासिक अदा कर रहा हो। इसकी नीयत करना शिर्क नहीं है और न ही इससे उस शख़्स के इख़लास में कोई कमी आती है।"
Nonetheless, performing hajj without trade is better since it is free of the impurities of this world and the connection of the heart to something else. Ad-Daraqutni related in the *Sunan* that Abu Umamah at-Taymi said, 'I said to Ibn 'Umar, "I am a man who hires out in this way. People say that I have no hajj." Ibn 'Umar said, "A man came to the Messenger of Allah and asked a similar question as you have asked me. He remained silent until this ayah was revealed: There is nothing wrong in seeking bounty from your Lord."	"ताहम, तिजारत के बग़ैर हज्ज अदा करना बेहतर है, क्योंकि यह दुनिया की आलाइशों और दिल के किसी दूसरी चीज़ से तअल्लुक़ से पाक होता है। इमाम दारकुत्नी ने अपनी किताब "अस-सुनन" में रिवायत किया है कि अबू उमामा अत-तैमी ने कहा: "मैंने इब्न-ए-उमर से कहा, 'मैं एक ऐसा शख़्स हूँ जो इस तरीक़े से मज़दूरी करता है। लोग कहते हैं कि मेरा हज्ज नहीं होता।' इब्न-ए-उमर ने फ़रमाया, 'एक शख़्स रसूल अल्लाह के पास आया और उसने भी ऐसा ही सवाल किया जैसा तुमने मुझसे किया है। आप ख़ामोश रहे यहाँ तक कि यह आयत नाज़िल हुई: "तुम पर अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करने में कोई गुनाह नहीं।"
When you pour down from 'Arafat,	"जब तुम अरफ़ात से वापस लौटो,"

'Afada' (pour down) means to rush on. The verb is used for when you pour liquid into a vessel until it overflows down the sides. A man who is *fayyaḍ* is very munificent. A *hadith* which is *mustafid* is extensively known.	"अफ़ाज़ा" (यानी "लौटना" या "तेज़ी से रवाना होना") का मतलब जल्दी आगे बढ़ना है। यह फ़ेअल उस वक़्त भी इस्तेमाल होता है जब किसी बर्तन में माएअ इस क़दर डाला जाए कि वह किनारों से बहने लगे। ऐसे शख़्स को जो बहुत ज़्यादा सख़ी हो "फ़ैयाज़" कहा जाता है। और वह हदीस जो बहुत ज़्यादा मशहूर और वसीअ तौर पर मारूफ़ हो "मुस्तफ़ीज़" कहलाती है।
'Arafat is the name of a place which is in the plural form. It is called that because of what is around it. It is said that the plain is called 'Arafat because people recognise one another (*yata'arafuna*) there. It is said that when Adam descended in India and Hawwa' at Jiddah, after a long search, they met at 'Arafat on the Day of 'Arafah, and so the day is called 'Arafah and the place 'Arafat. Ad-Dahhak said that. Other things are said which were mentioned in.	"अरफ़ात" एक जगह का नाम है जो जमा के सीग़े में है। उसे यह नाम उसके इर्द-गिर्द मौजूद चीज़ों की वजह से दिया गया है। यह भी कहा गया है कि इस मैदान को "अरफ़ात" इसलिए कहा जाता है क्योंकि वहाँ लोग एक दूसरे को पहचानते हैं (यानी तआरुफ़ हासिल करते हैं)। यह भी कहा जाता है कि जब आदम हिंदुस्तान में और हव्वा जद्दा में उतारे गए, तो तवील तलाश के बाद दोनों की मुलाक़ात यौम-ए-अरफ़ा के दिन अरफ़ात में हुई। इसी वजह से उस दिन को "अरफ़ा" और उस मक़ाम को "अरफ़ात" कहा जाता है। यह क़ौल ज़हहाक़ ने बयान किया है। इसके अलावा भी दीगर अक़वाल

	बयान किए गए हैं।
Ibn 'Aṭiyyah said that it is clear that it is an improvised name as is the case with most names of places. 'Arafah is Naaman al-Arak (Naman of the Lote-trees). It is said that it is derived from 'arf, which means scent. It is a fragrant place as opposed to Mina which is strewn with stomach contents and blood. Hence it is 'Arafat. Some say that the two names are derived from steadfastness because they are steadfast in supplication, trial and enduring hardships to perform this act of worship, and the 'arif is someone who is steadfast and humble. This is found in a saying: 'The soul is steadfast (aruf) and endures what burdens it.' We find in a poem:	"इब्न-ए-अतिय्या ने कहा है कि बज़ाहिर यह एक वज़ई नाम है, जैसा कि अक्सर मक़ामात के नाम होते हैं। "अरफ़ा" दरअसल "नुमान अल-अराक" (यानी अराक के दरख़्तों वाला नुमान) है। यह भी कहा गया है कि यह लफ़्ज़ "अर्फ़" से निकला है, जिसका मअनी ख़ुशबू है। यह एक ख़ुशबूदार जगह है, बरख़िलाफ़ मिना के, जहाँ जानवरों की ओझड़ियाँ और ख़ून बिखरा होता है। इसी लिए उसे "अरफ़ात" कहा जाता है। बाज़ लोगों का कहना है कि यह दोनों नाम साबित-क़दमी से माख़ूज़ हैं, क्योंकि लोग वहाँ दुआ, आज़माइश और इस इबादत की अदायगी में पेश आने वाली मशक़्क़तों पर साबित-क़दम रहते हैं। और "आरिफ़" उस शख़्स को कहा जाता है जो साबित-क़दम और आजिज़ हो। यह मफ़हूम एक क़ौल में भी मिलता है: "नफ़्स साबित-क़दम रहता है और उन बोझों को बर्दाश्त करता है जो उस पर डाले जाते हैं।" और हमें एक शेर में भी यह मअनी

	मिलता है:"
I steadfastly (arifah) endure the heat for that.	"मैं उसके लिए गर्मी को साबित-क़दमी के साथ बर्दाश्त करता हूँ।"
Or similarly in Dhu 'r-Rummah:	"या इसी तरह ज़ुर-रुम्मह के शेर में:"
Steadfast (aruf) in the face of the decrees that are written for it.	"वह उन फ़ैसलों के मुक़ाबले में साबित-क़दम रहता है जो उसके लिए लिख दिए गए हैं।"
So it has this name because of the humility of the person performing hajj and his steadfastness in supplication, types of affliction and enduring hardship to carry out this act of worship.	"पस इसका यह नाम इसलिए रखा गया है कि हज्ज करने वाला वहाँ आजिज़ी इख़्तियार करता है, दुआ में साबित-क़दम रहता है, आज़माइशों और इस इबादत को अदा करने की मशक़्क़तों को बर्दाश्त करता है।"
Scholars agree that if someone stands at 'Arafat on the day of 'Arafah before midday and then goes on before midday, he is not considered to have stood at 'Arafah. They agree that when someone stands at 'Arafah after midday and pours onward before nightfall, his hajj is complete, with the exception of Malik ibn Anas	"उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि अगर कोई शख़्स यौम-ए-अरफ़ा में दोपहर से पहले अरफ़ात में वुक़ूफ़ करे और फिर दोपहर से पहले ही वहाँ से रवाना हो जाए, तो उसे वुक़ूफ़-ए-अरफ़ात करने वाला शुमार नहीं किया जाएगा। इसी तरह इस बात पर भी इत्तिफ़ाक़ है कि अगर कोई शख़्स दोपहर के बाद अरफ़ात में वुक़ूफ़ करे और रात होने से पहले

who said that he must have part of the night. If someone stands at ‘Arafah in the night, none of the community disagree about his hajj being complete. The argument of the majority is based on His words: ‘When you pour down from ‘Arafat’, in which He does not specify night or day, and the h*adith* of ‘Urwah ibn Mudarris who said, ‘I went to the Prophet while he was at the stopping place at Jam‘. I said, “Messenger of Allah, I have come to you from the two mountains of Tayy’. I have tired my camel out and exhausted myself. By Allah, I have not passed any mountain without standing on it. Do I have a hajj, Messenger of Allah?” The Messenger of Allah said, “Whoever has prayed the morning prayer with us at Jam‘, having gone to ‘Arafat before that, either by night or day, has completed his dishevelment and completed his hajj.’	वहाँ से रवाना हो जाए, तो उसका हज्ज मुकम्मल हो जाता है, सिवाए इमाम मालिक बिन अनस के, जिनका कहना है कि उसके लिए रात का कुछ हिस्सा पाना ज़रूरी है। अगर कोई शख़्स रात के वक़्त अरफ़ात में वुक़ूफ़ करे, तो पूरी उम्मत में इस बात पर कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि उसका हज्ज मुकम्मल हो जाता है। जुम्हूर उलमा की दलील अल्लाह तआला के इस फ़रमान से है: "जब तुम अरफ़ात से वापस लौटो", जिसमें अल्लाह तआला ने न रात की तख़्सीस की है और न दिन की। नीज़ उरवाह बिन मुदरिस की हदीस भी दलील है। वह कहते हैं: "मैं नबी करीम के पास आया जबकि आप जम्अ (मुज़दलिफ़ा) के मक़ाम पर ठहरे हुए थे। मैंने अर्ज़ किया: 'ऐ अल्लाह के रसूल! मैं तय के दोनों पहाड़ों से आपके पास आया हूँ। मैंने अपनी ऊँटनी को थका दिया और खुद को भी मशक़्क़त में डाल दिया। अल्लाह की क़सम! मैं किसी पहाड़ के पास से नहीं गुज़रा मगर उस पर वुक़ूफ़ किया। तो क्या मेरा हज्ज हो गया है, ऐ अल्लाह के रसूल?' रसूल

	अल्लाह ने फ़रमाया: 'जो शख़्स हमारे साथ जम्अ में फ़ज्र की नमाज़ अदा करे, और उससे पहले ख़्वाह रात में या दिन में अरफ़ात में वुक़ूफ़ कर चुका हो, तो उसने अपना बिखरा हुआ हाल मुकम्मल कर लिया और उसका हज्ज मुकम्मल हो गया।'"
More than one of the imams transmitted it, including Abu Dawud, an-Nasai and ad-Daraqutni. At-Tirmidhi said that it is a sound h*asan hadith*. Abu 'Umar said, 'This h*adith* of 'Urwah ibn Mudarris at-Tai is sound and confirmed. It is related by a group of the reliable companions of ash-Shabi from ash-Shabi, including Ismail ibn Abi Khalid, Dawud ibn Abi Hind, Zakariyya ibn Abi Zaidah, 'Abdullah ibn Abi's-Safar and Mutarrif, all of them from ash-Shabi from 'Urwah ibn Mudarris ibn Aws ibn Harithah ibn Lam.' The argument of Malik regarding the firm *Sunnah* is the long h*adith* of	"इस हदीस को एक से ज़्यादा इमामों ने रिवायत किया है, जिन में अबू दाऊद, नसाई और दारक़ुत्नी शामिल हैं। इमाम तिर्मिज़ी ने कहा है कि यह हदीस "हसन सहीह" है। अबू उमर ने फ़रमाया: "उरवाह बिन मुदरिस अत-ताई की यह हदीस सहीह और साबित-शुदा है। इसे शाबी से उनके सिक़ा शागिर्दों की एक जमाअत ने रिवायत किया है, जिन में इस्माईल बिन अबी ख़ालिद, दाऊद बिन अबी हिन्द, ज़करिया बिन अबी ज़ाइदा, अब्दुल्लाह बिन अबीस-सफ़र और मुतर्रिफ़ शामिल हैं। यह सब शाबी से, और वह उरवाह बिन मुदरिस बिन औस बिन हारिसह बिन लाम से रिवायत करते हैं।" इमाम मालिक की दलील सुन्नत-ए-मुअक्कदा के एतिबार से मुस्लिम की

Jabir transmitted by Muslim which states: 'He continued to stand until the sun had set, the yellow light had diminished a little and the disc of the sun had disappeared.' His actions are mandatory, especially in hajj. He said, 'Take your rites from me.'	रिवायत करदा जाबिर की तवील हदीस है, जिस में है: "आप वुक़ूफ़ में खड़े रहे यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया, ज़र्दी कुछ कम हो गई और सूरज का क़ुर्स ग़ायब हो गया।" और आप के अफ़आल ख़ुसूसन हज्ज के मामले में वाजिबुल-इत्तिबा हैं, क्योंकि आप ने फ़रमाया: "अपने मनासिक मुझ से सीख लो।"
The majority disagree about someone who leaves before sunset and does not return: what does he owe to make his hajj is sound? 'Ata', Sufyun ath-Thawri, ash-Shafi'i, Ahmad, Abu Thawr, the People of Opinion and others said that he owes a sacrifice. Al-Hasanal-Basri said that he owes a *hady*. Ibn Jurayj says that he owes a camel. Malik said that he must do hajj again as well as a *hady* that he sacrifices in that hajj: he is like someone who has missed hajj. If he returns to 'Arafah until he goes on after sunset, ash-Shafi i says that he owes nothing. That is the view	"जुम्हूर उलमा का इस शख़्स के बारे में इख़्तिलाफ़ है जो ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब से पहले अरफ़ात से रवाना हो जाए और फिर वापस न आए: उसके हज्ज के सहीह होने के लिए उस पर क्या लाज़िम होगा? अता, सुफ़यान सौरी, शाफ़ई, अहमद, अबू सौर, अस्हाब-ए-राए और दीगर उलमा ने कहा है कि उस पर एक क़ुर्बानी लाज़िम होगी। हसन बसरी ने कहा कि उस पर एक हदी लाज़िम है। इब्न-ए-जुरैज कहते हैं कि उस पर एक ऊँट लाज़िम होगा। इमाम मालिक ने फ़रमाया कि उस पर दोबारा हज्ज करना लाज़िम है, और साथ ही एक हदी भी जो वह उस हज्ज में ज़बह करे; वह ऐसे शख़्स की

of Ahmad, Ishaq and Dawud. At-Tabari said that. Ab Hanifah and his people and ath-Thawri said that a sacrifice is not cancelled for him, even if he returns after sunset. That is what Abu Thawr said.	मानिंद है जिसका हज्ज फ़ौत हो गया हो। अगर वह अरफ़ात वापस आ जाए और ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब के बाद वहाँ से रवाना हो, तो इमाम शाफ़ई कहते हैं कि उस पर कुछ लाज़िम नहीं होगा। यही राय इमाम अहमद, इस्हाक़ और दाऊद की है। तबरी ने भी यही कहा है। अबू हनीफ़ा, उनके अस्हाब और सुफ़यान सौरी कहते हैं कि अगरचे वह ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब के बाद वापस आ जाए, तब भी उस से क़ुर्बानी साक़ित नहीं होगी। अबू सौर का भी यही क़ौल है।"
There is no disagreement among scholars that it is better for someone to stop at ‘Arafah while mounted because the Prophet did that until he went on from it after sunset with Usamah ibn Zayd riding behind him. This is recorded in the long *hadith* of Jabir and the *hadith* of ‘Ali as well as the *hadith* of Ibn ‘Abbas. Jabir said, ‘Then the Messenger of	"उलमा के दरमियान इस बात में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि अरफ़ात में सवार हो कर वुक़ूफ़ करना अफ़ज़ल है, क्योंकि नबी करीम ने ऐसा ही किया था, यहाँ तक कि आप ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब के बाद वहाँ से रवाना हुए और उस वक़्त उसामा बिन ज़ैद आप के पीछे सवार थे। यह बात जाबिर की तवील हदीस, हज़रत अली की हदीस और इब्न-ए-अब्बास की हदीस में मज़कूर है।

Allah rode to the stopping place and made his she-camel Qaswa' turn towards the rocks, with the path of the walkers in front of him. He faced the *qiblah* and continued to stop there until the sun had set, the yellow light had diminished a little and the disc of the sun had disappeared. He had Usamah ibn Zayd sit behind him.' If someone cannot ride, he stands on foot, making supplication for as long as he is able. There is nothing wrong with a person sitting down if he is unable to stand. Stopping while mounted demonstrates exaltation and honour of the hajj: *As for those who honour Allah's sacred rites, that comes from the taqwa in their hearts.* Ibn Wahb said in his *Muwaṭṭa'*: 'Mlik said to me, "I prefer stopping at 'Arafah on mounts and camels to standing on foot. There is no harm in someone who stands on foot resting."'	जाबिर कहते हैं: "फिर रसूल अल्लाह मक़ाम-ए-वुक़ूफ़ की तरफ़ तशरीफ़ ले गए और अपनी ऊँटनी क़स्वा को चट्टानों की तरफ़ रुख़ किया, जबकि पैदल चलने वालों का रास्ता आप के सामने था। आप ने क़िबला रुख़ हो कर वुक़ूफ़ किया और मुसलसल वहाँ ठहरे रहे यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया, ज़र्दी कुछ कम हो गई और सूरज का क़ुर्स ग़ायब हो गया। फिर आप ने उसामा बिन ज़ैद को अपने पीछे सवार किया।" अगर कोई शख़्स सवारी पर क़ादिर न हो तो वह पैदल खड़ा हो कर जितनी देर मुमकिन हो दुआ करता रहे। अगर कोई खड़ा होने से आजिज़ हो तो उसके बैठने में भी कोई हरज नहीं। सवारी पर वुक़ूफ़ करना हज्ज की अज़्मत और उसके एहतराम के इज़्हार में शामिल है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और जो अल्लाह की निशानियों की तअज़ीम करे, तो यह दिलों के तक़्वा से है।" इब्न-ए-वहब ने अपनी मुवत्ता में कहा: "मालिक ने मुझ से फ़रमाया: 'मैं अरफ़ात में सवारियों और ऊँटों पर

	वुक़ूफ़ को पैदल खड़े होने से ज़्यादा पसंद करता हूँ। और अगर कोई शख़्स पैदल वुक़ूफ़ करे और कुछ देर आराम कर ले तो उसमें भी कोई हरज नहीं।'
It is confirmed in S*ahih Muslim* and elsewhere from Usamah ibn Zayd that when the Prophet went on from 'Arafah, he went at a medium pace, but when he found a gap, he sped up. That is what is obliged for the leaders of the hajj and those behind them, because hastening the pace to Muzdalifah is hastening to the prayer there. It is known that on that day Maghrib and 'Isha' must be prayed together at Muzdalifah. That is the Sunnah, as will be made clear, Allah willing.	"सहीह मुस्लिम और दीगर कुतुब में उसामा बिन ज़ैद से साबित है कि जब नबी करीम अरफ़ात से रवाना हुए तो आप दरमियानी रफ़्तार से चल रहे थे, लेकिन जब रास्ते में कुशादगी मिलती तो आप रफ़्तार तेज़ कर देते थे। हज्ज के अमीरों और उन के पीछे चलने वालों के लिए भी यही तरीक़ा लाज़िम है, क्योंकि मुज़दलिफ़ा की तरफ़ जल्दी करना वहाँ नमाज़ के लिए जल्दी करना है। मालूम है कि उस दिन मग़रिब और इशा की नमाज़ें मुज़दलिफ़ा में जमा कर के अदा की जाती हैं। यही सुन्नत है, जैसा कि इंशा अल्लाह आगे वाज़ेह किया जाएगा।"
The literal text of the Quran and the Sunnah indicates that the whole of the plain of 'Arafat is a standing place. The	"कुरआन-ए-मजीद के ज़ाहिर अल्फ़ाज़ और सुन्नत इस बात पर दलालत करते हैं कि अरफ़ात का पूरा मैदान वुक़ूफ़ की जगह है। नबी

Prophet said, 'I stood here and all of 'Arafah is a standing-place.' Muslim and others related it from the long *hadith* of Jabir. We find in the *Muwatta'* of Malik that he heard that the Messenger of Allah said, 'The whole of 'Arafah is a standing-place, except the middle of 'Uranah, and the whole of Muzdalifah is a standing-place, except for the middle of Muhassir.' Ibn 'Abd al-Barr said, 'This h*adith* is connected to the h*adith* of Jabir ibn 'Abdullah, the h*adith* of Ibn 'Abbas, and the h*adith* of 'Ali ibn Abi Talib. Most of the traditions do not exclude the middle of 'Uranah from 'Arafah and the middle of Muhassir from Muzdalifah. That is how the reliable scholars among the people of h*adith* transmit it in the h*adith* of Jafar ibn Muḥammad from his father from Jabir.'	करीम ने फ़रमाया: "मैं यहाँ वुक़ूफ़ कर रहा हूँ, और पूरा अरफ़ा वुक़ूफ़ की जगह है।" मुस्लिम और दीगर मुहद्दिसीन ने इसे जाबिर की तवील हदीस से रिवायत किया है। इमाम मालिक की मुवत्ता में है कि उन्हें यह ख़बर पहुँची कि रसूल अल्लाह ने फ़रमाया: "पूरा अरफ़ा वुक़ूफ़ की जगह है, सिवाए वादी-ए-उरना के दरमियान वाले हिस्से के, और पूरी मुज़दलिफ़ा वुक़ूफ़ की जगह है, सिवाए वादी-ए-मुहस्सिर के दरमियान वाले हिस्से के।" इब्न-ए-अब्दुलबर ने कहा: "यह हदीस जाबिर बिन अब्दुल्लाह, इब्न-ए-अब्बास और अली बिन अबी तालिब की अहादीस से मुत्तसिल है। अक्सर रिवायतों में वादी-ए-उरना के दरमियानी हिस्से को अरफ़ात से और वादी-ए-मुहस्सिर के दरमियानी हिस्से को मुज़दलिफ़ा से मुस्तस्ना नहीं किया गया। अहल-ए-हदीस के मोतबर उलमा जाफ़र बिन मुहम्मद से, वह अपने वालिद से, और वह जाबिर से रिवायत करदा हदीस में इसी तरह नक़्ल करते हैं।"

Abu 'Umar said that *fuqaha'* disagree about those who stand at 'Uranah on 'Arafah. According to what Ibn al-Mundhir mentioned from him, Malik said that they should make a sacrifice and then their hajj is complete. This is related by Khalid ibn Nizar from Malik. Abu'l-Musab said that a person who stands in the middle of 'Uranah is like someone who has not stood and has therefore missed the hajj and owes a hajj in the following year. It is related that Ibn 'Abbas said, 'If someone pours on from 'Uranah, he has no hajj.' That is the view of Ibn al-Qasim and Salim. Ibn al-Mundhir mentioned this view from ash-Shafi'i. He said, 'That is my view. It is not enough if someone stands in a place where the Messenger of Allah commanded that he should not stand.' Ibn 'Abd al-Barr said, 'The exception of 'Uranah from 'Arafah does not come in a manner which would oblige a [new] hajj, either by way of	"अबू उमर ने कहा है कि फ़ुक़हा का अरफ़ा के दिन वादी-ए-उरना में वुक़ूफ़ करने वालों के बारे में इख़्तिलाफ़ है। इब्न-ए-मुन्ज़िर ने उन से नक़्ल किया है कि इमाम मालिक ने फ़रमाया: "वह एक क़ुर्बानी करें, फिर उन का हज्ज मुकम्मल हो जाएगा।" ख़ालिद बिन निज़ार ने यह रिवायत इमाम मालिक से नक़्ल की है। अबू अल-मुसअब ने कहा कि जो शख़्स वादी-ए-उरना के दरमियान में वुक़ूफ़ करे, वह ऐसे शख़्स की मानिंद है जिसने वुक़ूफ़ ही न किया हो, लिहाज़ा उसका हज्ज फ़ौत हो गया और उस पर अगले साल दोबारा हज्ज लाज़िम होगा। रिवायत है कि इब्न-ए-अब्बास ने फ़रमाया: "जो शख़्स उरना से रवाना हो जाए, उसका हज्ज नहीं है।" यही राय इब्न-ए-क़ासिम और सालिम की है। इब्न-ए-मुन्ज़िर ने यही क़ौल इमाम शाफ़ई से भी नक़्ल किया है। उन्होंने कहा: "मेरी भी यही राय है। किसी ऐसे मक़ाम पर वुक़ूफ़ काफ़ी नहीं हो सकता जहाँ रसूल अल्लाह ने वुक़ूफ़ से मना फ़रमाया हो।"

transmission or consensus.' The argument of those who take the position of Abul-Musab is that standing at 'Arafah is an obligation which is agreed upon in a specific place. It is only permitted to perform it with certainty, and there is no certainty when there is disagreement. 'Uranah is to the west of the mosque of 'Arafah. Some scholars said that if the western wall of the 'Arafah mosque were to fall, it would fall in the valley of 'Uranah. Al-Baji related from Ibn Habib that 'Arafah is outside of the Haram and 'Uranah is inside it. Abu 'Umar said, 'As for the valley of Muhassir, Waki mentioned from Sufyan from Abu'z-Zubayr from Jabir that the Prophet hurried through the valley of Muhassir.'	इब्न-ए-अब्दुलबर ने कहा: "उरना को अरफ़ात से मुस्तस्ना करने की रिवायत उस दर्जे में नहीं आई कि वह नक़्ल या इज्मा के एतिबार से नए हज्ज को लाज़िम कर दे।" अबू अल-मुसअब के क़ौल को इख़्तियार करने वालों की दलील यह है कि वुक़ूफ़-ए-अरफ़ात एक ऐसा फ़र्ज़ है जो एक मुख़्तस जगह में मुत्तफ़िक़ अलैह तौर पर अदा किया जाता है, और उसकी अदायगी सिर्फ़ यक़ीनी सूरत में जायज़ है, जबकि इख़्तिलाफ़ की हालत में यक़ीन हासिल नहीं होता। उरना, मस्जिद-ए-अरफ़ात के मग़रिबी जानिब वाक़े है। बाज़ उलमा ने कहा है कि अगर मस्जिद-ए-अरफ़ात की मग़रिबी दीवार गिर जाए तो वह वादी-ए-उरना में गिरेगी। अल-बाजी ने इब्न-ए-हबीब से नक़्ल किया है कि अरफ़ात हुदूद-ए-हरम से बाहर है जबकि उरना हरम के अंदर वाक़े है। अबू उमर ने कहा: "जहाँ तक वादी-ए-मुहस्सिर का तअल्लुक़ है, वकीअ ने सुफ़यान से, उन्होंने अबू ज़ुबैर से, और उन्होंने जाबिर से रिवायत किया

	है कि नबी करीम वादी-ए-मुहस्सिर से तेजी के साथ गुज़रे थे।"
There is nothing wrong in acknowledging the Day of 'Arafah outside of 'Arafah in such a way as to resemble the people at 'Arafah. Shubah related from Qatadah that al-Hasan said, 'The first to do that was Ibn 'Abbas in Basra.' It meant people gathering in the mosque at Basra on the Day of 'Arafah. Musa ibn Abi 'Aishah said, 'I saw 'Umar ibn Hurayth giving a *khutbah* on the day of 'Arafah and people had gathered for it.' Al-Athram said, 'I asked Ahmad ibn Hanbal about celebrating 'Arafah in cities by gathering on the Day of 'Arafah. He answered, 'I hope that there is no harm in it. More than one person has done it: al-Hasan, Bakr, Thabit and Muhammad ibn Wasi. They used to attend the mosque of the Day of 'Arafah.'	"अरफ़ात से बाहर यौम-ए-अरफ़ा मनाने में, इस तौर पर कि इंसान अरफ़ात वालों से मुशाबहत इख़्तियार करे, कोई हरज नहीं है। शुबा ने क़तादा से रिवायत किया है कि हसन बसरी ने फ़रमाया: "सब से पहले यह अमल इब्न-ए-अब्बास ने बसरा में किया था।" इस से मुराद यह है कि यौम-ए-अरफ़ा के दिन लोग बसरा की मस्जिद में जमा होते थे। मूसा बिन अबी आइशा कहते हैं: "मैंने उमर बिन हुरैस को यौम-ए-अरफ़ा के दिन ख़ुत्बा देते देखा, जबकि लोग उस के लिए जमा थे।" असरम ने कहा: "मैंने अहमद बिन हंबल से शहरों में यौम-ए-अरफ़ा के मौक़े पर जमा होने के बारे में पूछा। उन्होंने जवाब दिया: 'मुझे उम्मीद है कि इस में कोई हरज नहीं। एक से ज़्यादा लोगों ने ऐसा किया है, जैसे हसन, बक्र, साबित और मुहम्मद बिन वासेअ। यह लोग यौम-ए-अरफ़ा के दिन मस्जिद में हाज़िर होते थे।

The excellence of the Day of 'Arafah is immense and its reward is immense. On it Allah expiates the worst wrong actions and multiplies good actions. The Prophet said, 'The best supplication is supplication on the Day of 'Arafah and the best of what I and the Prophets before have said is: "There is no god but Allah alone with no partner."' Ad-Daraqutni related from 'Aishah that the Messenger of Allah said, 'There is no day on which Allah frees a greater number from the Fire than the Day of 'Arafah. On that Day, Allah draws near to the earth and then, showing His pride in them to the angels, He says, "What do these people want?"' We find in the *Muwaṭṭa'* from 'Ubaydullah ibn Kariz that the Messenger of Allah said, 'Shaytan is not considered more abased or more cast out or more contemptible on any other day than he is on the day	"यौम-ए-अरफ़ा की फ़ज़ीलत बहुत अज़ीम है और उसका अज्र भी बहुत बड़ा है। उस दिन अल्लाह तआला बड़े बड़े गुनाहों को मिटा देता है और नेकियों को कई गुना बढ़ा देता है। नबी करीम ने फ़रमाया: "सब से बेहतरीन दुआ यौम-ए-अरफ़ा की दुआ है, और सब से बेहतरीन कलिमा जो मैंने और मुझ से पहले अंबिया ने कहा वह यह है: 'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं।'" दारकुत्नी ने हज़रत आइशा से रिवायत किया है कि रसूल अल्लाह ने फ़रमाया: "कोई दिन ऐसा नहीं जिस में अल्लाह तआला यौम-ए-अरफ़ा से ज़्यादा लोगों को जहन्नम से आज़ाद करता हो। उस दिन अल्लाह तआला ज़मीन के क़रीब होता है, फिर फ़रिश्तों के सामने उन लोगों पर फ़ख़्र फ़रमाता है और कहता है: 'यह लोग क्या चाहते हैं?' मुवत्ता में उबैदुल्लाह बिन करीज़ से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ने फ़रमाया: "शैतान किसी दिन इतना ज़्यादा ज़लील, हक़ीर, रुसवा और

of ‘Arafah. That is simply because he sees the descent of mercy and the fact that Allah overlooks great wrong actions. The only exception to that is what he was shown on the Day of Badr.’ Someone asked, ‘What was he shown on the Day of Badr, Messenger of Allah?’ He answered, ‘Did he not see Jibril arranging the ranks of the angels?’ Abu ‘Umar said, ‘Abu’n-Naḍr Ismail ibn Ibrahim al- Ijli related this h*adith* from Malik from Ibrahim ibn Abi ‘Ablah from Talhah ibn ‘Ubaydullāh ibn Kariz from his father. He did not say in this h*adith* ‘from his father’. It is nothing. What is correct is what is in the *Muwatta’*.	धुत्कारा हुआ नहीं होता जितना यौम-ए-अरफ़ा के दिन होता है। उसकी वजह सिर्फ़ यह है कि वह अल्लाह की रहमत के नुज़ूल और अल्लाह तआला के बड़े बड़े गुनाहों को माफ़ करने को देखता है। अलबत्ता बद्र के दिन जो कुछ उसे दिखाया गया, वह उस से मुस्तस्ना है।" किसी ने पूछा: "ऐ अल्लाह के रसूल! बद्र के दिन उसे क्या दिखाया गया था?" आप ने फ़रमाया: "क्या उसने जिब्राईल को फ़रिश्तों की सफ़ें दुरुस्त करते हुए नहीं देखा था?" अबू उमर ने कहा: "अबून-नज़र इस्माईल बिन इब्राहीम अल-अजली ने यह हदीस इमाम मालिक से, उन्होंने इब्राहीम बिन अबी अब्लह से, उन्होंने तल्हा बिन उबैदुल्लाह बिन करीज़ से, और उन्होंने अपने वालिद से रिवायत की है। लेकिन इस रिवायत में उन्होंने 'अपने वालिद से' के अल्फ़ाज़ ज़िक्र नहीं किए। इसकी कोई हैसियत नहीं। सहीह वही है जो मुवत्ता में मौजूद है।"
At-Tirmidhi al-Hakim mentioned in *Nawadir al-usul*	"तिर्मिज़ी अल-हकीम ने "नवादिर अल-उसूल" में ज़िक्र किया है कि

that it was related from Abu Rawh Hatim ibn Nuaym at-Tamimi from Hisham ibn Abi'l-Walid 'Abd al-Malik at-Tayalisi from 'Abd al-Qahir ibn as-Sariy as-Sulami from Ibn Kinanah from 'Abbas ibn Mirdas from his father from his grandfather, 'Abbas ibn Mirdas that, on the evening of 'Arafah, the Messenger of Allah made supplication for forgiveness and mercy for his community. He made a lot of supplication and received the reply: 'I have done that, except for when they wrong one another. As for the sins that are between Me and them, I have forgiven them.' He said, 'O Lord, You have the power to reward those wronged with better than the wrong done to them and to forgive those who wronged them.' He did not receive an answer that night. On the following day in the morning at Muzdalifah, he strove in making that supplication and was answered: 'I have forgiven them.' The Messenger of Allah smiled and	अबू रूह हातिम बिन नईम अत-तमिमी ने हिशाम बिन अबी अल-वलीद अब्दुलमलिक अत-तयालसी से, उन्होंने अब्दुलक़ाहिर बिन अस-सरी अस-सुलमी से, उन्होंने इब्न किनानह से, उन्होंने अब्बास बिन मिरदास से, उन्होंने अपने वालिद से, और उन्होंने अपने दादा अब्बास बिन मिरदास से रिवायत किया है कि अरफ़ा की शाम रसूल अल्लाह ने अपनी उम्मत के लिए मग़फ़िरत और रहमत की दुआ फ़रमाई। आप ने बहुत ज़्यादा दुआ की, तो जवाब मिला: "मैंने यह कर दिया, सिवाए उन मामलात के जिन में वह एक दूसरे पर ज़ुल्म करते हैं। अलबत्ता जो गुनाह मेरे और उन के दरमियान हैं, मैंने उन्हें माफ़ कर दिया है।" आप ने अर्ज़ किया: "ऐ मेरे रब! तू इस बात पर क़ादिर है कि मज़लूम को उस ज़ुल्म के बदले में उस से बेहतर अता फ़रमा दे और ज़ालिम को भी माफ़ कर दे।" उस रात आप को कोई जवाब नहीं मिला। फिर अगले दिन सुबह मुज़दलिफ़ा में आप ने इस दुआ में बहुत कोशिश की, तो जवाब मिला: "मैंने उन्हें माफ़

was asked, 'What has made you smile, Messenger of Allah, at a time in which you did not used to smile?' He replied, 'I smiled at the enemy of Allah, Iblis. When he learned that Allah had answered my supplication for my community, he fell down, crying for woe and destruction and threw dust on his head and then fled.'	कर दिया।" रसूल अल्लाह मुस्कुरा दिए। आप से पूछा गया: "ऐ अल्लाह के रसूल! आप ऐसे वक़्त में मुस्कुराए हैं जब आप उमूमन मुस्कुराया नहीं करते थे, इसकी क्या वजह है?" आप ने फ़रमाया: "मैं अल्लाह के दुश्मन इब्लीस पर हँसा हूँ। जब उसे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के हक़ में मेरी दुआ क़बूल फ़रमा ली है, तो वह हलाकत व बरबादी की फ़रियाद करते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा, अपने सर पर मिट्टी डालने लगा, फिर भाग गया।"
Abu 'Abd al-Ghani al-Hasan ibn 'Ali related from 'Abd ar-Razzaq from Malik from Abu'z-Zinad from al-A'raj from Abu Hurayrah that the Messenger of Allah said, 'On the Day of 'Arafah Allah forgives the sincere hajji. On the night of Muzdalifah, Allah forgives the merchants. On the day of Mina, Allah forgives the porters. On the day of the Jamrah 'l-'Aqabah, Allah	"अबू अब्दुलग़नी हसन बिन अली ने अब्दुर्रज़्ज़ाक़ से, उन्होंने इमाम मालिक से, उन्होंने अबू ज़िनाद से, उन्होंने अरज से, और उन्होंने अबू हुरैरा से रिवायत किया है कि रसूल अल्लाह ने फ़रमाया: "यौम-ए-अरफ़ा के दिन अल्लाह तआला मुख़्लिस हाजियों को बख़्श देता है। मुज़दलिफ़ा की रात अल्लाह तआला ताजिरों को बख़्श देता है। मिना के दिन अल्लाह तआला बोझ उठाने वालों को बख़्श देता है। और जमरह-

forgives the beggars. Many are the people among those who say that there is no god but Allah who are not present at that standing who are forgiven.' Abu 'Umar said, 'This is a *gharib hadith* from Malik. It is only recorded from him by this path. Abu 'Abd al-Ghani says that he does not know it. The people of knowledge continue to be indulgent in transmissions about things to be desired and virtues while they are severe about *hadiths* that contain judgments.'	ए-अक़्बह के दिन अल्लाह तआला सवाल करने वालों को बख़्श देता है। बहुत से ऐसे लोग जो 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहते हैं, हालाँकि वह इस वुक़ूफ़ में हाज़िर नहीं होते, फिर भी बख़्श दिए जाते हैं।" अबू उमर ने कहा: "यह इमाम मालिक से मरवी एक ग़रीब हदीस है। उन से यह सिर्फ़ इसी सनद से रिवायत की गई है। अबू अब्दुलग़नी कहते हैं कि वह इसे नहीं जानते। अहल-ए-इल्म हमेशा तरग़ीब, फ़ज़ाइल और पसंदीदा आमाल से मुतअल्लिक़ रिवायतों में नरमी बरतते आए हैं, जबकि उन अहादीस में सख़्ती इख़्तियार करते हैं जिन में शरीअी अहकाम बयान किए गए हों।"
The people of knowledge recommend fasting on the Day of 'Arafah, except for the people who are actually there. The imams related from Ibn 'Abbas that the Prophet did not fast at 'Arafah. Umm al-Faḍl sent some milk to him and he drank it. At-Tirmidhi said that	"अहल-ए-इल्म यौम-ए-अरफ़ा के रोज़े को मुस्तहब क़रार देते हैं, सिवाए उन लोगों के जो खुद अरफ़ात में मौजूद हों। इमामों ने इब्न-ए-अब्बास से रिवायत किया है कि नबी करीम ने अरफ़ात में रोज़ा नहीं रखा था। उम्मुल-फ़ज़्ल ने आप की ख़िदमत में दूध भेजा और आप ने उसे नोश

it is a sound h*asan hadith*. It is related that Ibn 'Umar said, 'I went on hajj with the Prophet and he did not fast (the day of 'Arafah). I went with Abu Bakr and he did not fast, and with 'Umar and he did not fast. According to most of the people of knowledge, this is the normal practice. They recommend not fasting at 'Arafah so that a person will be strong in supplication. Some of the people of knowledge did fast 'Arafah at 'Arafah.' There is an *isnad* from Ibn 'Umar like the first and he added at the end of it, and with 'Uthman, and he did not fast. So I do not fast it, but I neither command nor forbid it.' Ibn al-Mundhir mentioned it.	फ़रमाया। इमाम तिर्मिज़ी ने कहा है कि यह हदीस "हसन सहीह" है। रिवायत है कि इब्न-ए-उमर ने फ़रमाया: "मैंने नबी करीम के साथ हज्ज किया, आप ने यौम-ए-अरफ़ा का रोज़ा नहीं रखा। फिर मैं अबू बक्र के साथ गया, उन्होंने भी रोज़ा नहीं रखा, फिर उमर के साथ गया, उन्होंने भी रोज़ा नहीं रखा। अहल-ए-इल्म की अकसरियत के नज़दीक यही मामूल है। वह अरफ़ात में रोज़ा न रखने को पसंद करते हैं ताकि आदमी दुआ करने में ताक़तवर रहे। अलबत्ता बाज़ अहल-ए-इल्म ने अरफ़ात में भी यौम-ए-अरफ़ा का रोज़ा रखा है।" इब्न-ए-उमर से एक और सनद के साथ भी यही रिवायत मनक़ूल है, जिस के आख़िर में यह इज़ाफ़ा है: "और उस्मान के साथ भी (हज्ज किया), उन्होंने भी रोज़ा नहीं रखा। लिहाज़ा मैं भी यह रोज़ा नहीं रखता, लेकिन न मैं उसका हुक्म देता हूँ और न मना करता हूँ।" इब्न-ए-मुन्ज़िर ने इसे ज़िक्र किया है।"
'Ata' said about fasting the day	"अता ने यौम-ए-अरफ़ा के रोज़े के

of 'Arafah, 'I fast in the winter and do not fast in the summer.' Yahya al-Ansari said, 'One must not fast on the day of 'Arafah.' 'Uthman ibn Abi'l-'As, Ibn az-Zubayr and 'Aishah used to fast the day of 'Arafah.' Ibn al-Mundhir said, 'I prefer to not fast the day of 'Arafah at 'Arafat to follow the Messenger of Allah, but I prefer to fast elsewhere since the Messenger of Allah was asked about fasting the day of 'Arafah and said, 'It expiates the past year and the coming year.' We were told that 'Ata' said, 'If someone does not fast on the day of 'Arafah in order to be strong for supplication, he will have the same reward as someone who fasts.'	बारे में कहा: "मैं सर्दियों में रोज़ा रखता हूँ और गर्मियों में नहीं रखता।" यह्या अल-अंसारी ने कहा: "यौम-ए-अरफ़ा के दिन रोज़ा नहीं रखना चाहिए।" उस्मान बिन अबी अल-आस, इब्न-ए-ज़ुबैर और हज़रत आइशा यौम-ए-अरफ़ा का रोज़ा रखा करते थे। इब्न-ए-मुन्ज़िर ने कहा: "मैं अरफ़ात में यौम-ए-अरफ़ा का रोज़ा न रखने को पसंद करता हूँ ताकि रसूल अल्लाह की पैरवी हो, लेकिन दूसरे मक़ामात पर उस दिन का रोज़ा रखना मुझे पसंद है, क्योंकि रसूल अल्लाह से यौम-ए-अरफ़ा के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया: 'यह गुज़श्ता साल और आने वाले साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है।'" हमें यह भी बताया गया कि अता ने कहा: "अगर कोई शख़्स दुआ में क़ुव्वत हासिल करने के लिए यौम-ए-अरफ़ा का रोज़ा न रखे, तो उसे रोज़ा रखने वाले के बराबर अज्र मिलेगा।"
remember Allah at the Sacred Landmark.	"मशअर-ए-हराम के पास अल्लाह को याद करो।"

Remember Him by making supplication and reciting the *talbiyah* at the Sacred Landmark. The place is called Jam because the prayers of Maghrib and 'Isha' are joined together (*jumia*) there. Qatadah said that it is because Adam met Ḥawwa' there and they joined each other (*jamaa*) there and that is also why it is called Muzdalifah (*izdalafa*, to draw near). It is said that it is called that on account of the actions of the people there, because they draw near (*izdalafa*) to Allah by standing there. The word for Sacred Landmark (*mashar*) comes from *shiar* which means a sign or landmark, and it is called that because it is a landmark of the hajj due to the fact that people are required to pray there and spend the night there in supplication to Allah. It is called a Haram because of its sanctity.	"अल्लाह को वहाँ दुआ करने और तलबिया पढ़ने के ज़रिए याद करो, यानी मशअर-ए-हराम के पास। इस मक़ाम को "जम्अ" इस लिए कहा जाता है क्योंकि वहाँ मग़रिब और इशा की नमाज़ें जमा की जाती हैं। क़तादा ने कहा है कि उसे "जम्अ" इस लिए कहा जाता है क्योंकि हज़रत आदम वहाँ हज़रत हव्वा से मिले थे और दोनों वहाँ जमा हुए थे। इसी वजह से उसे "मुज़दलिफ़ा" भी कहा जाता है, यानी क़रीब होना। यह भी कहा गया है कि उसे यह नाम वहाँ लोगों के आमाल की वजह से दिया गया है, क्योंकि वह वहाँ वुक़ूफ़ कर के अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल करते हैं। लफ़्ज़ "मशअर" दरअसल "शिआर" से निकला है, जिसका मअनी निशानी या अलामत है। उसे यह नाम इस लिए दिया गया है क्योंकि यह हज्ज की एक अलामत और निशानी है, इस एतिबार से कि लोगों को वहाँ नमाज़ अदा करने और अल्लाह तआला से दुआ करते हुए रात गुज़ारने का हुक्म दिया गया है। और उसे "हराम" उसकी हुरमत और

	तक़द्दुस की वजह से कहा जाता है।"
It is confirmed that the Messenger of Allah prayed both Maghrib and 'Isha' at Muzdalifah. The people of knowledge agree, with no disagreement whatsoever, that the sunnah is to join Maghrib and 'Isha'. They disagree about someone who prays before reaching Jam. Malik said, 'Whoever stands with the imam and goes on when he goes on, does not pray until he reached Jam, where he joins the prayers. Evidence for this is found in the words of the Prophet to Usamah ibn Zayd, "The prayer is ahead of you." Ibn Habib said, 'If someone prays before reaching Muzdalifah without excuse, he repeats it when he knows. He is in the position of someone who prays before midday based on the words of the Prophet, "The prayer is ahead of you."' Abu Hanifah said that. Ashab says	"यह बात साबित है कि रसूल अल्लाह ने मुज़दलिफ़ा में मग़रिब और इशा दोनों नमाज़ें अदा फ़रमाईं। अहल-ए-इल्म का इस बात पर बग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ के इत्तिफ़ाक़ है कि सुन्नत यही है कि मग़रिब और इशा को जमा किया जाए। अलबत्ता उस शख़्स के बारे में इख़्तिलाफ़ है जो जम्अ (मुज़दलिफ़ा) पहुँचने से पहले नमाज़ पढ़ ले। इमाम मालिक ने फ़रमाया: "जो शख़्स इमाम के साथ वुक़ूफ़ करे और इमाम के रवाना होने के साथ रवाना हो, वह मुज़दलिफ़ा पहुँचने तक नमाज़ न पढ़े, जहाँ वह दोनों नमाज़ें जमा करेगा।" इस की दलील नबी करीम का हज़रत उसामा बिन ज़ैद से यह फ़रमान है: "नमाज़ तुम्हारे आगे है।" इब्न-ए-हबीब ने कहा: "अगर कोई शख़्स बग़ैर उज़्र मुज़दलिफ़ा पहुँचने से पहले नमाज़ पढ़ ले, तो जब उसे मालूम हो तो वह नमाज़ दोबारा पढ़े। उस की मिसाल उस शख़्स की मानिंद है जो दोपहर से पहले नमाज़

that he does not have to repeat them unless he prayed both of them before the disappearance of twilight. And then he only repeats 'Isha'. Ash-Shafi'i said that. It is what Qadi Abu'l-Hasan supported. His argument is that that the sunnah is to join these two prayers, but that it is not a precondition for their validity. It is a recommendation, like joining Zuhr and 'Asr at 'Arafah. Ibn al-Mundhir preferred this position and related it from 'Ata' ibn Abi Rabah, 'Urwah ibn az-Zubayr, al-Qasim ibn Muḥammad, Said ibn Jubayr, Ahmad, Ishaq, Abu Thawr and Yaqub. He related that ash-Shafi i said, 'He does not pray until he has reached Muzdalifah. But if the middle of the night comes before he reaches Muzdalifah, he does pray them.'	पढ़ ले, क्योंकि नबी करीम ने फ़रमाया था: 'नमाज़ तुम्हारे आगे है।'" इमाम अबू हनीफ़ा का भी यही क़ौल है। अशहब कहते हैं कि उस पर नमाज़ दोहराना लाज़िम नहीं, अल्ला यह कि उस ने दोनों नमाज़ें शफ़क़ ग़ायब होने से पहले अदा कर ली हों। इस सूरत में वह सिर्फ़ इशा की नमाज़ दोहराएगा। इमाम शाफ़ई का भी यही क़ौल है, और क़ाज़ी अबुल-हसन ने इसी की ताईद की है। उन की दलील यह है कि इन दोनों नमाज़ों को जमा करना सुन्नत है, लेकिन उन की सेहत के लिए शर्त नहीं। यह एक मुस्तहब अमल है, जैसे अरफ़ात में ज़ुहर और अस्र को जमा करना। इब्न-ए-मुन्ज़िर ने इसी राय को तरजीह दी है और उसे अता बिन अबी रबाह, उरवाह बिन ज़ुबैर, क़ासिम बिन मुहम्मद, सईद बिन ज़ुबैर, अहमद, इस्हाक़, अबू सौर और याक़ूब से नक़्ल किया है। उन्होंने रिवायत किया है कि इमाम शाफ़ई ने फ़रमाया: "आदमी मुज़दलिफ़ा पहुँचने तक नमाज़ न

	पढ़े, लेकिन अगर आधी रात गुज़रने लगे और वह अभी मुज़दलिफ़ा न पहुँचा हो, तो वह नमाज़ अदा कर ले।"
If someone hurries and reaches Muzdalifah before twilight has disappeared, Ibn Habib said, 'There is no prayer for someone who hastens to Muzdalifah before twilight has disappeared, either the imam or anyone else, until the twilight has disappeared.' Part of the meaning is that the time of this prayer is after the disappearance of twilight. It is not permitted to pray it before that. If its time had been before the disappearance of twilight, it would not have been delayed.	"अगर कोई शख़्स जल्दी करे और शफ़क़ ग़ायब होने से पहले मुज़दलिफ़ा पहुँच जाए, तो इब्न-ए-हबीब ने कहा: "जो शख़्स शफ़क़ ग़ायब होने से पहले मुज़दलिफ़ा पहुँच जाए, ख़्वाह इमाम हो या कोई और, उस के लिए उस वक़्त तक नमाज़ नहीं है जब तक शफ़क़ ग़ायब न हो जाए।" इस का एक मफ़हूम यह भी है कि इस नमाज़ का वक़्त शफ़क़ ग़ायब होने के बाद शुरू होता है, लिहाज़ा उस से पहले उसे अदा करना जायज़ नहीं। अगर इस का वक़्त शफ़क़ ग़ायब होने से पहले होता, तो फिर उसे मुअख़्ख़र न किया जाता।"
About someone who reaches 'Arafah after the imam has pressed on, or he is one of those with an excuse who stood with the imam, Ibn al-Mawwaz	"उस शख़्स के बारे में जो इमाम के रवाना होने के बाद अरफ़ात पहुँचे, या वह किसी उज़्र की वजह से उन लोगों में से हो जो इमाम के साथ वुक़ूफ़ न कर सके, इब्न-ए-अल-मव्वाज़ ने

said: 'If someone stands after the imam, he should pray each prayer at its time.' Malik said about someone with an excuse that keeps him from being with the imam that he prays both prayers together when the twilight disappears. Ibn al-Qasim said about those who stand after the imam: 'If he hopes to reach Muzdalifah in the first third of the night, he should delay the prayer until he reaches Muzdalifah. Otherwise he prays each prayer at its time.' So Ibn al-Mawwaz restricted delaying the prayer until Muzdalifah is reached to those who stand with the imam rather than other people. Malik made it a question of the time rather than the place and Ibn al-Qāsim considers the preferred time for the prayer and the place. If someone fears missing the preferred time, then it is invalid to consider the place. It is more appropriate to observe the preferred time.	कहा: "अगर कोई शख़्स इमाम के बाद वुक़ूफ़ करे, तो वह हर नमाज़ को उस के वक़्त पर अदा करे।" इमाम मालिक ने ऐसे माज़ूर शख़्स के बारे में कहा जो इमाम के साथ न हो सका कि वह शफ़क़ ग़ायब होने के बाद दोनों नमाज़ें जमा कर के अदा करे। इब्न-ए-क़ासिम ने उन लोगों के बारे में कहा जो इमाम के बाद वुक़ूफ़ करें: "अगर उसे उम्मीद हो कि वह रात के पहले तिहाई हिस्से में मुज़दलिफ़ा पहुँच जाएगा, तो वह नमाज़ को मुज़दलिफ़ा पहुँचने तक मुअख़्ख़र करे। वर्ना हर नमाज़ अपने वक़्त पर अदा करे।" पस इब्न-ए-अल-मव्वाज़ ने नमाज़ को मुज़दलिफ़ा पहुँचने तक मुअख़्ख़र करने को सिर्फ़ उन लोगों के साथ ख़ास किया है जो इमाम के साथ वुक़ूफ़ करें, न कि दूसरे लोगों के लिए। इमाम मालिक ने इसे वक़्त का मसअला क़रार दिया है न कि मक़ाम का, जबकि इब्न-ए-क़ासिम ने नमाज़ के अफ़ज़ल वक़्त और मक़ाम दोनों को मल्हूज़ रखा है।

	अगर किसी शख़्स को नमाज़ के अफ़ज़ल वक़्त के फ़ौत होने का अंदेशा हो, तो फिर मक़ाम को मल्हूज़ रखना दुरुस्त नहीं। ऐसी सूरत में अफ़ज़ल वक़्त की रिआयत करना ज़्यादा मुनासिब है।"
Scholars disagree about the form of the prayer at Muzdalifah. There are two possibilities. One is with the adhan and the iqamah. The other is that they are joined together with no action to separate them or action permitted between: setting down baggage and the like. As for the adhan and the iqamah, it is confirmed that the Messenger of Allah prayed Maghrib and 'Isha' at Muzdalifah with one adhan and two iqamahs. The Sahih transmitted that from the long h*adith* of Jabir. That was the view of Ahmad ibn Ḥanbal, Abu Thawr and Ibn al-Mundhir. Malik said that they should be prayed with two	"उलमा का मुज़दलिफ़ा में नमाज़ अदा करने की कैफ़ियत के बारे में इख़्तिलाफ़ है। इसमें दो सूरतें हैं। एक यह कि अज़ान और इक़ामत के साथ नमाज़ पढ़ी जाए। दूसरी यह कि दोनों नमाज़ें इस तरह जमा की जाएँ कि उनके दरमियान कोई ऐसा अमल न हो जो उनको जुदा करे, और न कोई ऐसा जाइज़ अमल किया जाए जैसे सामान उतारना वग़ैरह। जहाँ तक अज़ान और इक़ामत का तअल्लुक़ है तो यह साबित है कि रसूल अल्लाह ने मुज़दलिफ़ा में मग़रिब और इशा एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ अदा फ़रमाईं। सहीह हदीस में जाबिर की तवील रिवायत से यह बात मनक़ूल है। यही इमाम अहमद बिन हंबल, अबू थौर और इब्न अल-मुंज़िर का क़ौल है। इमाम मालिक ने कहा है कि यह

adhans and two iqamahs. The same is true of Zuhr and 'Asr at 'Arafah, although the consensus is that that happens at the beginning of the time of Zuhr. Abu 'Umar said, 'I do not know of any h*adith* regarding what Malik says that goes back to the Prophet by any path, but it is related from 'Umar ibn al-Khattab.' Ibn al-Mundhir added Ibn Masud. Part of the argument of Malik in respect of this topic is that the Messenger of Allah made a sunnah of the two prayers at Muzdalifah and 'Arafah, so arguably the two have the same time since their time is the same. Therefore each of them is prayed in its proper time and neither of them is more entitled to the adhan and iqamah than the other since neither of them is being made up: they are prayers that are being prayed at their time. Each prayer is prayed in its time. Their sunnah is therefore to have an adhan and iqamah for the group. This	नमाज़ें दो अज़ानों और दो इक़ामतों के साथ अदा की जाएँगी। इसी तरह अरफ़ात में ज़ुहर और अस्र के बारे में भी यही हुक्म है, अगरचे इस बात पर इज्मा है कि वह ज़ुहर के वक़्त के आग़ाज़ में अदा की जाती हैं। अबू उमर ने कहा: "मुझे इस बारे में कोई ऐसी हदीस मालूम नहीं जो इमाम मालिक के क़ौल की ताईद में किसी सनद के साथ नबी तक पहुँचती हो, अलबत्ता यह बात उमर बिन ख़त्ताब से मनक़ूल है।" इब्न अल-मुंज़िर ने इसमें इब्न मसऊद का इज़ाफ़ा भी किया है। इस मसअले में इमाम मालिक की दलील का एक हिस्सा यह है कि रसूल अल्लाह ने मुज़दलिफ़ा और अरफ़ात में दो नमाज़ों को जमा करने को सुन्नत क़रार दिया, लिहाज़ा बज़ाहिर दोनों का हुक्म एक जैसा होना चाहिए क्योंकि उनका वक़्त एक ही शुमार होता है। चुनाँचे हर नमाज़ अपने मुक़र्ररा वक़्त में अदा की जाती है, और उनमें से कोई भी दूसरी के मुक़ाबले में अज़ान और इक़ामत की ज़्यादा हक़दार नहीं, क्योंकि उनमें से कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं की जा रही बल्कि दोनों अपने वक़्त में अदा हो

is clear, and Allah knows best.	रही हैं। हर नमाज़ अपने वक़्त में पढ़ी जाती है, लिहाज़ा उनकी सुन्नत यह है कि जमाअत के लिए हर नमाज़ की अलग अज़ान और इक़ामत हो। यह बात वाज़ेह है, और अल्लाह ही बेहतर जानता है।"
The others say that the first one is prayed with an adhan and iqamah and the second is prayed without an adhan and iqamah. They said that 'Umar commanded the second adhan because people had separated for eating and the adhan was to gather them together again. They said, 'That is what we say when the people separate from the imam for eating or any other reason: he can command the muadhdhin to call in order to gather them. When there is an adhan, there is an *iqamah*.' They said that this is the meaning of what is related from 'Umar. They mentioned the h*adith* of 'Abd ar-Raḥman ibn Yazid in which he said, 'Ibn Masud used to put the	"दूसरे उलमा कहते हैं कि पहली नमाज़ अज़ान और इक़ामत के साथ अदा की जाएगी, जबकि दूसरी नमाज़ बिना अज़ान और इक़ामत के पढ़ी जाएगी। उनका कहना है कि उमर ने दूसरी अज़ान का हुक्म इस लिए दिया था क्योंकि लोग खाना खाने के लिए मुन्तशिर हो गए थे, और अज़ान का मक़सद उन्हें दोबारा जमा करना था। उन्होंने कहा: "हम भी यही कहते हैं कि जब लोग खाने या किसी और वजह से इमाम से अलग हो जाएँ तो इमाम मुअज़्ज़िन को अज़ान देने का हुक्म दे सकता है ताकि लोगों को दोबारा जमा किया जा सके। और जहाँ अज़ान हो वहाँ इक़ामत भी होती है।" उन्होंने कहा कि यही उमर से मनक़ूल रिवायत का मफ़हूम है। फिर उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद की

evening meal between the two prayers at Muzdalifah. Another path of transmission states that he prayed every prayer with an adhan and a iqamah.' 'Abd ar-Razzaq mentioned it.	हदीस ज़िक्र की, जिसमें वह कहते हैं: "इब्न मसऊद मुज़दलिफ़ा में दोनों नमाज़ों के दरमियान रात का खाना रखा करते थे।" एक दूसरी सनद में है कि "वह हर नमाज़ को अज़ान और इक़ामत के साथ अदा करते थे।" अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने इस रिवायत को ज़िक्र किया है।"
Still others said that both prayers are prayed at Muzdalifah with an *iqamah*, but with no adhan for either of them. It is related from Ibn 'Umar and that is the position of ath-Thawri. 'Abd ar-Razzaq and 'Abd al-Malik ibn aṣ-Sabbah mentioned from ath-Thawri from Salamah ibn Kuhayl from Said ibn Jubayr that Ibn Umar said, 'The Messenger of Allah joined Maghrib and 'Isha' at Jam'. He prayed Maghrib with three *rakahs* and 'Isha' with two with one *iqamah*.'	"बाज़ दूसरे उलमा ने कहा है कि मुज़दलिफ़ा में दोनों नमाज़ें इक़ामत के साथ अदा की जाएँगी, लेकिन उनमें से किसी के लिए भी अज़ान नहीं दी जाएगी। यह क़ौल इब्न उमर से मनक़ूल है और यही इमाम स़ौरी का मज़हब है। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ और अब्दुलमलिक बिन अस-सबाह ने इमाम स़ौरी से, उन्होंने सलमा बिन कुहैल से, उन्होंने सईद बिन जुबैर से रिवायत किया है कि इब्न उमर ने फ़रमाया: "रसूल अल्लाह ने जमअ (यानी मुज़दलिफ़ा) में मग़रिब और इशा को जमा फ़रमाया। आप ने मग़रिब तीन रकअत और इशा दो रकअत एक ही इक़ामत के साथ अदा फ़रमाई।"

Others said that both prayers are prayed together between Maghrib and 'Isha' with one adhan and one *iqamah*. That was because they believed what Hushaym related from Yunus ibn 'Ubayd from Said ibn Jubayr about Ibn 'Umar joining Maghrib and 'Isha' at Jam with one adhan and one *iqamah* with nothing separating them. The same is related *marfu* from Khuzaymah ibn Thabit. He is not strong. Al-Juzjani related from Muḥammad ibn al-Hasan from Abu Yusuf from Abu Ḥanifah that they are prayed with one adhan and two *iqamahs*: an adhan for Maghrib and only an *iqamah* for 'Isha'. This is the position of at-Tahawi based on the h*adith* of Jabir. It is the first view and it is relied on.	"बाज़ दूसरे उलमा ने कहा है कि दोनों नमाज़ें मग़रिब और इशा के दरमियान एक अज़ान और एक इक़ामत के साथ जमा करके अदा की जाएँगी। इसकी वजह यह है कि वह उस रिवायत को दुरुस्त समझते हैं जिसे हुशैम ने यूनुस बिन उबैद से, उन्होंने सईद बिन जुबैर से रिवायत किया है कि इब्न उमर ने जमअ (यानी मुज़दलिफ़ा) में मग़रिब और इशा को एक अज़ान और एक इक़ामत के साथ इस तरह जमा किया कि उनके दरमियान कोई फ़ासिला नहीं था। इसी तरह यह रिवायत ख़ुज़ैमा बिन साबित से मरफ़ूअन भी मनक़ूल है, लेकिन वह क़वी रिवायत नहीं है। अल-जौज़जानी ने मुहम्मद बिन अल-हसन से, उन्होंने अबू यूसुफ़ से, उन्होंने अबू हनीफ़ा से रिवायत किया है कि यह नमाज़ें एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ अदा की जाएँगी: मग़रिब के लिए अज़ान दी जाएगी और इशा के लिए सिर्फ़ इक़ामत होगी। यही इमाम तहावी का मौक़िफ़ है, और उन्होंने इसकी बुनियाद जाबिर की हदीस पर रखी है। यही पहला क़ौल है और इसी पर एतमाद

	किया जाता है।"
Others say that they are prayed with two *iqamahs*, with no adhan for either of them. Among those with this position are ash-Shafi'i and his people, Ishaq, and it is one of the two positions of Ahmad ibn Hanbal. It is the position of Salim ibn 'Abdullah and al-Qasim ibn Muḥammad. They argue by what 'Abd ar-Razzaq mentioned from Mamar from Ibn Shihab from Salim from Ibn 'Umar: 'When the Prophet came to Muzdalifah, he joined Maghrib and 'Isha'. He prayed Maghrib with three *rakahs* and 'Isha' with two with one *iqamah* for each of them. He did not connect them at all.' Abu 'Umar said, 'The reports from Ibn 'Umar about this position are the firmest of what is related regarding this matter, but it is subject to interpretation. There is no disagreement about the *hadith* of Jabir. It is more fitting.	"बाज़ दूसरे उलमा कहते हैं कि दोनों नमाज़ें दो इक़ामतों के साथ अदा की जाएँगी, और उनमें से किसी के लिए भी अज़ान नहीं होगी। इस मौक़िफ़ के क़ाइलों में इमाम शाफ़ई और उनके अस्हाब, इस्हाक़, और इमाम अहमद बिन हंबल के दो क़ौल में से एक क़ौल शामिल है। यही सालिम बिन अब्दुल्लाह और क़ासिम बिन मुहम्मद का भी मौक़िफ़ है। वह इस रिवायत से इस्तिदलाल करते हैं जिसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने मामर से, उन्होंने इब्न शिहाब से, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्न उमर से रिवायत किया है: "जब नबी मुज़दलिफ़ा तशरीफ़ लाए तो आप ने मग़रिब और इशा को जमा फ़रमाया। आप ने मग़रिब तीन रकअत और इशा दो रकअत अदा फ़रमाई, और हर नमाज़ के लिए अलग इक़ामत थी। आप ने उन दोनों के दरमियान कोई और नमाज़ नहीं पढ़ी।" अबू उमर ने कहा: "इस मसअले में इब्न उमर से मनक़ूल रिवायतें सबसे ज़्यादा मज़बूत हैं, लेकिन उनमें

There is no scope for speculation regarding this matter. It is something that must be followed.’	तावील की गुंजाइश है। जबकि जाबिर की हदीस के बारे में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं। वह ज़्यादा मुनासिब और क़वी है। इस मसअले में क़ियास या राय की गुंजाइश नहीं, बल्कि यह ऐसा मामला है जिसकी पैरवी करना ज़रूरी है।"
As for a separation between the two prayers by some action other than the prayer, it is confirmed from Usamah ibn Zayd that when the Prophet reached Muzdalifah, he dismounted and did *wudu’* fully. Then the *iqamah* for the prayer was made and he prayed Maghrib. Then every man made his camel kneel in his camp. Then the *iqamah* for the prayer was made and he prayed it without praying anything between them. One variant has: ‘They did not unpack until the *iqamah* for ‘Isha’ was given. He prayed and then they unpacked.’ We have already mentioned that Ibn Masud had his evening meal between the	"जहाँ तक दोनों नमाज़ों के दरमियान नमाज़ के अलावा किसी और अमल के ज़रिये फ़ासिला करने का तअल्लुक़ है, तो इस बारे में उसामा बिन ज़ैद से साबित है कि जब नबी मुज़दलिफ़ा पहुँचे तो आप सवारी से उतरे और मुकम्मल वुज़ू फ़रमाया। फिर नमाज़ के लिए इक़ामत कही गई और आप ने मग़रिब अदा फ़रमाई। इसके बाद हर शख़्स ने अपने ऊँट को अपने पड़ाव में बिठाया। फिर नमाज़ के लिए इक़ामत कही गई और आप ने इशा अदा फ़रमाई, और इन दोनों नमाज़ों के दरमियान कोई और नमाज़ नहीं पढ़ी। एक दूसरी रिवायत में है: "लोगों ने इशा की इक़ामत होने तक अपना सामान नहीं उतारा। फिर आप ने

two prayers. This is permission to separate the two prayers at Jam.	नमाज़ पढ़ी और उसके बाद उन्होंने सामान उतारा।" हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं कि इब्न मसऊद दोनों नमाज़ों के दरमियान रात का खाना खाया करते थे। इसमें इस बात की इजाज़त है कि जमअ (यानी मुज़दलिफ़ा में दोनों नमाज़ों) के दरमियान कुछ वक़्फ़ा किया जा सकता है।"
Malik was asked about someone who arrives at Muzdalifah and whether he should begin with the prayer or delay it until he has removed his baggage from his camel. He said, 'If the baggage is light, there is nothing wrong in doing that before the prayer. I do not think that is the case with load-bearers. Then the person begins with the prayer and unloads his camel afterwards.' Ashhab said in his books, 'He can unload his camel before the prayer, although I prefer that he prays Maghrib before unloading it unless it is absolutely necessary, because it is heavy	"इमाम मालिक से उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जो मुज़दलिफ़ा पहुँचे, कि क्या वह पहले नमाज़ अदा करे या अपनी सवारी से सामान उतारने के बाद नमाज़ पढ़े। उन्होंने फ़रमाया: "अगर सामान हल्का हो तो नमाज़ से पहले उसे उतार लेने में कोई हरज नहीं। लेकिन मेरा ख़याल है कि बोझ उठाने वालों के लिए ऐसा मुनासिब नहीं। चुनाँचे आदमी पहले नमाज़ अदा करे और बाद में अपनी सवारी का सामान उतारे।" अश्हब ने अपनी किताबों में कहा है: "वह नमाज़ से पहले भी अपनी सवारी का सामान उतार सकता है, अगरचे मैं इस बात को पसंद करता हूँ कि वह सामान उतारने से पहले मग़रिब

for the animal or some other reason.' As for supererogatory prayers between the two prayers, Ibn al-Mundhir said, 'I do not know of any disagreement between them that someone joining prayers does not pray supererogatory prayers between them. According to the h*adith* of Usamah, "He did not pray anything between them."	की नमाज़ अदा करे, अल्ला यह कि कोई सख़्त ज़रूरत हो, मिसाल के तौर पर जानवर पर बोझ ज़्यादा हो या कोई और वजह हो।" जहाँ तक दोनों नमाज़ों के दरमियान नफ़्ल नमाज़ पढ़ने का तअल्लुक़ है, इब्न अल-मुंधिर ने कहा: "मैं अहल-ए-इल्म के दरमियान इस बारे में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं जानता कि जो शख़्स दो नमाज़ें जमा करे वह उनके दरमियान नफ़्ल नमाज़ नहीं पढ़ता। इसकी दलील उसामा की हदीस है: 'आप ने उन दोनों के दरमियान कोई नमाज़ नहीं पढ़ी।'"
Spending the night at Muzdalifah is not one of the pillars of the hajj according to the majority of scholars, but there is disagreement about whether someone who does not spend the night there is obliged to sacrifice. Malik said that someone who does not spend the night there owes a sacrifice. Someone who stands there for most of the night owes nothing because according to Malik and	"मुज़दलिफ़ा में रात गुज़ारना जमहूर उलेमा के नज़दीक हज्ज के अरकान में से नहीं है, लेकिन इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि जो शख़्स वहाँ रात न गुज़ारे क्या उस पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी या नहीं। मालिक ने कहा कि जो शख़्स वहाँ रात न गुज़ारे उस पर क़ुर्बानी वाजिब है। अलबत्ता जो शख़्स रात का ज़्यादा हिस्सा वहाँ गुज़ार ले उस पर कुछ लाज़िम नहीं, क्योंकि इमाम मालिक और उनके अस्हाब के नज़दीक यौम-ए-नहर की रात

his people spending the Night of Sacrifice there is a confirmed sunnah, not an obligation. A similar statement was made by 'Ata', az-Zuhri, Qatadah, Sufyan ath-Thawri, Ahmad, Ishaq, Abu Thawr and the People of Opinion about someone who does not spend the night there. Ash-Shafi'i said that if someone leaves it after half the night, he owes nothing, but if he leaves before half the night has passed and does not return to Muzdalifah, he owes fidyah of a sheep.	मुज़दलिफ़ा में गुज़ारना सुन्नत-ए-मुअक्कदा है, फ़र्ज़ नहीं। इसी तरह का क़ौल अता, ज़ुहरी, क़तादा, सुफ़यान अस-थौरी, अहमद, इस्हाक़, अबू थौर और अहल-ए-राए से भी मनक़ूल है कि जो शख़्स वहाँ रात न गुज़ारे उसके बारे में यही हुक्म है। इमाम शाफ़िई ने फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स आधी रात गुज़रने के बाद वहाँ से चला जाए तो उस पर कुछ लाज़िम नहीं, लेकिन अगर आधी रात से पहले वहाँ से चला जाए और दोबारा मुज़दलिफ़ा वापस न आए तो उस पर एक बकरी की फ़िदया लाज़िम होगी।"
'Ikrimah, ash-Shabi, an-Nakha i and al-Hasan al-Baṣri said that stopping at Muzdalifah is an obligation and that, if someone misses Jam' and does not stop, he has missed hajj and must make his ihram that of 'umrah. That is related from ibn az-Zubayr and it is the position of al-Awza'i. The same is related from ath-	"इकरिमा, शाबी, नख़ई और हसन बसरी ने कहा है कि मुज़दलिफ़ा में वुक़ूफ़ करना वाजिब है, और अगर कोई शख़्स जमअ (मुज़दलिफ़ा) को फ़ौत कर दे और वहाँ वुक़ूफ़ न करे तो उसका हज्ज फ़ौत हो गया, लिहाज़ा वह अपने एहराम को उमरा में बदल दे। यह क़ौल इब्न ज़ुबैर से भी मरवी है और औज़ाई का भी यही मौक़िफ़ है।

Thawri. The soundest transmission from him is that stopping there is a confirmed sunnah. Hammad ibn Abi Sulayman said, 'Someone who misses pouring on from Jam has missed the hajj and should make it an 'umrah and do hajj in the following year. Their argument is based on the literal text of the Book and the Sunnah. In the Book, the basis is the words of the Almighty: 'When you pour down from 'Arafat, remember Allah at the Sacred Landmark.' In the Sunnah, it is the words of the Prophet: 'Whoever catches Jam and stands with the people until they pour down has caught it. Whoever does not catch that has no hajj.' Ibn al-Mundhir mentioned it. Ad-Daraqutni related that 'Urwah ibn Mudarris said, 'I went to the Prophet while he was at Jam and said to him, 'Do I have a hajj, Messenger of Allah?' The Messenger of Allah said, 'Whoever has prayed the morning prayer with us at Jam,	इसी तरह का क़ौल सौरी से भी मनक़ूल है, अगरचे उनसे सहीह तरीन रिवायत यह है कि वहाँ वुक़ूफ़ करना सुन्नत-ए-मुअक्कदा है। हम्माद बिन अबी सुलैमान ने कहा: "जो शख़्स जम्अ से रवाना होने को फ़ौत कर दे उसका हज्ज फ़ौत हो गया, लिहाज़ा वह उसे उमरा बना ले और आइन्दा साल हज्ज अदा करे।" इन हज़रात की दलील किताब व सुन्नत के ज़ाहिर अल्फ़ाज़ हैं। किताब में दलील अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: "जब तुम अरफ़ात से वापस आओ तो मशअर-ए-हराम के पास अल्लाह को याद करो।" और सुन्नत में नबी का यह इरशाद है: "जिसने जम्अ को पा लिया और लोगों के साथ वहाँ वुक़ूफ़ किया यहाँ तक कि वह वहाँ से रवाना हुए, उसने हज्ज पा लिया। और जिसने उसे न पाया उसका कोई हज्ज नहीं।" इब्न अल-मुंधिर ने इसे ज़िक्र किया है। दारक़ुत्नी ने रिवायत किया है कि उरवा बिन मुदर्रिस ने कहा: "मैं नबी के पास उस वक़्त आया जब आप जम्अ में थे, और मैंने अर्ज़ किया: 'या रसूलल्लाह! क्या मेरा हज्ज हो गया?'

having gone to 'Arafat before that, either by night or day, has completed his dishevelment and completed his hajj.' Ash-Shabi said, 'Anyone who does not stop at Jam makes it 'umrah.'	रसूलुल्लाह ने फ़रमाया: 'जिस शख़्स ने हमारे साथ जम्अ में फ़ज्र की नमाज़ अदा की, जबकि इससे पहले वह रात या दिन में अरफ़ात जा चुका हो, तो उसने अपना बिखरा हुआ हाल मुकम्मल कर लिया और उसका हज्ज मुकम्मल हो गया।'" शाबी ने कहा: "जो शख़्स जम्अ में वुक़ूफ़ न करे वह अपने हज्ज को उमरा बना ले।"
Those who take the majority position answer that the ayah does not contain any proof of the obligatory nature of standing or of spending the night there since that is not mentioned in it. All that is mentioned is remembrance (dhikr). All agree that if someone stops at Muzdalifah without remembering Allah, his hajj is complete. If the remembrance commanded is not a primary element of the hajj, then it is even more probable that being present at the place is not going to be either. Abu 'Umar said,	"जमहूर के मौक़िफ़ को इख़्तियार करने वाले हज़रात इस आयत के जवाब में कहते हैं कि इसमें वुक़ूफ़ या मुज़दलिफ़ा में रात गुज़ारने के वाजिब होने की कोई दलील नहीं, क्योंकि आयत में उसका ज़िक्र मौजूद नहीं। इसमें सिर्फ़ ज़िक्र-ए-इलाही का हुक्म दिया गया है। तमाम उलेमा इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि अगर कोई शख़्स मुज़दलिफ़ा में वुक़ूफ़ करे लेकिन अल्लाह का ज़िक्र न करे तो उसका हज्ज मुकम्मल हो जाता है। पस जब मामूर बिहि ज़िक्र ख़ुद हज्ज का रुक्न नहीं, तो उस जगह पर मौजूद होना बदरजा-ए-ऊला रुक्न नहीं होगा।

‘Similarly they agree that, when the sun rises on the Day of Sacrifice, the time of stopping at Jam has been missed but whoever manages to stop there before sunrise has caught it. Some say that it is an obligation and some say that it is sunnah.’ As for the hadith of ‘Urwah ibn Mudarris, in some variants it states that it is about stopping at Muzdalifah rather than spending the night there. That is similar to the hadith of ‘Abd ar-Rahman ibn Yamar ad-Dili who said, ‘I saw the Messenger of Allah at ‘Arafah when some people from Najd came to ask him about the hajj. The Messenger of Allah said, ‘The hajj is ‘Arafah. Whoever catches it before dawn on the night of Jam has a complete hajj.’ An-Nasa’i related this from Ishaq ibn Ibrahim from Waki from Sufyan ath-Thawri from Bukayr ibn ‘Aṭa’ from ‘Abd ar-Rahman ibn Ya‘mar ad-Dili. Ibn ‘Uyayna related it from Bukayr from ‘Abd ar-Rahman ibn Ya‘mar ad-Dīlī.	अबू उमर ने कहा: “इसी तरह उलेमा इस बात पर भी मुत्तफ़िक़ हैं कि जब यौम-ए-नहर के दिन सूरज तुलूअ हो जाए तो जम्‌अ में वुक़ूफ़ का वक़्त ख़त्म हो जाता है, लेकिन जो शख़्स तुलूअ-ए-आफ़्ताब से पहले वहाँ वुक़ूफ़ कर ले उसने उसे पा लिया। बाज़ कहते हैं कि यह वाजिब है और बाज़ कहते हैं कि यह सुन्नत है।” जहाँ तक उरवा बिन मुदर्रिस की हदीस का तअल्लुक़ है, तो उसकी बाज़ रिवायतों में यह ज़िक्र है कि वह मुज़दलिफ़ा में वुक़ूफ़ के बारे में है, न कि वहाँ रात गुज़ारने के बारे में। यह अब्दुर्रहमान बिन यअमर दैली की हदीस के मुशाबेह है, जिन्होंने कहा: “मैंने रसूलुल्लाह को अरफ़ात में देखा, जब नज्द के कुछ लोग आपसे हज्ज के बारे में सवाल करने आए। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया: ‘हज्ज अरफ़ा है। जो शख़्स जम्‌अ की रात तुलूअ-ए-फ़ज्र से पहले अरफ़ा पा ले उसका हज्ज मुकम्मल है।’” नसाई ने इसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम, वकीअ, सुफ़यान सौरी, बुकैर बिन अता, अब्दुर्रहमान बिन यअमर दैली के वास्ते से रिवायत किया है। इब्न उयैना ने भी इसे बुकैर से और उन्होंने

He said, 'I saw the Messenger of Allah say, 'The hajj is 'Arafah. Whoever catches it before dawn has caught it. The days at Mina are three. There is no sin for someone who hurries on after two and there is no sin for someone who stays longer.' He says in the hadith of 'Urwah, 'Whoever prays this prayer of ours', and he mentioned the prayer at Muzdalifah. Scholars agree that if he spends the night there, stops and then sleeps through the prayer and misses the prayer with the imam, his hajj is nevertheless complete. If attending the prayer with the imam is not a primary element of the hajj, then stopping at the place where the prayer is held is even less likely to be. They said that this hadith only verifies the obligation of 'Arafah.	अब्दुर्रहमान बिन यअमर दैली से रिवायत किया है। उन्होंने बयान किया: "मैंने रसूलुल्लाह को फ़रमाते हुए सुना: 'हज्ज अरफ़ा है। जो शख़्स तुलूअ-ए-फ़ज्र से पहले अरफ़ा पा ले उसने हज्ज पा लिया। मिना के दिन तीन हैं। पस जो दो दिन के बाद जल्दी चला जाए उस पर कोई गुनाह नहीं, और जो ज़्यादा ठहरे उस पर भी कोई गुनाह नहीं।'" उरवा की हदीस में यह अल्फ़ाज़ हैं: "जिसने हमारी इस नमाज़ को पाया", और इससे मुराद मुज़दलिफ़ा की नमाज़ है। उलेमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि अगर कोई शख़्स मुज़दलिफ़ा में रात गुज़ारे, वहाँ वुक़ूफ़ करे, फिर सो जाए और इमाम के साथ नमाज़ फ़ौत हो जाए, तब भी उसका हज्ज मुकम्मल है। पस जब इमाम के साथ नमाज़ अदा करना ख़ुद हज्ज का रुक्न नहीं, तो उस जगह वुक़ूफ़ करना जहाँ नमाज़ अदा की जाती है, उससे भी कम दर्जा रखता है। इन हज़रात ने कहा कि यह हदीस सिर्फ़ अरफ़ा के वाजिब होने पर दलालत करती है।"

Remember Him because He has guided you, even though before this you were astray.	"और अल्लाह को याद करो इसलिए कि उसने तुम्हें हिदायत दी, हालाँकि इससे पहले तुम यक़ीनन गुमराहों में से थे।"
The command to remember is repeated for emphasis. It is said that the first is a command to remember at the Mashar al-Haram and the second is to remember with sincerity. It is said that the second time it means to acknowledge the blessing and show gratitude for it and then to remind them about the time when they were misguided. Remember Him in a good way as He has guided you in a good way. Remember Him as He has taught you what to do and do not turn from it. 'Before this' refers to before the guidance of Islam came, or before the Quran, or before the Prophet. The first is the most likely, and Allah knows best.	"ज़िक्र के हुक्म को ताकीद के लिए दोबारा दोहराया गया है। कहा गया है कि पहला हुक्म मशअर-ए-हराम के पास ज़िक्र करने का है और दूसरा इख़्लास के साथ ज़िक्र करने का। यह भी कहा गया है कि दूसरी मर्तबा इससे मुराद नेमत का इक़रार करना, उस पर शुक्र अदा करना, और फिर उस वक़्त को याद दिलाना है जब वह गुमराही में थे। अल्लाह को अच्छे तरीक़े से याद करो, जैसे उसने तुम्हें अच्छे तरीक़े से हिदायत दी। अल्लाह को उस तरह याद करो जैसे उसने तुम्हें वह आमाल सिखाए जो तुम्हें करने चाहिएँ, और उससे रूगर्दानी न करो। "इससे पहले" से मुराद इस्लाम की हिदायत आने से पहले, या क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले, या नबी की बिअसत से पहले का ज़माना है। पहला मअनी ज़्यादा ज़ाहिर और राजिह मालूम होता है, वल्लाहु

	आलम।”
Then press on from where the people press on and ask Allah's forgiveness. Allah is Ever-Forgiving, Most Merciful. [2:199]	“फिर वहाँ से रवाना हो जहाँ से सब लोग रवाना होते हैं, और अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करो। बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।” [अल-बक़रह: 199]
Then press on from where the people press on	“फिर वहाँ से रवाना हो जहाँ से सब लोग रवाना होते हैं।”
The 'people' referred to here are those called Hums (Quraysh and others), who did not stop with the people at 'Arafat, but stopped at Muzdalifah, which is part of the Haram, claiming that they were its servants and must venerate only it. Notwithstanding the fact that they knew that 'Arafat was where Ibrahim had stood, they did not leave the Haram and stood instead at Jam while the people were at 'Arafat. They were told to press on with the people. 'Then' in this ayah is for order, and it adds one	"यहाँ “लोगों” से मुराद वह लोग हैं जिन्हें हुम्स कहा जाता था, यानी क़ुरैश और उनके साथ दूसरे क़बाइल, जो आम लोगों के साथ अरफ़ात में वुक़ूफ़ नहीं करते थे बल्कि मुज़दलिफ़ा में ठहरते थे, क्योंकि वह हरम का हिस्सा है। उनका दावा था कि वह हरम के ख़ादिम हैं, इसलिए उन्हें सिर्फ़ उसी की तअज़ीम करनी चाहिए। हालाँकि वह जानते थे कि हज़रत इब्राहीम ने अरफ़ात में वुक़ूफ़ किया था, फिर भी वह हरम से बाहर नहीं निकलते थे और लोग अरफ़ात में होते जबकि वह जम्अ (मुज़दलिफ़ा) में वुक़ूफ़ करते थे। चुनाँचे उन्हें हुक्म दिया गया कि

sentence to another. Ad-Dahhak says that the entire community is addressed and 'people' means Ibrahim as is the case in. So it has a singular meaning. It is possible that the pressing on here means from 'Arafah or that it means the pressing on from Muzdalifah. At-Tabari said that it means: 'Press on from where Ibrahim pressed on from Muzdalifah Jam', namely, press on to Mina because the pressing on from 'Arafah is before the pressing on from Muzdalifah.'	वह भी लोगों के साथ रवाना हों। इस आयत में "सुम्म" तरतीब के लिए है, और यह एक जुमले को दूसरे जुमले के साथ मिलाता है। ज़ह्हाक कहते हैं कि यहाँ पूरी उम्मत को ख़िताब है, और "लोगों" से मुराद हज़रत इब्राहीम हैं, जैसा कि बाज़ दूसरे मक़ामात पर भी यही उस्लूब पाया जाता है। इस लिहाज़ से इसका मअनी वाहिद होगा। यह भी मुमकिन है कि यहाँ "रवाना होने" से मुराद अरफ़ात से रवाना होना हो, और यह भी मुमकिन है कि इससे मुराद मुज़दलिफ़ा से रवाना होना हो। तबरी ने कहा है कि इसका मअनी यह है: "तुम वहाँ से रवाना हो जहाँ से इब्राहीम मुज़दलिफ़ा यानी जम्अ से रवाना हुए थे", यानी मिना की तरफ़ रवाना हो, क्योंकि अरफ़ात से रवाना होना मुज़दलिफ़ा से रवाना होने से पहले होता है।"
This is evidence to support those who make it an obligation to stop at Muzdalifah since there is a	"यह आयत उन लोगों के मौक़िफ़ की ताईद में दलील है जो मुज़दलिफ़ा में वुक़ूफ़ को वाजिब क़रार देते हैं, क्योंकि इससे रवाना होने का हुक्म

command to press on from it, and Allah knows best. The sound position regarding the interpretation of this ayah is the first one. At-Tirmidhi related that Aishah said, 'Quraysh and those following their religion, namely the Hums, used to stop at Muzdalifah, saying, "We are the servants of Allah." Other people stood at 'Arafah. Therefore Allah revealed: "Press on from where the people press on."' This is a sound hasan hadith. Aishah said in Sahih Muslim, 'The Hums were those about whom Allah revealed: "Press on from where the people press on."' She added, 'The people used to press on from 'Arafah while the Hums pressed on from Muzdalifah. They said, "We only press on from the Haram." When "Press on from where the people press on," was revealed they returned to 'Arafat.' This is an explicit text. It is very sound and other views are not relied on. Allah is	दिया गया है, वल्लाहु आलम। ताहम इस आयत की तफ़्सीर के बारे में सहीह मौक़िफ़ पहला ही है। तिर्मिज़ी ने हज़रत आइशा से रिवायत किया है कि क़ुरैश और उनके दीन की पैरवी करने वाले, यानी हुम्स, मुज़दलिफ़ा में वुक़ूफ़ करते थे और कहते थे: "हम अल्लाह के ख़ादिम हैं।" जबकि दूसरे लोग अरफ़ात में वुक़ूफ़ करते थे। चुनाँचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "फिर वहाँ से रवाना हो जहाँ से सब लोग रवाना होते हैं।" तिर्मिज़ी ने कहा कि यह हदीस हसन सहीह है। सहीह मुस्लिम में हज़रत आइशा ने फ़रमाया: "हुम्स वह लोग थे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: 'फिर वहाँ से रवाना हो जहाँ से सब लोग रवाना होते हैं।'" उन्होंने मज़ीद फ़रमाया: "लोग अरफ़ात से रवाना होते थे जबकि हुम्स मुज़दलिफ़ा से रवाना होते थे। वह कहते थे: 'हम सिर्फ़ हरम ही से रवाना होंगे।' फिर जब यह आयत नाज़िल हुई: 'फिर वहाँ से रवाना हो जहाँ से सब लोग रवाना होते हैं' तो

the One we ask for help.	वह दोबारा अरफ़ात की तरफ़ लौट आए।" यह एक सरीह नस है, निहायत सहीह है, और इसके मुक़ाबले में दूसरे अक़वाल पर एतमाद नहीं किया जाता। अल्लाह ही से हम मदद तलब करते हैं।"
Said ibn Jubayr recited 'an-nasi' (the forgetter). Its interpretation is that it refers to Adam since Allah says: 'He forgot. We did not find that he had a firm resolve.'	"सईद बिन जुबैर ने "अन-नासी" (भूलने वाला) पढ़ा है। इसकी तफ़्सीर यह की गई है कि इससे मुराद हज़रत आदम हैं, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "वह भूल गए थे, और हमने उनमें पुख़्ता अज़्म नहीं पाया।"
Allah commanded them to ask for forgiveness because this is the place for doing that and a place where it is likely that it will be accepted and that mercy will descend. One group said that it means: 'Ask Allah's forgiveness for any actions you did that are contrary to the sunnah of Ibrahim with respect to your standing at Quzah at Muzdalifah rather than 'Arafah.'	"अल्लाह तआला ने उन्हें इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया, क्योंकि यह ऐसी जगह है जहाँ इस्तिग़फ़ार करना मुनासिब है, और यह रहमत के नाज़िल होने और दुआ की क़ुबूलियत की उम्मीद की जगह है। एक जमाअत ने कहा है कि इसका मतलब यह है: "तुम अल्लाह से उन आमाल की माफ़ी माँगो जो तुमने हज़रत इब्राहीम की सुन्नत के ख़िलाफ़ किए, यानी अरफ़ात के बजाय मुज़दलिफ़ा में क़ुज़ह के मक़ाम पर

	वुक़ूफ़ करने के बारे में।"
Abu Dawud related that 'Ali said, 'In the morning the Prophet stood on Quzah and said, "This is Quzah. It is a place of standing. All of Jam is a place of standing. I sacrificed here and all of Mina is a place of sacrifice, so sacrifice where your baggage is." Therefore the ruling for the hajjis when they press on from 'Arafah to Muzdalifah is that they spend the night there. Then the imam leads the people in the Subh prayer before dawn and they stand at the Sacred Landmark. Quzah is the mountain on which the imam stands. They continue to remember Allah and make supplication until it is close to sunrise. Then they press on before sunrise, differing from the Arabs who used to press on after sunrise, when they would say, 'Ashriq thabir kayma nujir' (Illuminate Thabir so that we may hasten), meaning to approach coming	"अबू दाऊद ने रिवायत किया है कि हज़रत अली ने कहा: "सुबह के वक़्त नबी क़ुज़ह पर खड़े हुए और फ़रमाया: 'यह क़ुज़ह है। यह वुक़ूफ़ की जगह है। और पूरा जम्अ वुक़ूफ़ की जगह है। मैंने यहाँ क़ुर्बानी की, और पूरा मिना क़ुर्बानी की जगह है, इसलिए तुम वहीं क़ुर्बानी करो जहाँ तुम्हारा सामान हो।'" इसलिए हुज्जाज के लिए हुक्म यह है कि जब वह अरफ़ात से मुज़दलिफ़ा की तरफ़ रवाना हों तो वहाँ रात गुज़ारें। फिर इमाम लोगों को सुबह-सुबह फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाए और वह मशअर-ए-हराम के पास वुक़ूफ़ करें। क़ुज़ह वह पहाड़ है जिस पर इमाम खड़ा होता है। वह लोग सूरज निकलने के क़रीब तक अल्लाह का ज़िक्र और दुआ करते रहते हैं। फिर वह सूरज निकलने से पहले रवाना हो जाते हैं, ताकि अरबों की मुख़ालफ़त हो, जो सूरज निकलने के बाद रवाना होते थे। उस वक़्त वह कहते थे: 'अश्रिक़ थबीर कैमa नुजीर' (ऐ थबीर! रोशन

out of ihram.	हो जा ताकि हम जल्दी करें), यानी एह्राम से निकलने के क़रीब पहुँचने के लिए।"
Al-Bukhari related that 'Amr ibn Maymun said, 'I saw 'Umar pray Subh at Jam'. Then he stood and said, "The idolaters used not to press on until the sun rose, saying, 'Ashriq thabir.' The Prophet acted differently to them and pressed on before sunrise."' Ibn 'Uyaynah related from Ibn Jurayj from Muhammad ibn Makharramah from Ibn Tawus from his father that the people of the Jahiliyyah used to press on from 'Arafah before sunset, and press on from Muzdalifah after sunrise. The Messenger of Allah delayed one and brought the other forward: he delayed the pressing on from 'Arafah and hastened that of Muzdalifah, acting differently to the idolaters.	"इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है कि अम्र बिन मैमून ने कहा: "मैंने हज़रत उमर को जम्अ (मुज़दलिफ़ा) में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते देखा। फिर वह खड़े हुए और फ़रमाया: 'मुशरिकीन उस वक़्त तक रवाना नहीं होते थे जब तक सूरज तुलूअ न हो जाता, और वह कहते थे: "अश्रिक़ थबीर"। नबी ने उनकी मुख़ालफ़त की और सूरज तुलूअ होने से पहले ही रवाना हो गए।'" इब्न उयैना ने इब्न जुरैज से, उन्होंने मुहम्मद बिन मुखर्रमा से, उन्होंने इब्न ताऊस से, और उन्होंने अपने वालिद से रिवायत किया है कि अहल-ए-जाहिलियत अरफ़ात से ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब से पहले रवाना हो जाते थे, और मुज़दलिफ़ा से सूरज तुलूअ होने के बाद रवाना होते थे। रसूलुल्लाह ने इन दोनों तरीक़ों में तब्दीली फ़रमाई: अरफ़ात से रवाना होने को मुअख़्ख़र किया और मुज़दलिफ़ा से रवाना होने को जल्दी

	किया, ताकि मुशरिकीन की मुख़ालफ़त हो।"
When they press on before sunrise, their ruling is to press on in the manner in which they pressed on from 'Arafah, which is that the imam travels with the people at a medium pace, and speeds up slightly when he finds a gap. A medium pace (anaq) is a well known pace taken by mounts. Nass is a faster pace than anaq, like khabab (a quick amble). We find in Sahih Muslim that Usamah ibn Zayd was asked, 'How did the Messenger of Allah travel when he pressed on from 'Arafah?' He answered, 'He travelled at a medium pace, and when he found a gap, he went quicker (nass). Hisham said that nass is faster than anaq as we already mentioned. It is recommended to hasten in the valley of Muhassir for the distance of a stone's throw. There is no harm if one does not do that. It is part	"जब लोग सूरज तुलूअ होने से पहले रवाना हों तो उनके लिए हुक्म यह है कि वह उसी अंदाज़ से रवाना हों जिस तरह अरफ़ात से रवाना हुए थे, यानी इमाम लोगों के साथ दरमियानी रफ़्तार से चले, और जब रास्ता खुला पाए तो कुछ तेजी इख़्तियार करे। "अनक़" सवारी की एक मशहूर दरमियानी रफ़्तार है। "नस्स" इससे तेज़ रफ़्तार को कहते हैं, जैसे "ख़बब" यानी तेज़ चाल। सहीह मुस्लिम में है कि उसामा बिन ज़ैद से पूछा गया: "रसूलुल्लाह अरफ़ात से रवाना होते वक़्त किस तरह चलते थे?" उन्होंने जवाब दिया: "आप दरमियानी रफ़्तार से चलते थे, और जब रास्ता कुशादा मिलता तो रफ़्तार तेज़ कर देते थे (नस्स इख़्तियार करते थे)।" हिशाम ने कहा कि "नस्स" अनक़ से ज़्यादा तेज़ रफ़्तार है, जैसा कि हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं। वादी-ए-मुहस्सिर में एक पत्थर

of Mina. Ath-Thawri and others related from Abu-z-Zubayr that Jabir said, 'The Messenger of Allah pressed on with tranquillity and told them, "Go gently and quickly in the valley of Muhassir" and he told them, "Take your rites from me."'	फेंकने के फ़ासले के बराबर जल्दी चलना मुस्तहब है, और अगर कोई ऐसा न करे तो भी कोई हरज नहीं। यह मिना का हिस्सा है। सौरी और दूसरे मुहद्दिसीन ने अबू ज़ुबैर से रिवायत किया कि जाबिर ने कहा: "रसूलुल्लाह सुकून और वक़ार के साथ रवाना हुए और लोगों से फ़रमाया: 'नर्मी से चलो, और वादी-ए-मुहस्सिर में कुछ तेजी करो।' और आप ने फ़रमाया: 'अपने मनासिक मुझसे सीख लो।'"
When they reached Mina on the morning of the Day of Sacrifice, they stoned the Jamrat al-Aqabah in the middle of the morning while mounted, if possible. It is not recommended to ride to the other jamrahs. They stoned them with seven pebbles, each of them like a pea, as will be explained. When they have stoned them, they leave their ihram and what was forbidden to them of clothing and other things becomes lawful for them again: except for women, scent	"जब लोग यौम-ए-नहर की सुबह मिना पहुँचते हैं तो अगर मुमकिन हो तो सवार होकर सुबह के दरमियानी वक़्त में जमरह-ए-अक़बा को कंकरीयाँ मारते हैं। बाक़ी जमरात की तरफ़ सवारी पर जाना मुस्तहब नहीं। वह सात कंकरीयाँ मारते हैं, जिनमें हर कंकरी चने के दाने के बराबर होती है, जैसा कि आगे वज़ाहत आएगी। जब वह रमी कर लेते हैं तो उनका एहराम खुल जाता है, और लिबास वग़ैरह की वह तमाम चीज़ें जो एहराम की हालत में उन पर हराम थीं दोबारा

and hunting, according to Malik and Ishaq in the transmission of Abu Dawud al-Khaffaf. ‘Umar ibn al-Khattab and Ibn ‘Umar said, ‘Everything is lawful to him except women and scent.’ According to Mālik, if someone uses scent after stoning and before the Tawaf al-Ifadah, he does not owe fidyah because of what has come about that. He believes that if someone hunts after stoning the Jamrah and before the Tawaf al-Ifadah, he owes reparation. Ash-Shafi‘i, Ahmad, Ishaq and Abu Thawr said that everything except women is lawful for him. That is related from Ibn Abbas.	हलाल हो जाती हैं, सिवाए औरतों, ख़ुशबू और शिकार के। यह इमाम मालिक और इस्हाक़ का क़ौल है, जैसा कि अबू दाऊद अल-ख़फ़्फ़ाफ़ की रिवायत में है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और इब्न उमर ने फ़रमाया: "उसके लिए हर चीज़ हलाल हो जाती है सिवाए औरतों और ख़ुशबू के।" इमाम मालिक के नज़दीक अगर कोई शख़्स रमी के बाद और तवाफ़-ए-इफ़ाज़ह से पहले ख़ुशबू इस्तेमाल करे तो उस पर फ़िदया लाज़िम नहीं, क्योंकि इस बारे में आसार वारिद हुए हैं। अलबत्ता अगर वह जमरह की रमी के बाद और तवाफ़-ए-इफ़ाज़ह से पहले शिकार करे तो उस पर जज़ा लाज़िम होगी। इमाम शाफ़िई, अहमद, इस्हाक़ और अबू थौर कहते हैं कि औरतों के अलावा हर चीज़ उसके लिए हलाल हो जाती है। यह क़ौल इब्न अब्बास से भी मरवी है।"
The person performing hajj stops saying the talbiyah with the first pebble he throws at the	"हज्ज करने वाला शख़्स जमरह-ए-अक़बा पर पहली कंकरी मारने के साथ तलबिया कहना बंद कर देता

Jamrat al-Aqabah. This is the position of most of the people of knowledge in Madinah and elsewhere. This is permitted and allowed according to Malik. What is well known from him, however, is that one stops saying it at midday on the day of 'Arafah according to what he mentioned in the Muwatta' from 'Ali. He said, 'That is the way with us.'	है। मदीना और दूसरे इलाक़ों के अकसर अहल-ए-इल्म का यही मौक़िफ़ है। इमाम मालिक के नज़दीक भी यह जायज़ और दुरुस्त है। अलबत्ता उनसे मशहूर क़ौल यह है कि तलबिया यौम-ए-अरफ़ा के दिन ज़वाल के वक़्त बंद किया जाए, जैसा कि उन्होंने मुवत्ता में हज़रत अली से रिवायत किया है। इमाम मालिक ने फ़रमाया: "हमारे यहाँ इसी पर अमल है।"
The basis for this in the Sunnah is what Muslim related from al-Faḍl ibn 'Abbas. He was riding behind the Messenger of Allah who said to the people on the evening of 'Arafah and the morning of Jam', 'You must be calm!' He was holding back his she-camel until he entered Muhassir (which is part of Mina). He said, 'You must have pea-sized pebbles with which to stone the Jamrah.' He said, 'The Messenger of Allah continued to say the talbiyah until he had stoned the Jamrat	"इस मसअले की अस्ल सुन्नत में वह रिवायत है जिसे इमाम मुस्लिम ने फ़ज़्ल बिन अब्बास से नक़्ल किया है। वह रसूलुल्लाह के पीछे सवारी पर सवार थे। नबी ने अरफ़ा की शाम और जम्अ (मुज़दलिफ़ा) की सुबह लोगों से फ़रमाया: "तुम पर सुकून और वक़ार लाज़िम है!" आप अपनी ऊँटनी को रोके हुए थे यहाँ तक कि वादी-ए-मुहस्सिर में दाख़िल हुए, जो मिना का हिस्सा है। फिर आप ने फ़रमाया: "तुम्हें चने के दाने के बराबर कंकरीयाँ लेनी चाहिए जिनसे जमरह को रमी की जाए।"

al-'Aqabah.' One variant has: 'The Prophet indicated with his hand how someone flicks a pebble.' We find in al-Bukhari that 'Abdullah went to the largest Jamrah with the House on his left and Mina on his right. He threw seven pebbles and said, 'That is how the stoning was done by the one to whom Surat al-Baqarah was revealed.' ad-Daraqutni related that Aishah said that the Messenger of Allah said, 'When you have stoned, shaved and sacrificed, then everything except women is lawful for you. Clothing and scent are lawful for you.' We find in al-Bukhari that Aishah said, 'I put scent on the Messenger of Allah with these two hands when he went into ihram and when he came out of it before doing tawaf.' She stretched out her hands. According to scholars, this is the lesser coming out of ihram. The greater coming out of ihram is the Tawaf al-Ifadah which makes lawful women and all	फ़ज़्ल ने कहा: "रसूलुल्लाह जमरह-ए-अक़बा की रमी करने तक मुसलसल तलबिया कहते रहे।" एक रिवायत में है: "नबी ने अपने हाथ से इशारा किया कि कंकरी किस तरह फेंकी जाती है।" सहीह बुख़ारी में है कि अब्दुल्लाह बड़े जमरह के पास आए, इस हाल में कि बैतुल्लाह उनके बाएँ जानिब और मिना उनके दाएँ जानिब था। उन्होंने सात कंकरीयाँ मारें और फ़रमाया: "इसी तरह उस ज़ात ने रमी की थी जिस पर सूरह-ए-बक़रह नाज़िल हुई थी।" दारकुत्नी ने रिवायत किया है कि हज़रत आइशा ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया: "जब तुम रमी कर लो, सर मुंडवा लो और क़ुर्बानी कर लो तो औरतों के अलावा हर चीज़ तुम्हारे लिए हलाल हो जाती है। लिबास और ख़ुशबू तुम्हारे लिए जायज़ हो जाते हैं।" सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा से मरवी है: "मैंने अपने इन दोनों हाथों से रसूलुल्लाह को एहराम बाँधते वक़्त और एहराम खोलने के बाद, तवाफ़ करने से पहले, ख़ुशबू लगाई थी।"

things that are forbidden in ihram. More of this will be mentioned in Surat al-Hajj, Allah willing.	फिर उन्होंने अपने हाथ फैलाए। उलेमा के नज़दीक यह “तहल्लुल-ए-असग़र” यानी एहाम से जुज़वी तौर पर निकलना है। जबकि “तहल्लुल-ए-अकबर” तवाफ़-ए-इफ़ाज़ह के बाद हासिल होता है, जिसके बाद औरतें और एहाम की तमाम ममनूअ चीज़ें हलाल हो जाती हैं। इसकी मज़ीद तफ़्सील, इंशा अल्लाह, सूरह-ए-हज्ज में आएगी।”
When you have completed your rites, remember Allah as you used to remember your forefathers, or even more. There are some people who say, ‘Our Lord, give us good in this world.’ They will have no share in the Next World. [2:200]	“फिर जब तुम अपने मनासिक अदा कर चुकों तो अल्लाह को याद करो, जैसे तुम अपने बाप-दादा को याद करते थे बल्कि उससे भी बढ़कर। फिर लोगों में कुछ ऐसे हैं जो कहते हैं: ‘ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में दे दे।’ ऐसे लोगों के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा।” [अल-बक़रह: 200]
When you have completed your rites, remember Allah	“फिर जब तुम अपने मनासिक अदा कर चुकों तो अल्लाह को याद करो।
Mujahid says that the ‘manasik’ (rites) referred to here are the sacrifices and it means the spilling of blood. It	"मुजाहिद कहते हैं कि यहाँ “मनासिक” से मुराद क़ुर्बानियाँ हैं, यानी ख़ून बहाना। यह भी कहा गया

is said that it refers to the pillars of hajj since the Prophet said, 'Take your rites from me.' So the meaning is: 'When you perform the rites of hajj, remember Allah, and also remember Him and praise Him for His blessings to you.' 'Qadaytum' means: 'you have performed and finished'. The verb can also be used for performing acts of worship outside of their defined time.	है कि इससे मुराद हज्ज के अरकान हैं, क्योंकि नबी ने फ़रमाया: "अपने मनासिक मुझसे सीख लो।" पस मअनी यह है: "जब तुम हज्ज के मनासिक अदा कर चुकों तो अल्लाह को याद करो, और उसकी नेमतों पर उसकी हम्द व सना भी करो।" "क़ज़ैतुम" का मअनी है: "तुमने अदा कर लिया और मुकम्मल कर लिया।" यह फ़ेअल इबादात को उनके मुक़र्रर वक़्त के बाद अदा करने के लिए भी इस्तेमाल होता है।"
as you used to remember your forefathers – or even more.	"जैसे तुम अपने बाप-दादा को याद करते थे बल्कि उससे भी बढ़कर।"
The custom of the Arabs was that, when they completed the hajj, they would stand at the Jamrah and boast of their forefathers and mention the glorious and courageous feats of their ancestors, to the extent that one of them would say, 'O Allah, my father was a great tent with a huge pit and much wealth. Give me the like of what You gave him!' and would only mention his father.	"अरबों का दस्तूर यह था कि जब वह हज्ज मुकम्मल कर लेते तो जमरह के पास खड़े होकर अपने आबा व अजदाद पर फ़ख़्र करते, और अपने बुज़ुर्गों के शुजाअत भरे और अज़ीम कारनामे बयान करते। यहाँ तक कि उनमें से कोई कहता: "ऐ अल्लाह! मेरा बाप बड़े ख़ैमे वाला, गहरी हाँडी वाला और बहुत माल वाला था, पस मुझे भी वैसा ही अता फ़रमा जैसा तूने उसे दिया था!" और वह सिर्फ़ अपने

This ayah was revealed commanding them to remember Allah more than they used to remember their forefathers in the time of the Jahiliyyah. This is the position of most commentators. Ibn 'Abbas, 'Ata', ad-Dahhak and ar-Rabi said that the meaning of the ayah is: 'Remember Allah as children remember their fathers and mothers. Seek help from Him and seek refuge with Him as you did with your parents when you were a child.' Another group say that the ayah means: 'Remember Allah and esteem Him, defend His sanctity and repel those who desire to introduce shirk into His din and insults just as you would speak well of your parents if someone criticised them, and protect and defend them.'	बाप का ज़िक्र करता था। चुनाँचे यह आयत नाज़िल हुई, जिसमें उन्हें हुक्म दिया गया कि वह अल्लाह को उससे ज़्यादा याद करें जितना वह ज़माना-ए-जाहिलियत में अपने आबा व अजदाद को याद करते थे। अकसर मुफस्सिरीन का यही मौक़िफ़ है। इब्न अब्बास, अता, ज़हहाक और रबीअ ने कहा है कि आयत का मअनी यह है: "अल्लाह को उस तरह याद करो जैसे बच्चे अपने माँ-बाप को याद करते हैं। उससे मदद माँगो और उसकी पनाह तलब करो जैसे तुम बचपन में अपने वालिदैन से मदद और पनाह माँगा करते थे।" एक और जमाअत ने कहा है कि आयत का मतलब यह है: "अल्लाह को याद करो, उसकी अज़्मत बयान करो, उसकी हुरमत की हिफ़ाज़त करो, और उन लोगों का रद्द करो जो उसके दीन में शिर्क दाख़िल करना चाहते हैं और उसकी तौहीन करते हैं, जिस तरह तुम अपने वालिदैन के बारे में कोई बुरी बात सुनकर उनका दिफ़ा करते और उनकी हिमायत करते हो।"

Abu-l-Jawza' said to Ibn 'Abbās, 'These days no one mentions his forefathers. So what does the ayah mean?' He replied, 'That is not what it is about. Allah is angrier when someone disobeys Him than your parents are angry with you when you abuse them.'	"अबू अल-जौज़ा ने इब्न अब्बास से कहा: "आज कल तो कोई अपने आबा व अजदाद का ज़िक्र नहीं करता, फिर इस आयत का क्या मतलब है?" उन्होंने जवाब दिया: "आयत का मतलब यह नहीं है। अल्लाह तआला उस वक़्त ज़्यादा नाराज़ होता है जब कोई उसकी नाफ़रमानी करता है, बनिस्बत इसके कि तुम्हारे वालिदैन उस वक़्त नाराज़ होते हैं जब तुम उन्हें बुरा-भला कहो।"
Az-Zajjaj said that 'even more' means 'with a stronger remembrance.' It is possible that it means: 'Remember Him more.'	"ज़ज्जाज ने कहा है कि "बल्कि उससे भी बढ़कर" का मतलब है: "ज़्यादा शिद्दत के साथ याद करना।" यह भी मुमकिन है कि इसका मअनी हो: "उसे ज़्यादा याद करो।"
There are some people who say, 'Our Lord, give us good in this world.'	"फिर लोगों में कुछ ऐसे हैं जो कहते हैं: 'ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में दे दे|"
This refers to the idolaters. Abu Wail, as-Suddi and Ibn Zayd said, 'In the time of the Jahiliyyah, the Arabs used only to pray for the good things of this world. They would ask for	"इससे मुराद मुशरिकीन हैं। अबू वाइल, सुद्दी और इब्न ज़ैद ने कहा है: "ज़माना-ए-जाहिलियत में अरब सिर्फ़ दुनिया की भलाईयों की दुआ किया करते थे। वह ऊँट, बकरियाँ और अपने दुश्मनों पर ग़लबा माँगते थे।

camels, sheep and victory over their enemies. They would not ask for the Next World since they did not acknowledge it or believe in it. Here they are being forbidden to ask for only this world. The prohibition comes in the form of a report about what they do. It is also possible that this threat refers to the believers when their supplication is confined to this world. They will have no portion in the Next World because they do not ask for it.' 'Khalaq' is a portion.	वह आख़िरत की दुआ नहीं करते थे, क्योंकि न वह उसका इक़रार करते थे और न उस पर ईमान रखते थे। यहाँ उन्हें सिर्फ़ दुनिया माँगने से रोका गया है। यह मुमानअत उनके अमल की ख़बर के अंदाज़ में बयान की गई है।" यह भी मुमकिन है कि यह वईद उन मोमिनीन के बारे में हो जिनकी दुआ सिर्फ़ दुनिया तक महदूद हो। ऐसे लोगों के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा, क्योंकि वह आख़िरत की दुआ ही नहीं करते। "ख़लाक़" का मअनी "हिस्सा" है।"
And there are others who say, 'Our Lord, give us good in this world, and good in the Next World, and safeguard us from the punishment of the Fire. [2:201]	"और कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं: 'ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई अता फ़रमा, और आख़िरत में भी भलाई अता फ़रमा, और हमें आग के अज़ाब से बचा।'" [अल-बक़रह: 201]
The 'others' referred to here are the Muslims who ask for the good of this world and the Next World. There is disagreement about exactly what the two kinds of good	"यहाँ "दूसरे लोग" से मुराद मुसलमान हैं, जो दुनिया और आख़िरत दोनों की भलाई माँगते हैं। दोनों क़िस्म की भलाई से मुराद क्या है, इस बारे में इख़्तिलाफ़ है और इसके मुतअल्लिक़ बहुत सी बातें

entail and there are many things said about this. It is related from 'Ali ibn Abi Talib that the good in this world is a good woman and in the Next World it is the houris, and the 'punishment of the Fire' refers to a bad woman. This, however, is unlikely and is not a sound transmission from 'Ali because the Fire is, in reality, a burning fire and interpreting it to be a woman would only be metaphorical.	बयान की गई हैं। हज़रत अली बिन अबी तालिब से रिवायत किया गया है कि दुनिया की भलाई से मुराद नेक औरत है, और आख़िरत की भलाई से मुराद हूरें हैं, जबकि "आग के अज़ाब" से मुराद बुरी औरत है। लेकिन यह क़ौल बईद मालूम होता है, और हज़रत अली से इसकी रिवायत सहीह नहीं है, क्योंकि "आग" हक़ीक़त में जलाने वाली आग है, और उसे औरत के मअनी में लेना सिर्फ़ मजाज़ी मअनी होगा।"
Qatadah said the good of this ephemeral world takes the form of health and adequate wealth. Al-Hasan said that the good of this world is knowledge and worship. Other things are said. But what most of the people of knowledge believe is that what is meant by the two kinds of good are the blessings of this world and the Next World. This is sound and the expression entails all of that because the word 'good' in both cases in	"क़तादा ने कहा है कि इस फ़ानी दुनिया की भलाई सेहत और बक़दर-ए-किफ़ायत माल है। हसन बसरी ने कहा कि दुनिया की भलाई इल्म और इबादत है। इसके अलावा भी कई अक़्वाल बयान किए गए हैं। लेकिन अकसर अहल-ए-इल्म के नज़दीक दोनों भलाईयों से मुराद दुनिया और आख़िरत की तमाम नेमतें हैं। यही बात ज़्यादा सहीह है, क्योंकि दुआ में दोनों जगह "भलाई" का लफ़्ज़ नकरा आया है, इसलिए यह हर क़िस्म की भलाई को शामिल

the supplication has no definite article and so it can be applied to all sorts of good. The good of the Next World is the Garden by consensus. It is also said that it does not mean one particular good, but rather 'Give us the good of this world,'	है। आख़िरत की भलाई से मुराद बिल-इत्तिफ़ाक़ जन्नत है। यह भी कहा गया है कि इससे कोई एक ख़ास भलाई मुराद नहीं, बल्कि मअनी यह है: "हमें दुनिया की हर भलाई अता फ़रमा।"
and safeguard us from the punishment of the Fire.'	"और हमें आग के अज़ाब से बचा।"
What is meant here is a supplication that the person concerned will not enter the Fire because of his acts of disobedience and that he should be brought out of it by intercession. It is possible that it is a supplication confirming the request to enter the Garden so that it expresses the desire for salvation and success on both fronts. It is as what one of the Companions said to the Prophet, 'I say in my supplication, "O Allah, make me enter the Garden and protect me from the Fire." I do not know what it is that you and Muadh mumble.' The	"इससे मुराद यह दुआ है कि आदमी अपनी नाफ़रमानियों की वजह से जहन्नम में दाख़िल न किया जाए, और अगर दाख़िल हो तो शफ़ाअत के ज़रिये उससे निकाल लिया जाए। यह भी मुमकिन है कि यह दुआ जन्नत में दाख़िले की दरख़्वास्त की ताकीद हो, ताकि इसमें दोनों पहलुओं से नजात और कामयाबी की ख़्वाहिश जमा हो जाए। यह उसी तरह है जैसे एक सहाबी ने नबी से कहा: "मैं अपनी दुआ में यह कहता हूँ: 'ऐ अल्लाह! मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा और जहन्नम से बचा ले।' मैं नहीं जानता कि आप और मुआज़ क्या आहिस्ता आहिस्ता पढ़ते

Messenger of Allah said to him, 'We say that in a low voice.' Abu Dawud transmitted it in his Sunan as did Ibn Majah.	रहते हैं।" रसूलुल्लाह ने उनसे फ़रमाया: "हम भी यही आहिस्ता आवाज़ में कहते हैं।" इसे अबू दाऊद ने अपनी सुनन में रिवायत किया है, और इब्न माजह ने भी।"
This ayah is a comprehensive supplication, asking for both this world and the Next. Anas was asked, 'Make supplication for us.' He said, 'Give them good in this world and good in the Next World and protect them from the punishment of the Fire.' They said, 'More.' He said, 'What more do you want? I have asked for this world and the Next World!' We find in the Sahiḥ collections that Anas is reported as saying that the Prophet frequently used this supplication: 'Give them good in this world and good in the Next World and protect them from the punishment of the Fire.' Anas used to use this	"यह आयत एक जामे दुआ है, जिसमें दुनिया और आख़िरत दोनों की भलाई माँगी गई है। हज़रत अनस से कहा गया: "हमारे लिए दुआ कीजिए।" उन्होंने फ़रमाया: "अल्लाह उन्हें दुनिया में भलाई अता फ़रमाए, आख़िरत में भलाई अता फ़रमाए, और उन्हें आग के अज़ाब से बचाए।" लोगों ने कहा: "इससे ज़्यादा दुआ कीजिए।" उन्होंने फ़रमाया: "तुम और क्या चाहते हो? मैंने तो दुनिया और आख़िरत दोनों की भलाई माँग ली है!" सहीहैन में हज़रत अनस से रिवायत है कि नबी बकसरत यह दुआ फ़रमाया करते थे: "ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता फ़रमा, आख़िरत में भलाई अता फ़रमा, और

supplication regularly. It is reported that while ‘Umar was doing ṭawaf, he said, ‘Our Lord, give us good in this world and good in the Next World and protect us from the punishment of the Fire,’ and that he said nothing else. Abu ‘Ubayd mentioned this. Ibn Jurayj said that he heard that the most frequent supplication of the Muslim when standing at ‘Arafat should be: ‘Our Lord, give us good in this world and good in the Next World and protect us from the punishment of the Fire.’	हमें आग के अज़ाब से बचा।” हज़रत अनस ख़ुद भी इस दुआ को कसरत से पढ़ा करते थे। रिवायत है कि हज़रत उमर तवाफ़ करते हुए यह दुआ पढ़ते थे: “ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता फ़रमा, आख़िरत में भलाई अता फ़रमा, और हमें आग के अज़ाब से बचा।” और इसके अलावा कुछ नहीं कहते थे। अबू उबैद ने यह रिवायत ज़िक्र की है। इब्न जुरैज ने कहा है कि उन्हें यह बात पहुँची है कि अरफ़ात में वुक़ूफ़ के वक़्त मुसलमान की सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली दुआ यह होनी चाहिए: “ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता फ़रमा, आख़िरत में भलाई अता फ़रमा, और हमें आग के अज़ाब से बचा।”
Ibn ‘Abbas said, ‘There is an angel who has been standing at the [Yemeni] Corner since Allah created the heavens and the earth, saying, ‘Amen.’ Therefore say: “Our Lord, give us good in this world and good	"इब्न अब्बास ने फ़रमाया: “जब से अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है, एक फ़रिश्ता रुक्न-ए-यमानी के पास खड़ा ‘आमीन’ कहता रहता है। लिहाज़ा तुम यह दुआ पढ़ा करो: ‘ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता

in the Next World and protect us from the punishment of the Fire." 'Ata' ibn Abi Rabah was asked about the Yemeni corner while he was doing tawaf of the House and he said, 'Abu Hurayrah related to me that the Prophet said, "Seventy angels have been entrusted to it. If someone says, 'O Allah, I ask You for pardon and well-being in this world and the Next! Our Lord, give us good in this world and good in the Next World and protect us from the punishment of the Fire,' they say, 'Amen.'"' Ibn Majah transmitted it in the Sunan.	फ़रमा, आख़िरत में भलाई अता फ़रमा, और हमें आग के अज़ाब से बचा।'" अता बिन अबी रबाह से, जबकि वह बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे थे, रुक्न-ए-यमानी के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा: "अबू हुरैरह ने मुझे रिवायत की कि नबी ने फ़रमाया: 'सत्तर फ़रिश्ते उस पर मुक़र्रर किए गए हैं। अगर कोई शख़्स यह कहे: "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया व आख़िरत में माफ़ी और आफ़ियत का सवाल करता हूँ। ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता फ़रमा, आख़िरत में भलाई अता फ़रमा, और हमें आग के अज़ाब से बचा", तो वह फ़रिश्ते "आमीन" कहते हैं।'" इसे इब्न माजह ने अपनी सुनन में रिवायत किया है।"
They will have a good share from what they have earned. Allah is swift at reckoning. [2:202]	"यही लोग हैं जिनके लिए उनके आमाल में से हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।" [अल-बक़रह: 202]
They will have a good share	"यही लोग हैं जिनके लिए उनके आमाल में से हिस्सा है जो उन्होंने

from what they have earned.	कमाया।"
This refers to the second group, the party of Islam, and informs them that they will have the reward for the hajj or the reward for the supplication. A believer's supplication is worship in itself. It is also said that the word 'they' refers to both groups. The believer will receive the reward for his action and his supplication, and the unbeliever will have the punishment for his shirk and his confining his outlook to this world. Evidence for that are the words of Allah: 'Allah have ranks according to what they did.'	"इससे मुराद दूसरा गिरोह है, यानी अहल-ए-इस्लाम, और उन्हें यह ख़बर दी जा रही है कि उन्हें अपने हज्ज का या अपनी दुआ का अज्र मिलेगा। मोमिन की दुआ ख़ुद भी एक इबादत है। यह भी कहा गया है कि यहाँ "यही लोग" से मुराद दोनों गिरोह हैं। पस मोमिन को अपने अमल और दुआ दोनों का सवाब मिलेगा, जबकि काफ़िर को अपने शिर्क और सिर्फ़ दुनिया तक अपनी नज़र महदूद रखने की सज़ा मिलेगी। इसकी दलील अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: "लोगों के लिए उनके आमाल के मुताबिक़ दर्जात हैं।"
Allah is swift at reckoning.	"और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।"
'Swift' (sari) comes from the verb saria, meaning 'to hasten.' 'Hisab' (reckoning) is a verbal noun like muhasabah. Hisab' means the same as what is counted (muḥasab) and so what is counted constitutes the	""सरीअ" (सरीअ) फ़ेअल "सरिअ" से निकला है, जिसका मअनी है "जल्दी करना"। "हिसाब" एक मसदर है, जैसे "मुहासबह"। "हिसाब" का इतलाक़ उस चीज़ पर भी होता है जिसे शुमार किया जाए (मुहासब),

reckoning. Hasab, meaning noble descent, is what a man counts as one of his glories. One can say that his glory (hasab) is his din or his wealth. In a hadith we find, 'Hasab is wealth and nobility is piety.' Samurah ibn Jundub related it. Ibn Majah transmitted it. It is also found in ash-Shihab.	लिहाज़ा जो चीज़ गिनी जाए वही हिसाब कहलाती है। "हसब" बमअनी शराफ़त-ए-नसब, उस चीज़ को कहते हैं जिसे आदमी अपनी बुज़ुर्गी और फ़ख़्र में शुमार करे। कहा जाता है कि आदमी का हसब उसका दीन या उसका माल है। एक हदीस में है: "हसब माल है और अस्ल बुज़ुर्गी तक़्वा है।" इसे समुरह बिन जुंदुब ने रिवायत किया है। इब्न माजह ने इसे नक़्ल किया है, और यह "अश-शिहाब" में भी मज़कूर है।"
The ayah means that Allah is swift in calculating the reckoning and has no need of counting, addition or the action of thought as a human reckoner would. That is why He says: 'We are sufficient as Reckoner.' The Messenger of Allah said, 'O Allah, Sender down of the Book, Swift at Reckoning.' Allah knows His slaves and what they do and has no need of memory or reflection since He knows everything to be reckoned for	"आयत का मतलब यह है कि अल्लाह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है और उसे गिनती, जमा करने या सोच-विचार की ज़रूरत नहीं, जैसी किसी इंसानी हिसाब लेने वाले को होती है। इसी लिए वह फ़रमाता है: 'हम हिसाब लेने के लिए काफ़ी हैं।' रसूलुल्लाह ने फ़रमाया: 'ऐ अल्लाह! किताब नाज़िल करने वाले, जल्द हिसाब लेने वाले।' अल्लाह अपने बंदों को और उनके आमाल को जानता है, और उसे याद रखने या ग़ौर-ओ-फ़िक्र की ज़रूरत

or against them. The purpose of reckoning is ascertaining the truth.	नहीं, क्योंकि वह हर उस चीज़ को जानता है जिसका हिसाब उनके हक़ में या उनके ख़िलाफ़ लिया जाएगा। हिसाब का मक़सद हक़ीक़त को ज़ाहिर करना है।"
It is said that the phrase means that Allah is swift at repaying people for their actions. It is said that it means that one thing does not distract Him from other things. He reckons them all at the same time as we find in His words: 'Your creation and rising is only like that of a single self. Al-Hasan said, 'His reckoning is swifter than the blink of an eye.' One report says: 'Allah reckons in the amount of time it takes to milk a sheep.' It is said that when He reckons one person, He reckons all creation. 'Ali was asked, 'How can Allah reckon all His slaves in a single day?' He replied, 'In the same way that He provides for them in a single day!' Another possible meaning of reckoning is that Allah acquaints His slaves with	"यह भी कहा गया है कि इस जुमले का मतलब यह है कि अल्लाह लोगों को उनके आमाल का बदला देने में बहुत जल्दी करने वाला है। यह भी कहा गया है कि एक काम उसे दूसरे काम से ग़ाफ़िल नहीं करता। वह सब का हिसाब एक ही वक़्त में लेगा, जैसा कि अल्लाह तआला के इस फ़रमान में है: "तुम्हारा पैदा करना और दोबारा उठाना सिर्फ़ एक जान की तरह है।" हसन बसरी ने कहा: "अल्लाह का हिसाब आँख झपकने से भी ज़्यादा तेज़ है।" एक रिवायत में है: "अल्लाह उतने वक़्त में हिसाब लेगा जितने में एक बकरी दुही जाती है।" यह भी कहा गया है कि जब अल्लाह एक शख़्स का हिसाब लेगा तो उसी वक़्त तमाम मख़्लूक़ का हिसाब भी

the exact repayment they will receive for their actions and reminds them of what they forgot as is seen in His words: 'On the Day Allah raises up all of them together, He will inform them of what they did. Allah has recorded it while they have forgotten it.' It is said that it means that He is swift at bringing about the Day of Reckoning and so the meaning of the ayah is to warn about the Day of Rising.	ले लेगा। हज़रत अली से पूछा गया: "अल्लाह एक ही दिन में तमाम बंदों का हिसाब कैसे लेगा?" उन्होंने जवाब दिया: "जिस तरह वह एक ही दिन में सब को रिज़्क़ देता है!" "हिसाब" का एक और मअनी यह भी हो सकता है कि अल्लाह अपने बंदों को उनके आमाल के बदले की पूरी हक़ीक़त से आगाह करेगा और उन्हें वह चीज़ें याद दिलाएगा जिन्हें वह भूल चुके थे, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा, फिर उन्हें बताएगा जो कुछ उन्होंने किया था। अल्लाह ने उसे महफ़ूज़ रखा हुआ है जबकि वह उसे भूल चुके हैं।" यह भी कहा गया है कि इसका मतलब यह है कि अल्लाह यौम-ए-हिसाब को जल्द ले आने वाला है, लिहाज़ा आयत का मक़सद क़यामत के दिन से ख़बरदार करना है।"
All of these interpretations are possible. The slave of Allah should make the reckoning light for himself through	"इन तमाम तफ़्सीरों का एहतिमाल मौजूद है। अल्लाह के बंदे को चाहिए कि वह नेक आमाल के ज़रिये अपने लिए हिसाब को हल्का कर ले। जिस

righteous actions. The reckoning will be lighter in the Next World for the one who calls himself to account in this world.	शख़्स ने दुनिया में अपना मुहासबा किया होगा, आख़िरत में उसका हिसाब ज़्यादा आसान होगा।"
Ibn 'Abbas said, 'The words "They will have a good share..." refer to a man who uses money to perform hajj for someone else and has a reward.' A hadith is reported about that in which a man said, 'O Messenger of Allah, my father died without performing hajj. Can I perform hajj on his behalf?' The Prophet answered, 'If your father had a debt, would you not pay it?' He answered, 'Yes.' He said, 'A debt owed to Allah is more entitled to receive settlement.' He asked, 'Will I have a reward?' and then Allah revealed: 'They will have a good share from what they have earned.' So the meaning is that the reward for the hajj for the dead person is shared between him and the dead person.	"इब्न अब्बास ने फ़रमाया: "'यही लोग हैं जिनके लिए उनके आमाल में से हिस्सा है' से मुराद वह शख़्स है जो किसी दूसरे की तरफ़ से हज्ज करने के लिए माल ख़र्च करता है, उसके लिए भी अज्र है।" इस बारे में एक हदीस मरवी है कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह! मेरे वालिद का इंतिक़ाल हो गया और उन्होंने हज्ज नहीं किया था। क्या मैं उनकी तरफ़ से हज्ज कर सकता हूँ?" नबी ने फ़रमाया: "अगर तुम्हारे वालिद पर क़र्ज़ होता तो क्या तुम उसे अदा न करते?" उसने जवाब दिया: "क्यों नहीं!" आप ने फ़रमाया: "अल्लाह का क़र्ज़ ज़्यादा हक़ रखता है कि उसे अदा किया जाए।" उस शख़्स ने पूछा: "क्या मुझे भी अज्र मिलेगा?"

	फिर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: "'यही लोग हैं जिनके लिए उनके आमाल में से हिस्सा है जो उन्होंने कमाया।'" पस इसका मतलब यह है कि मय्यित की तरफ़ से किए गए हज्ज का अज्र उस शख़्स और मय्यित दोनों के दरमियान मुश्तरक होता है।"
Abu Abdullah Muḥammad ibn Khuwayzimandād stated in al-Ahkam, 'The position of Ibn 'Abbas is like that of Malik because the final position of Malik is that the one for whom the hajj is done has the reward for paying for it and the hajj belongs to the one who does it. So it is as if the person doing the hajj has the reward of his body and actions and the one who pays for it has the reward of his spending. That is why we say that there is no difference in this ruling between the one who has performed the obligatory hajj for himself or one who has not, because in the case of actions in which a proxy is permitted, the ruling	"अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन ख़ुवैज़मंदाद ने "अल-अहकाम" में बयान किया है: "इब्न अब्बास का मौक़िफ़ इमाम मालिक के मौक़िफ़ के मुशाबिह है, क्योंकि इमाम मालिक का आख़िरी क़ौल यह है कि जिस शख़्स की तरफ़ से हज्ज किया जाए, उसे अपने ख़र्च करने का अज्र मिलता है, जबकि हज्ज उस शख़्स का होता है जो उसे अदा करता है। गोया हज्ज अदा करने वाले को अपने जिस्म और आमाल का अज्र मिलता है, और ख़र्च करने वाले को अपने माल ख़र्च करने का अज्र हासिल होता है। इसी लिए हम कहते हैं कि इस हुक्म में उस शख़्स के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं जो अपना फ़र्ज़ हज्ज पहले अदा कर चुका हो या न किया हो, क्योंकि

of the proxy is the same for someone who has performed it before or has not performed it. This is true of actions which are for this world and those which are for the Next World. Do you not see that someone who owes zakat, kaffarah or the like can perform that on behalf of someone else, even if he has not performed it for himself? The same is true of someone who does not attend to his best interests in this world. He can, nonetheless, act as proxy for someone else in such things as that and undertake that for someone else even if he has not undertaken it for himself. He can carry out a marriage for someone else even if he himself has not married.’	जिन आमाल में नियाबत जायज़ हो, उनमें नायब का हुक्म उस शख़्स के लिए बराबर होता है चाहे उसने वह अमल पहले किया हो या न किया हो। यह बात दुनियावी और उख़रवी दोनों क़िस्म के आमाल में दुरुस्त है। क्या तुम नहीं देखते कि जिस शख़्स पर ज़कात, कफ़्फ़ारा या उस जैसी कोई चीज़ वाजिब हो, वह किसी दूसरे की तरफ़ से उसे अदा कर सकता है, अगरचे उसने ख़ुद अपनी तरफ़ से वह अदा न की हो? इसी तरह वह शख़्स जो अपनी दुनियावी मस्लहतों का ख़ुद इंतिज़ाम न करता हो, फिर भी वह दूसरों की तरफ़ से ऐसे मामलात में वकील बन सकता है और उनके लिए वह उमूर अंजाम दे सकता है, अगरचे उसने ख़ुद अपने लिए वह काम न किया हो। मिसाल के तौर पर वह किसी दूसरे का निकाह करवा सकता है, अगरचे उसने ख़ुद अभी तक निकाह न किया हो।”
Remember Allah on the designated days. Those who	“और अल्लाह को गिनती के चंद दिनों में याद करो। फिर जो शख़्स दो

hurry on in two days have done no wrong, and those who stay another day have done no wrong – those of them who are fearful of Allah. Be fearful of Allah. And know that you will be gathered back to Him. [2:203]	दिन में जल्दी रवाना हो जाए उस पर कोई गुनाह नहीं, और जो ठहर जाए उस पर भी कोई गुनाह नहीं — यह उस शख़्स के लिए है जो अल्लाह से डरे। और अल्लाह से डरते रहो, और जान लो कि तुम सब उसी की तरफ़ जमा किए जाओगे।" [अल-बक़रह: 203]
Remember Allah on the designated days.	"और अल्लाह को गिनती के चंद दिनों में याद करो।"
There is no disagreement among scholars that the 'designated days' here refer to the days of Mina. They are the days of tashriq. These three days have various names. They are the days of the stoning of the jamrahs which takes place over three days but then it is permitted for someone on hajj to hurry and do it in two days after the Day of Sacrifice. Ath-Thalabi and Ibrahim [an-Nakhai] said that the 'designated days' are the 'ushar (10th, 11th and 12th) and the 'specific days' are the days of sacrifice. Makki and al-	"इस बात पर उलमा के दरमियान कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि यहाँ "गिनती के चंद दिनों" से मुराद मिना के दिन हैं। यही अय्याम-ए-तशरीक़ हैं। इन तीन दिनों के मुख़्तलिफ़ नाम हैं। यह जमरात की रमी के दिन हैं, क्योंकि रमी तीन दिन तक की जाती है, अलबत्ता यौम-ए-नहर के बाद हाजी के लिए यह इजाज़त है कि वह दो दिन में जल्दी करके वापस चला जाए। सअलबी और इब्राहीम नख़ई ने कहा है कि "गिनती के चंद दिन" से मुराद अशरा (यानी 10, 11 और 12 ज़ुलहिज्जह) हैं, जबकि "मख़्सूस दिन"

Mahdawi also said that the 'designated days' are the 'ushar.	से मुराद क़ुर्बानी के दिन हैं। मक्की और महदवी ने भी कहा है कि "गिनती के चंद दिन" से मुराद अशरा ही हैं।"
Allah commands His slaves to remember Him on designated days which are the three days after the Day of Sacrifice. The Day of Sacrifice itself is not one of them by the consensus of the people that no one can hurry and leave on the second day. If the Day of Sacrifice had been one of the designated days, then it would be permitted for those who wish to hurry on to leave on the Day of Nafr because he has taken two of the designated days. Ad-Daraqutni, at-Tirmidhi and others transmitted from 'Abd ar-Rahman ibn Yamar ad-Dili that some one of the people of Najd went to the Messenger of Allah at 'Arafah to question him and he commanded someone to call out: 'The hajj is 'Arafah. Whoever comes on	"अल्लाह तआला अपने बंदों को हुक्म देता है कि वह मुक़र्रर दिनों में उसका ज़िक्र करें, और यह यौम-ए-नहर के बाद के तीन दिन हैं। यौम-ए-नहर ख़ुद उन दिनों में शामिल नहीं, क्योंकि इस बात पर अहल-ए-इल्म का इज्मा है कि कोई शख़्स दूसरे दिन ही जल्दी रवाना नहीं हो सकता। अगर यौम-ए-नहर भी उन "गिनती के दिनों" में शामिल होता तो जो शख़्स जल्दी करना चाहता, उसके लिए यौम-ए-नफ़्र ही में रवाना होना जायज़ होता, क्योंकि उस सूरत में वह दो मुक़र्रर दिन पूरे कर चुका होता। दारक़ुतनी, तिर्मिज़ी और दीगर मुहद्दिसीन ने अब्दुर्रहमान बिन यअमर दैली से रिवायत किया है कि नज्द के कुछ लोग रसूलुल्लाह के पास अरफ़ात में सवाल करने आए। आप ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि

the night of Jam before dawn has caught it. The days at Mina are three. There is no sin for someone who hurries on after two and there is no sin for someone who stays longer.' It means anyone who hurries on after two of the days at Mina has to stay at Mina for three days including the Day of Sacrifice. His total stoning consists of forty-nine pebbles and he does not have to stone on the third day. Anyone who doesn't leave until the end of the third day stays at Mina for four days because of the Day of Sacrifice and does the full amount of stoning as will be explained. Part of the evidence for staying three days at Mina, as we mentioned, is what al-Arji said:	वह ऐलान करे: "हज्ज अरफ़ह है। जो शख़्स जमअ (मुज़दलिफ़ह) की रात तुलूअ-ए-फ़ज्र से पहले पहुँच जाए उसने हज्ज पा लिया। मिना के दिन तीन हैं। जो शख़्स दो दिन के बाद जल्दी रवाना हो जाए उस पर कोई गुनाह नहीं, और जो ज़्यादा ठहरे उस पर भी कोई गुनाह नहीं।" इसका मतलब यह है कि जो शख़्स मिना के दो दिन गुज़ारने के बाद जल्दी रवाना हो, उसे यौम-ए-नहर समेत तीन दिन मिना में रहना होगा। उसकी कुल रमी उनचास कंकड़ियों की होगी, और तीसरे दिन की रमी उस पर लाज़िम नहीं होगी। और जो शख़्स तीसरे दिन के इख़्तिताम तक न जाए, वह यौम-ए-नहर समेत चार दिन मिना में क़ियाम करेगा, और मुकम्मल रमी अदा करेगा, जैसा कि आगे तफ़्सील आएगी। जैसा कि हमने ज़िक्र किया, मिना में तीन दिन क़ियाम की दलीलों में से एक वह शेर भी है जो अरजी ने कहा है:"

It was only three days at Mina	"वह मिना में सिर्फ़ तीन दिन थे।"
before Nafr parted us.	"इससे पहले कि यौम-ए-नफ़्र ने हमें जुदा कर दिया।"
The days of stoning are 'designated' and the days of sacrifice are 'specific'. Nafi related that Ibn 'Umar said that the 'designated' days and 'specific' days together add up to four days: the Day of Sacrifice and the three days after it. The Day of Sacrifice is 'specific', and not 'designated'; the next two days are both 'specific' and 'designated', and the fourth day is 'designated' and not 'specific'. This is the position in the school of Malik and others.	"रमी के दिनों को "गिनती के दिन" कहा जाता है, जबकि क़ुर्बानी के दिन "मख़्सूस दिन" हैं। नाफ़े ने रिवायत किया है कि इब्न उमर ने फ़रमाया: "गिनती के दिन" और "मख़्सूस दिन" मिल कर चार दिन बनते हैं: यौम-ए-नहर और उसके बाद के तीन दिन। यौम-ए-नहर "मख़्सूस" है लेकिन "गिनती के दिनों" में शामिल नहीं। उसके बाद के दो दिन ऐसे हैं जो "मख़्सूस" भी हैं और "गिनती के दिन" भी। जबकि चौथा दिन "गिनती के दिनों" में शामिल है मगर "मख़्सूस" नहीं। इमाम मालिक और दीगर अहल-ए-इल्म के मज़हब में यही मौक़िफ़ है।"
That is the case because the first day, the Day of Sacrifice, is not one of the days particular to Mina nor one of those which	"इसकी वजह यह है कि पहला दिन, यानी यौम-ए-नहर, न तो मिना के उन ख़ास दिनों में शामिल है और न उन

the Prophet specified when he said, 'The days of Mina are three.' So it is 'specific' because Allah says: 'Invoke Allah's name on specific days over livestock He has provided for them.' There is no disagreement that what is meant is the Sacrifice, and the Sacrifice is on the first day. It is the day of Adha and the two days after it. The consensus of our scholars is that there should be no sacrifice on the fourth day and so the fourth day is not included in His word, 'specific' because there is no sacrifice on it. The stoning on it is 'designated' on account of the stoning, even though it is not 'specific' because of the lack of sacrificing on it. Ibn al- Arabi said, 'The truth is that the Day of Sacrifice is 'designated' for stoning and 'specific' for slaughtering, but our scholars say that it is not included in His words, "Remember Allah on designated days."	दिनों में से है जिन्हें नबी ने अपने इस फ़रमान में मुतअय्यन फ़रमाया: "मिना के दिन तीन हैं।" अलबत्ता वह "मख़्सूस" इस लिए है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और मुक़र्रर दिनों में उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लो जो उसने उन्हें अता किए हैं।" इस बात पर कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि इससे मुराद क़ुर्बानी है, और क़ुर्बानी पहले दिन होती है। यह यौम-ए-अज़्हा और उसके बाद के दो दिन हैं। हमारे उलमा का इज्मा है कि चौथे दिन क़ुर्बानी नहीं की जाती, लिहाज़ा चौथा दिन अल्लाह तआला के फ़रमान "मख़्सूस दिन" में शामिल नहीं, क्योंकि उस दिन क़ुर्बानी नहीं होती। अलबत्ता उस दिन रमी होने की वजह से वह "गिनती के दिनों" में शामिल है, अगरचे क़ुर्बानी न होने की वजह से "मख़्सूस" नहीं है। इब्न अल-अरबी ने कहा: "हक़ीक़त यह है कि यौम-ए-नहर रमी के एतिबार से 'गिनती के दिनों' में शामिल है, और क़ुर्बानी के एतिबार से 'मख़्सूस दिनों' में शामिल है, लेकिन

	हमारे उलमा कहते हैं कि वह अल्लाह तआला के इस फ़रमान 'और अल्लाह को गिनती के चंद दिनों में याद करो' में शामिल नहीं है।"
Abu anifah and ash-Shafi'i said that the 'specific days' are the ten from the 1st of Dhu-l-Hijjah to the Day of Sacrifice. Their position on it does not vary and they related that from Ibn 'Abbas. At-Tahawi related from Abu Yusuf that the 'specific days' are the days of sacrifice and that Abu Yusuf said, 'That is related from 'Umar and 'Ali and I believe it because Allah says: "Invoke Allah's name on specific days over livestock He has provided for them."' Al-Karkhi related from Muhammad ibn al-Hasan that the 'specific days' are the three days of Sacrifice: Adha and the two days after it. At-Tabari said, 'According to the view of Abu Yusuf and Muhammad there is no difference between the "specific" and "designated"	"इमाम अबू हनीफ़ह और इमाम शाफ़ई ने कहा है कि "मख़्सूस दिन" ज़ुलहिज्जह की पहली तारीख़ से लेकर यौम-ए-नहर तक के दस दिन हैं। इस बारे में उनका मौक़िफ़ एक ही है, और उन्होंने यह क़ौल इब्न अब्बास से रिवायत किया है। तहावी ने अबू यूसुफ़ से रिवायत किया है कि "मख़्सूस दिन" क़ुर्बानी के दिन हैं। अबू यूसुफ़ ने कहा: "यही क़ौल हज़रत उमर और हज़रत अली से भी मरवी है, और मैं इसी को इख़्तियार करता हूँ, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'और मुक़र्रर दिनों में उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लो जो उसने उन्हें अता किए हैं।'" करखी ने मुहम्मद बिन हसन से रिवायत किया है कि "मख़्सूस दिन" क़ुर्बानी के तीन दिन हैं: यौम-ए-अज़्हा और उसके बाद के दो दिन। तबरी ने कहा: "अबू यूसुफ़ और

because the “designated days” mentioned in the Qur’ān are undisputedly the days of tashriq, and no one doubts that the “designated days” do not include the ten days, because Allah says: “Those who hurry on in two days have done no wrong.” The “ten” do not have a ruling connected to two rather than three. It is related from Ibn ‘Abbas that the ‘specific’ are the ten and the ‘designated’ are the days of tashriq. That is the majority position.	मुहम्मद के क़ौल के मुताबिक़ 'मख़्सूस' और 'गिनती के दिनों' में कोई फ़र्क़ नहीं, क्योंकि क़ुरआन में मज़कूर 'गिनती के दिन' बिला इख़्तिलाफ़ अय्याम-ए-तशरीक़ हैं, और इसमें किसी को शक नहीं कि 'गिनती के दिन' से मुराद दस दिन नहीं हैं, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'जो शख़्स दो दिन में जल्दी रवाना हो जाए उस पर कोई गुनाह नहीं।' जबकि उन दस दिनों का दो या तीन दिन के साथ कोई ऐसा हुक्म मुतअल्लिक़ नहीं।" इब्न अब्बास से मरवी है कि "मख़्सूस दिन" से मुराद दस दिन हैं और "गिनती के दिन" से मुराद अय्याम-ए-तशरीक़ हैं। यही जमहूर का मौक़िफ़ है।"
Ibn Zayd said that the ‘specific days’ are the ten days of Dhu-l-Hijjah and the days of tashriq. This is unlikely based on what we have mentioned and the literal meaning of the ayah refutes it. Allah assigned remembrance in the designated and specific days which	"इब्न ज़ैद ने कहा है कि "मख़्सूस दिन" से मुराद जुलहिज्जह के दस दिन और अय्याम-ए-तशरीक़ हैं। लेकिन जो बातें हम ज़िक्र कर चुके हैं उनकी बिना पर यह क़ौल बईद मालूम होता है, और आयत के ज़ाहिरी मअनी भी इसकी तरदीद करते हैं।

indicates something different to what he says, and so there is no need to deal with it.	अल्लाह तआला ने "गिनती के दिनों" और "मख़्सूस दिनों" दोनों में ज़िक्र का हुक्म दिया है, जो इस बात पर दलालत करता है कि दोनों से मुराद अलग-अलग दिन हैं, न कि वही मअनी जो इब्न ज़ैद ने बयान किया है। लिहाज़ा इस क़ौल पर मज़ीद गुफ़्तगू की ज़रूरत नहीं।"
There is no disagreement that the person addressed here is the person on hajj who says the takbir while stoning the jamrahs, over the animals he intends to sacrifice during the specific days, and after the prayers without the talbiyah. Does it include other than those on hajj? The fuqaha' of all the regions and the famous Companions and Tabiun agree that everyone is meant to do the takbir, especially at the times of the prayer, and so it is recited, whether you pray alone or in a group, to imitate the Salaf. The Mukhtasar of Khalil states that women should not do it but the first position is better known	"इस बात पर कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि यहाँ ख़िताब हाजी से है, जो जमरात की रमी करते वक़्त तकबीर कहता है, उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लेता है जिन्हें वह मख़्सूस दिनों में क़ुर्बान करने का इरादा रखता है, और नमाज़ों के बाद तलबियह के बजाय तकबीर कहता है। क्या इस हुक्म में हाजियों के अलावा दूसरे लोग भी शामिल हैं? तमाम इलाक़ों के फ़ुक़हा, मशहूर सहाबा और ताबिईन इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हर शख़्स के लिए तकबीर कहना मशरूअ है, ख़ास तौर पर नमाज़ों के औक़ात में। लिहाज़ा ख़्वाह आदमी अकेले नमाज़ पढ़े या जमाअत के साथ, वह तकबीर कहे

since women follow the rules of ihram in the same way that men do and the Mudawwanah states that.	ताकि सलफ़ की पैरवी हो। मुख़्तसर-ए-ख़लील में मज़कूर है कि औरतें तकबीर न कहें, लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा मशहूर है, क्योंकि औरतें एहराम के अहकाम में मर्दों ही की तरह शामिल हैं, और मुदव्वनह में भी यही बात मज़कूर है।"
If someone forgets the takbir after the prayer and not much time has passed since he completed it, he should say it. If, however, a long time has passed, he owes nothing. Ibn al-Jallab said that. Malik is reported in the Mukhtasar as saying that you should say it as long as you are still sitting. If you rise before saying it you owe nothing. According to the Mudawwanah, Malik said that if the imam forgets the takbir and remembers soon after, he sits and says it, but if a long time has passed, he owes nothing. If he leaves without saying the takbir and the people are still sitting down, they say it.	"अगर कोई शख़्स नमाज़ के बाद तकबीर कहना भूल जाए और नमाज़ मुकम्मल होने के बाद ज़्यादा वक़्त न गुज़रा हो तो वह तकबीर कह ले। लेकिन अगर काफ़ी वक़्त गुज़र जाए तो उस पर कुछ लाज़िम नहीं। इब्न अल-जलाब ने यही बात बयान की है। मुख़्तसर में इमाम मालिक से मनक़ूल है कि जब तक आदमी अपनी जगह बैठा हो, वह तकबीर कह सकता है। अगर वह उठ जाए और तकबीर न कही हो तो फिर उस पर कुछ लाज़िम नहीं। मुदव्वनह के मुताबिक़ इमाम मालिक ने फ़रमाया: अगर इमाम तकब

Scholars disagree about the end of the time of saying the takbir. ‘Umar ibn al-Khattab, ‘Ali ibn Abi Talib and Ibn ‘Abbas said that it is said from the Subh prayer on the Day of ‘Arafah up until ‘Asr on the last of the days of tashriq. Ibn Masud and Abu Hanifah say that it is from the morning of the Day of ‘Arafah up until ‘Asr of the Day of Sacrifice. His two companions disagree and take the first position. So they agree about its beginning, but not its end. Malik says that the takbir should be said from Zuhr on the Day of Sacrifice to the Subh prayer on the last of the days of tashriq. Ash-Shafi‘i agrees with that, and it is also the position of Ibn ‘Umar and another position of Ibn ‘Abbas. Zayd ibn Thābit said that the takbir should be said from Zuhr on the Day of Sacrifice to the days of tashriq.	"उलमा के दरमियान तकबीर के वक़्त के इख़्तिताम के बारे में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब, हज़रत अली बिन अबी तालिब और इब्न अब्बास ने कहा है कि तकबीर यौम-ए-अरफ़ह की फ़ज्र की नमाज़ से शुरू होकर अय्याम-ए-तशरीक़ के आख़िरी दिन की अस्र तक कही जाएगी। इब्न मसऊद और इमाम अबू हनीफ़ह कहते हैं कि यह यौम-ए-अरफ़ह की सुबह से लेकर यौम-ए-नहर की अस्र तक है। अलबत्ता इमाम अबू हनीफ़ह के दोनों शागिर्द इससे इख़्तिलाफ़ करते हैं और पहले क़ौल को इख़्तियार करते हैं। इस तरह आग़ाज़ के बारे में तो उनका इत्तिफ़ाक़ है, लेकिन इख़्तिताम के बारे में इख़्तिलाफ़ है। इमाम मालिक कहते हैं कि तकबीर यौम-ए-नहर की ज़ुहर से शुरू होकर अय्याम-ए-तशरीक़ के आख़िरी दिन की फ़ज्र तक कही जाएगी। इमाम शाफ़ई भी इसी के क़ाइल हैं, और यही क़ौल इब्न उमर और इब्न अब्बास से एक दूसरी रिवायत में

	मनक़ूल है। ज़ैद बिन साबित ने कहा है कि तकबीर यौम-ए-नहर की जुहर से लेकर अय्याम-ए-तशरीक़ तक कही जाएगी।"
Ibn al-Arabi says that those who say that the takbir is said from the Day of 'Arafah and stopped at 'Asr on the Day of Sacrifice have abandoned the evident text because Allah says: 'on the designated days', which are three. Those people say that they say the takbir over two days and have therefore abandoned the literal text without any proof. As for those who say that it is said on the Day of 'Arafah and the days of tashriq, their argument is that Allah says: 'When you pour down from 'Arafat' and so 'Arafat is included in the days mentioned. So it would be valid for someone to say that the takbir should be said from Maghrib on the Day of 'Arafah because that is the time of	"इब्न अल-अरबी कहते हैं कि जो लोग यह कहते हैं कि तकबीर यौम-ए-अरफ़ह से शुरू होकर यौम-ए-नहर की अस्र पर ख़त्म हो जाती है, उन्होंने आयत के ज़ाहिर को छोड़ दिया है, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "गिनती के चंद दिनों में", और यह तीन दिन हैं। यह लोग दो दिन तक तकबीर कहने के क़ाइल हैं, इस तरह उन्होंने बिना किसी दलील के आयत के ज़ाहिरी मअनी को तर्क कर दिया। और जो लोग कहते हैं कि तकबीर यौम-ए-अरफ़ह और अय्याम-ए-तशरीक़ में कही जाएगी, उनकी दलील यह है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "फिर जब तुम अरफ़ात से रवाना हो", लिहाज़ा अरफ़ात भी उन मज़कूर दिनों में शामिल हो गया। इस बिना पर कोई शख़्स यह कह

pouring down. Doing it before that is not demanded by the literal wording of the ayah. It is obligatory from the Day of Tarwiyah, when one alights in Mina.	सकता है कि तकबीर यौम-ए-अरफ़ह के मग़रिब से शुरू होनी चाहिए, क्योंकि रवाना होने का वक़्त यही है। इससे पहले तकबीर कहना आयत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ से साबित नहीं होता। और यौम-ए-तरवियह से, जब हाजी मिना में क़ियाम करता है, तकबीर वाजिब हो जाती है।"
There is disagreement about the wording of the takbir. The well-known position in the school of Malik is that the takbir is said three times after each prayer. Ziyad ibn Ziyād related it from Malik. One transmission is that one says after the three takbirs: 'There is no god but Allah. Allah is greater and praise be to Allah.' (La ilaha illa'llah, wa-Allāhu akbar, wa li'llahi'l-ḥamd.) In the Mukhtasar Malik is reported as saying, 'Allah is greater. Allah is greater. There is no god but Allah and Allah is greater. Allah is greater and praise be to Allah.' ('Allahu	"तकबीर के अल्फ़ाज़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है। इमाम मालिक के मज़हब में मशहूर क़ौल यह है कि हर नमाज़ के बाद तीन मर्तबा तकबीर कही जाए। ज़ियाद बिन ज़ियाद ने यह रिवायत इमाम मालिक से नक़्ल की है। एक रिवायत में है कि तीन तकबीरों के बाद यह कहा जाए: "ला इलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, व लिल्लाहिल हम्द"यानी: "अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, और तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं।" मुख़्तसर में इमाम मालिक से यह अल्फ़ाज़ मनक़ूल हैं: "अल्लाहु

akbar. Allahu akbar. La ilaha illa'llah, wa-Allahu akbar. Allahu akbar, wa li'llahi'l-hamd.')	अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, व लिल्लाहिल हम्द" यानी: "अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, और तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं।"
Those who hurry on in two days have done no wrong,	"फिर जो शख़्स दो दिन में जल्दी रवाना हो जाए उस पर कोई गुनाह नहीं।"
Hurrying on is only permitted at the end of the second day. The same applies to the third day because the time of stoning during those days is after midday. All agree that on the Day of Sacrifice you only stone the Jamrat al-Aqabah because the Messenger of Allah did not stone the other jamrahs on the Day of Sacrifice. The time for stoning on that day is from sunrise to midday. They also agree that the time for stoning the jamrahs on the days of tashriq is from after midday up	"जल्दी रवाना होना सिर्फ़ दूसरे दिन के इख़्तिताम पर जायज़ है। यही हुक्म तीसरे दिन का भी है, क्योंकि उन दिनों में रमी का वक़्त ज़वाल के बाद होता है। इस बात पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि यौम-ए-नहर में सिर्फ़ जमरह-ए-अक़बह की रमी की जाती है, क्योंकि रसूलुल्लाह ने यौम-ए-नहर में दूसरे जमरात की रमी नहीं की थी। उस दिन रमी का वक़्त तुलूअ-ए-आफ़्ताब से लेकर ज़वाल तक है। इसी तरह इस बात पर भी इत्तिफ़ाक़

until sunset. They disagree about someone who stones the Jamrat al- Aqabah before dawn or after dawn but before sunrise. Malik, Abu Hanifah, Ahmad and Ishaq said that it is allowed if it was after dawn, but not before dawn.	है कि अय्याम-ए-तशरीक़ में जमरात की रमी का वक़्त ज़वाल के बाद से ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब तक है। अलबत्ता उस शख़्स के बारे में इख़्तिलाफ़ है जो जमरह-ए-अक़्बह की रमी फ़ज्र से पहले, या फ़ज्र के बाद मगर सूरज तुलूअ होने से पहले करे। इमाम मालिक, इमाम अबू हनीफ़ह, इमाम अहमद और इस्हाक कहते हैं कि अगर रमी फ़ज्र के बाद की जाए तो जायज़ है, लेकिन फ़ज्र से पहले जायज़ नहीं।"
Malik, Abu Hanifah, Ahmad and Ishaq said that it is permitted to stone the jamrahs after dawn, but before sunrise. Malik said, 'It has not reached us that the Messenger of Allah allowed anyone to stone before dawn.' It is not permitted to stone them before dawn. If someone stones them before dawn, then he must repeat it. Abu Hanifah and his people said similarly that it is not permitted to stone them then.	"इमाम मालिक, इमाम अबू हनीफ़ह, इमाम अहमद और इस्हाक कहते हैं कि जमरात की रमी फ़ज्र के बाद लेकिन सूरज तुलूअ होने से पहले करना जायज़ है। इमाम मालिक ने फ़रमाया: "हम तक यह बात नहीं पहुँची कि रसूलुल्लाह ने किसी को फ़ज्र से पहले रमी की इजाज़त दी हो।" लिहाज़ा फ़ज्र से पहले रमी करना जायज़ नहीं। अगर कोई शख़्स फ़ज्र से पहले रमी करे तो उसे दोबारा रमी

Ahmad and Ishaq also said that. One group permit stoning before dawn breaks. It is related that Asma’ bint Abi Bakr used to stone at night. She said, ‘We used to do this in the time of the Messenger of Allah.’ Abu Dawud transmitted it. This position is related from ‘Ata’, Ibn Abi Mulaykah, and ‘Ikrimah ibn Khalid. Ash-Shafi said that the stoning could occur after the middle of the night. Another group said that there is no stoning until sunrise. Mujahid, an-Nakha‘i and ath-Thawri said that. Abu Thawr said, ‘If someone stones before sunrise, and they disagree about it, it does not satisfy the requirement. If they agree or there is a sunnah about it, then it does satisfy it.’	करना होगी। इमाम अबू हनीफ़ह और उनके अस्हाब ने भी यही कहा है कि उस वक़्त रमी जायज़ नहीं। इमाम अहमद और इस्हाक का भी यही मौक़िफ़ है। एक जमाअत ने फ़ज्र से पहले रमी को जायज़ क़रार दिया है। रिवायत है कि अस्मा बिन्त अबी बक्र रात के वक़्त रमी किया करती थीं। उन्होंने फ़रमाया: “हम रसूलुल्लाह के ज़माने में ऐसा किया करते थे।” इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है। यही क़ौल अता, इब्न अबी मुलैकह और इकरिमह बिन ख़ालिद से भी मनक़ूल है। इमाम शाफ़ई ने कहा है कि रमी आधी रात के बाद की जा सकती है। एक और जमाअत ने कहा है कि सूरज तुलूअ होने से पहले रमी नहीं होगी। मुजाहिद, नख़ई और स़ौरी का यही क़ौल है। अबू स़ौर ने कहा: “अगर कोई शख़्स सूरज तुलूअ होने से पहले रमी करे, और इस बारे में उलमा का इख़्तिलाफ़ हो, तो वह काफ़ी नहीं होगी। अलबत्ता अगर उस पर

	इत्तिफ़ाक़ हो या उसके बारे में कोई सुन्नत मौजूद हो, तो फिर वह काफ़ी होगी।"
Abu 'Umar said, 'As for the view of ath-Thawri and those who follow him, his argument is that the Messenger of Allah stoned the jamrah after sunrise and said, "Take your rites from me."' Ibn al-Mundhir said, 'The sunnah is that one does not stone until after sunrise and stoning before sunrise does not satisfy the requirement. If someone does it, then he must repeat it, since he has acted contrary to the Sunnah that the Messenger of Allah laid down for his community.'	"अबू उमर ने कहा: "जहाँ तक इमाम सौरी और उनके पैरोक़ारों के क़ौल का तअल्लुक़ है, तो उनकी दलील यह है कि रसूलुल्लाह ने सूरज तुलूअ होने के बाद जमरह की रमी की और फ़रमाया: 'अपने मनासिक मुझसे सीख लो।'" इब्न अल-मुन्ज़िर ने कहा: "सुन्नत यह है कि सूरज तुलूअ होने से पहले रमी न की जाए, और सूरज तुलूअ होने से पहले की गई रमी काफ़ी नहीं होती। अगर कोई ऐसा करे तो उस पर लाज़िम है कि वह दोबारा रमी करे, क्योंकि उसने उस सुन्नत के ख़िलाफ़ अमल किया है जिसे रसूलुल्लाह ने अपनी उम्मत के लिए मुक़र्रर फ़रमाया था।"
Mamar related from Hisham ibn 'Urwah that his father said, 'The Messenger of Allah commanded Umm Salamah to be in Makkah in the morning of	"मअमर ने हिशाम बिन 'उर्वह से रिवायत किया कि उनके वालिद ने कहा: "रसूलुल्लाह ने उम्मे सलमा को हुक्म दिया कि वह अपने दिन की

her day…' Abu 'Umar said that this hadith varies from Hisham. One group related it mursal from Hisham from his father as Mamar related it and others related it from Hisham from his father from 'Aishah with an isnad. All of them are reliable. The point is that it indicates that she had stoned the jamrah at Mina before dawn, since the Messenger of Allah commanded her to be in Makkah on the morning of the Day of Sacrifice. This could only happen if she had stoned the jamrah at Mina during the night before dawn. Allah knows best.	सुबह मक्का में हों..." अबू उमर ने कहा कि यह हदीस हिशाम से मुख्तलिफ तरीक़ों से रिवायत की गई है। एक जमाअत ने इसे हिशाम से, उनके वालिद से मुरसल रिवायत किया है, जैसा कि मअमर ने रिवायत किया है, जबकि दूसरों ने इसे हिशाम से, उनके वालिद से, हज़रत 'आइशा से सनद के साथ रिवायत किया है। यह सब रावी सिक़ह हैं। मक़सद यह है कि यह हदीस इस बात पर दलालत करती है कि उम्मे सलमा ने फ़ज्र से पहले रात ही में मिना में जमरह की रमी कर ली थी, क्योंकि रसूलुल्लाह ने उन्हें यौमुन-नहर की सुबह मक्का में मौजूद होने का हुक्म दिया था। और यह उसी सूरत में मुमकिन था कि उन्होंने फ़ज्र से पहले रात के वक़्त मिना में जमरह की रमी कर ली हो। वल्लाहु अअलम।"
Abu Dawud related from Harun ibn 'Abdullah from Ibn Abi Fudayk from ad-Dahhak ibn 'Uthman from Hisham ibn	"अबू दाऊद ने हारून बिन अब्दुल्लाह से, उन्होंने इब्न अबी फ़ुदैक से, उन्होंने ज़हहाक बिन उस्मान से, उन्होंने हिशाम बिन उर्वह

'Urwah from his father that 'Aishah said, 'The Messenger of Allah sent Umm Salamah ahead on the night before the Day of Sacrifice. She stoned the jamrah before dawn and then went and performed the Tawaf al-Ifadah. That was the day when the Messenger of Allah was going to be with her. If this is confirmed, then stoning at night is permitted, but what is preferred is from sunrise to midday. Abu 'Umar said that they agree that the preferred time for stoning the Jamrat al-Aqabah is between sunrise and midday. All but Malik agree that if someone stones before sunset on the Day of Sacrifice, it satisfies the requirement and he owes nothing. Malik said, 'I recommend that if he fails to stone the Jamrat al-Aqabah until evening he should sacrifice an animal that he brought from outside the Haram.	से, उन्होंने अपने वालिद से रिवायत किया कि हज़रत आइशा ने फ़रमाया: "रसूलुल्लाह ने यौमुन-नहर से पहले वाली रात उम्मे सलमा को आगे भेज दिया। उन्होंने फ़ज्र से पहले जमरह की रमी की, फिर जाकर तवाफ़-ए-इफ़ाज़ह किया। और वही दिन था जिसमें रसूलुल्लाह उनके पास आने वाले थे।" अगर यह रिवायत साबित हो जाए तो रात में रमी करना जायज़ है, लेकिन पसंदीदा वक़्त सूरज तुलूअ होने से लेकर ज़वाल तक है। अबू उमर ने कहा कि उलेमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि जमरतुल-अक़बह की रमी का अफ़ज़ल वक़्त सूरज तुलूअ होने से दोपहर तक है। इमाम मालिक के अलावा सब का इत्तिफ़ाक़ है कि अगर कोई शख़्स यौमुन-नहर में ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब से पहले रमी कर ले तो उसकी रमी अदा हो जाएगी और उस पर कुछ लाज़िम नहीं होगा। इमाम मालिक ने फ़रमाया: "मेरी राय यह है कि अगर कोई शख़्स शाम तक जमरतुल-अक़बह की रमी न कर सके तो उसे हरम से बाहर से

	लाया हुआ एक जानवर बतौर-ए-क़ुर्बानी ज़बह करना चाहिए।"
They disagree about someone who does not stone until sunset and then stones in the night or the following morning, Malik said that he owes a sacrifice. His argument was that the Messenger of Allah set a time for stoning the jamrah: the Day of Sacrifice. If someone stones after sunset, he has stoned after the end of the time and if someone does something in the hajj outside of its time, he owes a sacrifice. Ash-Shafi'i said that he owes no sacrifice. That is also the view of Abu Yusuf and Muhammad. Abu Thawr said that was because when someone said to the Messenger of Allah, 'Messenger of Allah, I stoned after the evening,' he said, 'There is no harm.' Malik said, 'If someone forgets to stone the jamrahs until evening, he should do the stoning at whatever time he remembers, day or night, as someone prays	"उलमा का उस शख़्स के बारे में इख़्तिलाफ़ है जो ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब तक रमी न कर सके, फिर रात में या अगली सुबह रमी करे। इमाम मालिक ने फ़रमाया कि उस पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी। उनकी दलील यह थी कि रसूलुल्लाह ने जमरह की रमी के लिए एक वक़्त मुक़र्रर फ़रमाया था, यानी यौमुन-नहर। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स ग़ुरूब-ए-आफ़्ताब के बाद रमी करे तो उसने मुक़र्रर वक़्त के बाद रमी की, और जो शख़्स हज के किसी अमल को उसके वक़्त से बाहर अदा करे उस पर क़ुर्बानी लाज़िम होती है। इमाम शाफ़ई ने फ़रमाया कि उस पर कोई क़ुर्बानी लाज़िम नहीं। यही क़ौल अबू यूसुफ़ और मुहम्मद का भी है। अबू सौर ने कहा कि इसकी दलील वह हदीस है जिसमें एक शख़्स ने रसूलुल्लाह से अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह! मैंने शाम के बाद रमी की है।" तो आप ने फ़रमाया: "कोई हरज नहीं।"

a prayer that he forgot whenever he remembers it. He only stones what he missed. If it is one jamrah, he stones it and then stones the jamrahs after it. The order of the jamrahs in stoning is mandatory. It is not permitted to start stoning the next jamrah until he has completed stoning the previous jamrah, as is the case with the rakahs of the prayer.' This is well-known in the School. It is said that the order is not mandatory for the validity of stoning, but all stoning at the correct time of performance satisfies the requirement.	इमाम मालिक ने फ़रमाया: "अगर कोई शख़्स शाम तक जमरात की रमी करना भूल जाए तो जब भी उसे याद आए, दिन हो या रात, वह रमी कर ले, जैसे कोई शख़्स भूली हुई नमाज़ याद आने पर अदा कर लेता है। वह सिर्फ़ उसी रमी को अदा करे जो उससे फ़ौत हुई हो। अगर एक ही जमरह रह गया हो तो पहले उसी की रमी करे, फिर उसके बाद वाले जमरात की रमी करे।" उन्होंने फ़रमाया कि रमी में जमरात की तरतीब वाजिब है। उसके लिए जायज़ नहीं कि पहले जमरह की रमी मुकम्मल किए बग़ैर अगले जमरह की रमी शुरू करे, जैसे नमाज़ की रकअतों में तरतीब ज़रूरी होती है। यही मालिकी मज़हब में मशहूर क़ौल है। अलबत्ता यह भी कहा गया है कि तरतीब रमी की सेहत के लिए शर्त नहीं, बल्कि अगर तमाम रमी अपने मुक़र्रर वक़्त में कर ली जाए तो वह काफ़ी होगी।"
There is no stoning after the end of the days of stoning. If someone remembers failing to	"अय्याम-ए-रमी ख़त्म हो जाने के बाद रमी नहीं की जा सकती। अगर किसी शख़्स को मक्का पहुँचने के

do that after he is in Makkah or after he has left it, he owes a sacrifice, whether he omitted all of the stoning or just one jamrah or even one pebble of the jamrah. If the days of Mina are over, he owes a sacrifice. Abu Hanifah said, 'If someone omits all of the jamrahs, he owes a sacrifice. If he omits one jamrah, he must feed a poor person half a sa of food for every pebble of the jamrah he missed until it reaches the level of sacrifice and then he should feed what he wishes, except in the case of the Jamrat al- Aqabah for which he owes a sacrifice. Al-Awza'i said that he gives sadaqah for omitting a pebble. Ath-Thawri said that he should feed in the case of one, two or three pebbles. If it is four or more, he owes a sacrifice. Al-Layth said that there is a sacrifice for one pebble missed. That is one of the two views of ash-Shafi'i. His final position is the well-known one: a mudd of food for one pebble, two mudds for two	बाद या मक्का से निकल जाने के बाद याद आए कि उसने रमी नहीं की थी, तो उस पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी, ख़्वाह उसने तमाम रमी छोड़ दी हो, या सिर्फ़ एक जमरह, बल्कि अगर एक कंकरी भी छोड़ दी हो तब भी। जब मिना के दिन गुज़र जाएँ तो क़ुर्बानी लाज़िम हो जाती है। इमाम अबू हनीफ़ह ने फ़रमाया: "अगर कोई तमाम जमरात की रमी छोड़ दे तो उस पर क़ुर्बानी लाज़िम है। और अगर एक जमरह छोड़ दे तो जमरह की हर छूटी हुई कंकरी के बदले आधा साअ खाना एक मिस्कीन को खिलाए, यहाँ तक कि वह मिक़दार क़ुर्बानी के बराबर पहुँच जाए, फिर उसके बाद जितना चाहे खिलाए। अलबत्ता जमरतुल-अक़बह का मामला मुख़्तलिफ़ है, उसके तर्क पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी।" इमाम औज़ाई ने फ़रमाया कि एक कंकरी छोड़ने पर सदक़ह दिया जाए। इमाम सौरी ने फ़रमाया कि एक, दो या तीन कंकरियाँ छोड़ने की सूरत में खाना खिलाया जाए, लेकिन अगर चार या उससे ज़्यादा कंकरियाँ छोड़

pebbles, and a sacrifice for three pebbles.	दी जाएँ तो क़ुर्बानी लाज़िम होगी। इमाम लैस ने फ़रमाया कि एक कंकरी छोड़ने पर भी क़ुर्बानी लाज़िम है। यही इमाम शाफ़ई के दो क़ौल में से एक क़ौल है। जबकि उनका आख़िरी और मशहूर क़ौल यह है कि एक कंकरी छोड़ने पर एक मुद्द खाना, दो कंकरियों पर दो मुद्द, और तीन कंकरियाँ छोड़ने पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी।"
The majority say that there is no possibility for anyone to complete anything of the rite of stoning the jamrahs on the days of tashriq he has missed once the sun has set on the last day, which is the fourth day from the Day of Sacrifice and the third of the days of tashriq. Such a person must do reparation in the form of sacrifice or feeding the poor according to what we have just mentioned.	"अकसर उलेमा का कहना है कि जब यौम-ए-नहर के बाद चौथे दिन, यानी अय्याम-ए-तशरीक़ के तीसरे दिन सूरज ग़ुरूब हो जाए, तो उसके बाद किसी शख़्स के लिए अय्याम-ए-तशरीक़ में फ़ौतशुदा रमी-ए-जमरात की अदायगी की कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती। ऐसे शख़्स पर लाज़िम होगा कि वह तलाफ़ी के तौर पर क़ुर्बानी करे या मिस्कीनों को खाना खिलाए, जैसा कि हम अभी ज़िक्र कर चुके हैं।"
It is not permitted to spend the	"अय्याम-ए-तशरीक़ की रातों में

night at Makkah, or elsewhere other than Mina, during the nights of tashriq. All agree that that is not permitted although there is an exception made for herdsmen and those of the family of 'Abbas who bring water. Malik said, 'A sacrifice is owed by anyone who spends any of the nights of Mina elsewhere, with the exception of herdsmen and those of the family of 'Abbas who bring water.' Al-Bukhari related from Ibn Umar that al-Abbas asked for permission from the Prophet to spend the nights of Mina at Makkah in order to provide water and he gave him permission. Ibn 'Abd al-Barr said, 'Ibn 'Abbas used to oversee the watering and undertook that task. He provided the hajjis with water during the Festival. That is why he had an allowance not to spend the nights at Mina, as did those who herded camels, due to their need to attend to the camels and to take them where they could graze, which was	मक्का या मिना के अलावा किसी और जगह रात गुज़ारना जायज़ नहीं। इस बात पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि यह जायज़ नहीं, अलबत्ता चरवाहों और हज़रत अब्बास के ख़ानदान के उन अफ़राद के लिए रुख़्सत है जो पानी पिलाने की ख़िदमत अंजाम देते थे। इमाम मालिक ने फ़रमाया: "जो शख़्स मिना की रातों में से कोई रात मिना के अलावा कहीं और गुज़ारे, उस पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी, सिवाए चरवाहों और हज़रत अब्बास क ख़ानदान के उन लोगों के जो पानी पिलाने की ख़िदमत करते थे।" इमाम बुख़ारी ने इब्न उमर से रिवायत किया है कि हज़रत अब्बास ने नबी से इजाज़त तलब की कि वह हाजियों को पानी पिलाने की ख़िदमत की वजह से मिना की रातें मक्का में गुज़ार सकें, तो आप ने उन्हें इजाज़त दे दी। इब्न अब्दुलबर ने कहा: "इब्न अब्बास पानी पिलाने के इंतिज़ाम की निगरानी करते थे और यह ख़िदमत अंजाम देते थे। वह अय्याम-ए-हज्ज में हाजियों को पानी फ़राहम करते थे।

some distance from Mina.	इसी वजह से उन्हें मिना में रात न गुज़ारने की इजाज़त दी गई, जैसे ऊँट चराने वालों को दी गई थी, क्योंकि उन्हें ऊँटों की देखभाल और उन्हें चरागाहों तक ले जाने की ज़रूरत होती थी, जो मिना से कुछ फ़ासले पर थीं।""
Mina takes its name from the blood shed (yumna) there. Ibn 'Abbas said, 'It is called Mina because Jibril said to the Prophet: 'Wish (tamann).' He said, 'I wish for the Garden.' Therefore it is called Mina. He said that it is called Jam because Hawwa' and Adam met (ijtimaa) there. Jam is also a name for Muzdalifah which is the Sacred Landmark as was already said.	"मिना का नाम वहाँ बहाए जाने वाले ख़ून (युम्ना) की वजह से रखा गया है। इब्न अब्बास ने फ़रमाया: "इसे मिना इसलिए कहा जाता है कि जिब्रील ने नबी से कहा: 'तमन्ना कीजिए (तमन्ना)।' आप ने फ़रमाया: 'मैं जन्नत की तमन्ना करता हूँ।' इसी वजह से इसका नाम मिना पड़ गया।" उन्होंने यह भी कहा कि इसे "जमअ" इसलिए कहा जाता है कि वहाँ हव्वा और आदम अलैहिमस्सलाम का इज्तिमा (इज्तिमा) हुआ था। "जमअ" मुज़दलिफ़ा का भी एक नाम है, जो मशअर-ए-हराम है, जैसा कि पहले बयान हो चुका है।"
Fuqaha agree that spending the nights of Mina at Mina is one of the practices and rites of the	"फ़ुक़हा इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि मिना में रात गुज़ारना हज्ज के आमाल और मनासिक में से है, सिवाए उन

hajj, except for those we have mentioned who are given a dispensation. Logic demands that any omission of its practices calls for a sacrifice, based on analogy with the rest of the hajj and its rites. We find in the Muwatta': 'From Malik from Nafi from Ibn 'Umar is that 'Umar said, "No one performing hajj should spend the nights of Mina beyond al-'Aqabah." The area of 'Aqabah beyond which 'Umar forbade anyone to spend the night is that which is at the jamrah that people stone on the Day of Sacrifice, which is closer to Makkah. Ibn Nafi related it from Malik in al-Mabsuṭ. He said that Malik said, 'Anyone who spends the nights of Mina beyond it owes fidyah. That is because he spent the nights of Mina other than at Mina.' Spending those nights there is prescribed in the hajj and therefore a sacrifice is owed by someone who does not spend the night there, as is the case if someone does not spend the	लोगों के जिनका हम ज़िक्र कर चुके हैं और जिन्हें रुख़्सत दी गई है। क़ियास का तक़ाज़ा यह है कि हज्ज के आमाल में से किसी अमल के तर्क पर क़ुर्बानी लाज़िम आए, जैसे हज्ज के दीगर मनासिक में होता है। मुवत्ता में हमें यह रिवायत मिलती है: "इमाम मालिक ने नाफ़े से, उन्होंने इब्न उमर से रिवायत किया है कि हज़रत उमर ने फ़रमाया: 'कोई हाजी अक़बा से आगे मिना की रातें न गुज़ारे।'" अक़बा का वह इलाक़ा जिससे आगे हज़रत उमर ने रात गुज़ारने से मना फ़रमाया, वही जमरह के पास का मक़ाम है जिस पर लोग यौम-ए-नहर में रमी करते हैं, और जो मक्का के ज़्यादा क़रीब है। इब्न नाफ़े ने इसे इमाम मालिक से "अल-मबसूत" में रिवायत किया है। उन्होंने कहा कि इमाम मालिक ने फ़रमाया: "जो शख़्स मिना की रातें इस मक़ाम से आगे गुज़ारे, उस पर फ़िद्या लाज़िम होगा, क्योंकि उसने मिना की रातें मिना के अलावा कहीं और गुज़ारें।" इन रातों को मिना में गुज़ारना हज्ज में

night at Muzdalifah. According to Mālik, fidyah means a hady. He said, 'It is a hady driven from outside the Haram into the Haram.'	मशरूअ किया गया है, इसलिए जो शख़्स वहाँ रात न गुज़ारे, उस पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी, जैसे उस शख़्स पर लाज़िम होती है जो मुज़दलिफ़ा में रात न गुज़ारे। इमाम मालिक के नज़दीक फ़िद्या से मुराद "हदी" है। उन्होंने फ़रमाया: "यह वह हदी है जो हरम से बाहर से हरम की तरफ़ लाई जाए।""
Malik related from 'Abdullah ibn Abi Bakr ibn Muhammad ibn 'Amr ibn Ḥazm from his father that Abu-l-Baddaḥ ibn 'Asim ibn 'Adi reported that the Messenger of Allah f allowed those herding the camels, who spend the nights away from Mina, to stone on the Day of Sacrifice, then to stone on the following day and the day after it. Then they stone on the Day of Nafr.	"इमाम मालिक ने अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म से, उन्होंने अपने वालिद से रिवायत किया कि अबुल-बद्दाह बिन आसिम बिन अदी ने बयान किया कि रसूलुल्लाह ने ऊँट चराने वालों को, जो मिना से बाहर रात गुज़ारते थे, इस बात की इजाज़त दी कि वह यौम-ए-नहर में रमी करें, फिर उसके बाद वाले दिन और उसके अगले दिन की रमी एक साथ कर लें, और फिर यौम-ए-नफ़्र में रमी करें।"
Abu 'Umar said, 'Malik's view does not accord with this ḥadith. He used to say that they stone the Jamrat al-Aqabah on	"अबू उमर ने कहा: "इमाम मालिक का मौक़िफ़ इस हदीस के मुताबिक़ नहीं है। वह फ़रमाया करते थे कि लोग यौम-ए-नहर में जमरए-अक़बा

the Day of Sacrifice and then do not stone on the following day, which is the second of the days of tashriq, and the day when those who want to hurry on do so or when those who are permitted to hurry on stone on the two days – that day and the day before it – because they perform what they owe. In his view no one pays anything except after it is obligatory for him. This is the meaning of Malik's interpretation of this hadith in the Muwatta'.	की रमी करें, फिर अगले दिन, जो अय्याम-ए-तशरीक़ का दूसरा दिन है, रमी न करें। फिर जिस दिन जल्दी रवाना होने वाले लोग रवाना होते हैं, या जिन्हें जल्दी जाने की इजाज़त है, वह उसी दिन दो दिनों की रमी करें — यानी उस दिन की और उससे पहले वाले दिन की — क्योंकि वह अपने ज़िम्मे वाजिब अमल को अदा कर रहे होते हैं। इमाम मालिक के नज़दीक कोई शख़्स किसी चीज़ को उस वक़्त तक अदा नहीं करता जब तक वह उस पर वाजिब न हो जाए। मुवत्ता में इस हदीस की इमाम मालिक की तफ़्सीर का यही मतलब है।"
Others say that there is nothing wrong in any of that, based on what is in the ḥadith of Malik, because they are all days of stoning. In Malik's view, it is not permitted for herdsmen to bring forward the stoning because those other than the herdsmen are not permitted to stone the jamrahs on the days of tashriq before midday. If	"बाज़ दूसरे उलेमा कहते हैं कि इसमें कोई हरज नहीं, क्योंकि इमाम मालिक की रिवायत कर्दा हदीस में यही वारिद हुआ है, इस लिए कि यह सब रमी के दिन हैं। इमाम मालिक के नज़दीक चरवाहों के लिए रमी को पहले कर लेना जायज़ नहीं, क्योंकि चरवाहों के अलावा लोगों के लिए भी अय्याम-ए-तशरीक़ में ज़वाल-ए-आफ़्ताब से

someone stones them before midday, he must repeat it. They cannot bring it forward. They do have an allowance for that on the second to the third day. Ibn ‘Abd al-Barr said, ‘What Malik says regarding this question exists in the transmission of Ibn Jurayj from Muhammad ibn Abi Bakr ibn Muhammad ibn ‘Amr ibn Ḥazm from his father, saying that Abu-l-Baddaḥ ibn ‘Asim ibn ‘Adi reported that the Messenger of Allah f allowed those herding the camels, who spend the nights away from Mina, to alternate so that they would stone on the Day of Sacrifice, leave the second day and night and then stone on the following day. Our scholars say that stoning the third jamrah is cancelled for those who hurry on. Ibn Abi Zaminin said, ‘One stones it on the first day of Nafr when he wants to hurry on.’ Ibn al Mawwāz said, ‘The one who hurries on stops with twenty-one pebbles in the two days,	पहले रमी करना जायज़ नहीं। अगर कोई शख़्स ज़वाल से पहले रमी करे तो उस पर उसका इआदा लाज़िम होगा। लिहाज़ा वह रमी को मुक़द्दम नहीं कर सकते। अलबत्ता दूसरे दिन से तीसरे दिन तक मुअख़्ख़र करने की उन्हें इजाज़त है। इब्न अब्दुलबर ने कहा: "इस मसअले के बारे में इमाम मालिक का क़ौल इब्न जुरैज की रिवायत में मौजूद है, जो उन्होंने मुहम्मद बिन अबी बक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म से, उन्होंने अपने वालिद से रिवायत किया है कि अबुल-बद्दाह बिन आसिम बिन अदी ने बयान किया कि रसूलुल्लाह ने ऊँट चराने वालों को, जो मिना से बाहर रात गुज़ारते थे, यह इजाज़त दी कि वह बारी बारी अमल करें; यानी यौम-ए-नहर में रमी करें, फिर दूसरे दिन और रात को छोड़ दें, और उसके बाद वाले दिन रमी करें।" हमारे उलेमा कहते हैं कि तीसरे जमरह की रमी उस शख़्स से साक़ित हो जाती है जो जल्दी रवाना हो जाए। इब्न अबी ज़मनीन ने कहा: "जो शख़्स जल्दी रवाना होना चाहे, वह पहले यौम-ए-नफ़्र में रमी करेगा।"

seven pebbles for each jamrah. That makes his total stoning forty-nine pebbles because he stoned the Jamrat al-Aqabah with seven on the Day of Sacrifice.' Ibn al-Mundhir said that the stoning for the third day is cancelled.	इब्न अल-मव्वाज़ ने कहा: "जल्दी रवाना होने वाला शख़्स दो दिनों में इक्कीस कंकड़ियों पर इक्तिफ़ा करता है, हर जमरह के लिए सात कंकड़ियाँ। इस तरह उसकी कुल रमी उनचास कंकड़ियाँ बनती है, क्योंकि उसने यौम-ए-नहर में जमरए-अक़बा पर सात कंकड़ियाँ मारी थीं।" इब्न अल-मुन्ज़िर ने कहा कि तीसरे दिन की रमी साक़ित हो जाती है।"
Malik related from Yahya ibn Said that he heard 'Ata' ibn Abi Rabah mention that there was a dispensation for the herdsmen to stone in the night at first. Al-Baji said, '"At first" means that it was during the time of the Prophet, because it is the first period of this Shariah.' According to this it is mursal. It is possible that he means the time that 'Ata' heard it. Then it would be a mawquf isnad.' Allah knows best. It has an isnad from 'Amr ibn Shu'ayb from his father from his grandfather from the	"इमाम मालिक ने यह्या बिन सईद से रिवायत किया कि उन्होंने अता बिन अबी रबाह को यह ज़िक्र करते हुए सुना कि इब्तिदा में चरवाहों को रात के वक़्त रमी करने की रुख़्सत दी गई थी। अल-बाजी ने कहा: "'इब्तिदा में' से मुराद नबी का ज़माना है, क्योंकि यही इस शरीअत का इब्तिदाई दौर था।" इस बिना पर यह रिवायत मुरसल होगी। और यह भी मुमकिन है कि उनकी मुराद वह वक़्त हो जब अता ने यह बात सुनी थी, तो फिर यह मवकुफ़ सनद होगी। वल्लाहु आलम। इस की एक सनद अम्र बिन शुऐब से,

Prophet that ad-Daraqutni and others transmitted. We mentioned it in al-Muqtabis fi sharḥ Muwatta' Malik ibn Anas. They were permitted to stone at night because it is easier for them and shows more concern for their efforts to herd the camels, because night is a time when they do no graze or wander off. That is why they stone at that time.	उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने अपने दादा से, नबी तक मरवी है, जिसे दारक़ुतनी और दीगर मुहद्दिसीन ने रिवायत किया है। हमने इसे "अल-मुक़तबस फ़ी शरह मुवत्ता मालिक बिन अनस" में ज़िक्र किया है। चरवाहों को रात में रमी की इजाज़त इस लिए दी गई कि यह उनके लिए आसानी का बाइस था और उनके ऊँट चराने की मशक्कत का लिहाज़ रखने के ज़्यादा मुनासिब था, क्योंकि रात वह वक़्त होता है जब ऊँट न चरते हैं और न इधर-उधर निकलते हैं। इसी लिए उन्हें उस वक़्त रमी करने की इजाज़त दी गई।"
There is disagreement about someone who misses doing the stoning until the sun has set. 'Ata' said, 'The only people who are permitted to stone at night are the herdsmen. Merchants may not do that.' It is related that Ibn 'Umar said, 'If someone fails to stone until the sun has set, he should not stone until the sun has risen on the following day.' Ahmad and	"उस शख़्स के बारे में इख़्तिलाफ़ है जो रमी सूरज ग़ुरूब होने तक मुअख्खर कर दे। अता ने कहा: "रात में रमी करने की इजाज़त सिर्फ़ चरवाहों को है, ताजिरों के लिए यह जायज़ नहीं।" रिवायत है कि इब्न उमर ने फ़रमाया: "अगर कोई शख़्स सूरज ग़ुरूब होने तक रमी न कर सके, तो वह अगले दिन सूरज तुलू होने के बाद रमी करे।" इमाम अहमद और इस्हाक़

Ishaq said that. Malik said, as transmitted by Ibn al-Qasim, 'If he fails to do it in the day he should stone at night and owes a sacrifice.' The Muwatta' does not mention owing a sacrifice. Ash-Shafi'i, Abu Thawr, Yaqub and Muhammad said that if someone fails to stone until evening, he stones and does not owe a sacrifice. Al-Hasan al-Baṣri makes an allowance for stoning the jamrahs at night. Abu Hanifah said that he stones and owes nothing, even though he did not mention it as being in the night. If he waits until the following day, then he owes a sacrifice. Ath-Thawri said that if he delays the stoning until night, out of forgetfulness or deliberately, he must sacrifice.	का भी यही क़ौल है। इमाम मालिक ने, जैसा कि इब्न अल-क़ासिम ने नक़्ल किया है, फ़रमाया: "अगर कोई शख़्स दिन में रमी न कर सके, तो वह रात में रमी करे, लेकिन उस पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी।" मुवत्ता में क़ुर्बानी लाज़िम होने का ज़िक्र नहीं है। इमाम शाफ़ई, अबू थौर, याक़ूब और मुहम्मद ने कहा है कि अगर कोई शख़्स शाम तक रमी न कर सके, तो वह बाद में रमी कर ले और उस पर कोई क़ुर्बानी लाज़िम नहीं होगी। हसन बसरी रात में जमरात की रमी करने की इजाज़त देते थे। इमाम अबू हनीफ़ा ने कहा: "वह रमी करे और उस पर कुछ लाज़िम नहीं, अगरचे उन्होंने रात में रमी का सराहतन ज़िक्र नहीं किया। अलबत्ता अगर वह अगले दिन तक मुअख्खर कर दे, तो उस पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी।" इमाम सौरी ने कहा: "अगर कोई शख़्स भूल कर या जान बूझ कर रमी को रात तक मुअख्खर कर दे, तो उस पर क़ुर्बानी लाज़िम होगी।"

As for the camel-herders or the people who get water (siqayah) stoning at night, they owe no sacrifice based on the hadith. However, if it is done by other people, then logic demands that they sacrifice. That is when it is deliberate, and Allah knows best.	"जहाँ तक ऊँट चराने वालों या पानी पिलाने वालों (सिक़ायह वालों) के रात में रमी करने का तअल्लुक़ है, तो हदीस की बिना पर उन पर कोई क़ुर्बानी लाज़िम नहीं होती। अलबत्ता अगर दूसरे लोग ऐसा करें, तो क़ियास का तक़ाज़ा यह है कि उन पर क़ुर्बानी लाज़िम हो। यह हुक्म उस सूरत में है जब वह जान बूझ कर ऐसा करें। वल्लाहु आलम।"
It is confirmed that the Messenger of Allah stoned the Jamrat al-Aqabah on the Day of Sacrifice while mounted. Malik and others recommended stoning it while mounted. Ibn 'Umar, Ibn az-Zubayr, and Salim used to stone it on foot. The stoning consists of twenty-one pebbles on each of the three days and the takbir is said with each pebble. The person should face towards the Kabah when he stones and do the jamrahs in the correct order, doing them all without stopping and without	"यह साबित है कि रसूलुल्लाह ने यौम-ए-नहर में जमरए-अक़बा की रमी सवारी पर सवार होकर की। इमाम मालिक और दीगर उलेमा ने भी सवारी पर सवार होकर रमी करने को मुस्तहब क़रार दिया है। जबकि इब्न उमर, इब्न ज़ुबैर और सालिम पैदल चल कर रमी किया करते थे। तीनों दिनों में हर दिन इक्कीस कंकड़ियों से रमी की जाती है, और हर कंकड़ी के साथ तकबीर कही जाती है। रमी करने वाला शख़्स रमी के वक़्त काबा की तरफ़ रुख़ करे, और जमरात को तरतीब के साथ अदा करे। सब जमरात को पे दर पे

separating them or reversing them. He starts with the first jamrah and throws seven pebbles at it and does not set them down. That is what was stated by Mālik, ash-Shafi'i, Abu Thawr, and the People of Opinion. If he simply tosses them, that is permitted by the People of Opinion.	करे, उनके दरमियान वक़्फ़ा न करे, न उनकी तरतीब उलटे। वह पहले जमरह से आग़ाज़ करे और उस पर सात कंकड़ियाँ मारे, और कंकड़ियों को ज़मीन पर रख कर न मारे। यही बात इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई, अबू थौर और अहल-ए-राय ने बयान की है। अलबत्ता अगर कोई शख़्स सिर्फ़ कंकड़ियाँ फेंक दे, तो अहल-ए-राय के नज़दीक यह भी जायज़ है।"
Ibn al-Qasim said, 'It is not permitted to throw them all together.' That is sound because the Prophet used to stone them and he did not throw two or more stones at the same time. When he did the stoning, he did it with one pebble at a time. When he had finished throwing them, he stood in front of the jamrah for a long time making such supplication as was feasible. Then he stoned the second one, which is the middle one and left it going to the left in the bottom of the river-bed and	"इब्न अल-क़ासिम ने कहा: "तमाम कंकड़ियाँ एक साथ फेंकना जायज़ नहीं।" यह बात दुरुस्त है, क्योंकि नबी जमरात की रमी करते थे और आप ने कभी दो या उससे ज़्यादा कंकड़ियाँ एक साथ नहीं फेंकीं। जब आप रमी करते तो एक एक कंकड़ी अलग अलग फेंकते थे। जब आप रमी से फ़ारिग़ हो जाते, तो पहले जमरह के सामने काफ़ी देर तक खड़े रहते और हस्ब-ए-इस्तिताअत दुआ करते। फिर दूसरे जमरह, यानी दरमियानी जमरह, की रमी करते और वादी के निचले हिस्से की तरफ़ बाएँ जानिब हट जाते, और

stood for a long time at that one making supplication. Then he stoned the third one, the Jamrat al- Aqabah, with seven pebbles from below it, but he did not stop beside it. It is satisfactory to stone them from above. The takbir should be said with every pebble thrown.' The Sunnah for remembering when stoning the jamrahs is to say the takbir and nothing else. They should be stoned on foot which is not the case with the jamrah on the Day of Sacrifices.	वहाँ भी काफ़ी देर खड़े होकर दुआ करते। फिर तीसरे जमरह, यानी जमरए-अक़बा, को नीचे की जानिब से सात कंकड़ियाँ मारते, लेकिन उसके पास ठहरते नहीं थे। अलबत्ता ऊपर की जानिब से रमी करना भी काफ़ी है। हर कंकड़ी फेंकते वक़्त तकबीर कही जानी चाहिए। जमरात की रमी के वक़्त ज़िक्र के तौर पर सुन्नत सिर्फ़ तकबीर कहना है, इसके अलावा कुछ नहीं। अय्याम-ए-तशरीक़ में जमरात की रमी पैदल चल कर करना सुन्नत है, बरख़िलाफ़ यौम-ए-नहर के जमरह के, जिसमें सवारी पर रमी की जाती है।"
All this is related by an-Nasa'i and ad-Daraqutni from az-Zuhri from the Messenger of Allah. He used to stone the jamrah that is next to the mosque of Mina with seven pebbles, saying the takbir with every pebble. Then he went forward and stood for a long	"यह तमाम रिवायत नसाई और दारक़ुतनी ने ज़ुहरी के वास्ते से रसूलुल्लाह से नक़्ल की है। आप मिना की मस्जिद के क़रीब वाले जमरह पर सात कंकड़ियाँ मारते थे और हर कंकड़ी के साथ तकबीर कहते थे। फिर आगे बढ़ते और क़िबला रुख़ होकर काफ़ी देर तक खड़े रहते, अपने हाथ उठाकर दुआ

time facing the qiblah, raising his hands in supplication. Then he went to the second jamrah and stoned it with seven pebbles, saying the takbir with every pebble. Then he went down to the left opposite the wadi and stood facing the qiblah, raising his hands in supplication. Then he went to the jamrah at al- Aqabah and stoned it with seven pebbles, saying the takbir with every pebble. Then he left without standing there. Az-Zuhri said that he heard Salim ibn 'Abdullah relate this from his father from the Prophet. He said that Ibn 'Umar used to do it like this.	करते। फिर दूसरे जमरह के पास जाते और उस पर सात कंकड़ियाँ मारते, हर कंकड़ी के साथ तकबीर कहते। इसके बाद वादी के बिलमुक़ाबिल बाएँ जानिब नीचे उतरते और क़िबला रुख़ खड़े होकर हाथ उठाकर दुआ करते। फिर जमरए-अक़बा के पास जाते और उस पर सात कंकड़ियाँ मारते, हर कंकड़ी के साथ तकबीर कहते, और फिर वहाँ ठहरे बग़ैर वापस चले जाते। ज़ुहरी ने कहा कि उन्होंने सालिम बिन अब्दुल्लाह को अपने वालिद से, और उन्होंने नबी से यह रिवायत बयान करते हुए सुना। उन्होंने कहा कि इब्न उमर भी इसी तरह अमल किया करते थे।"
The ruling of the jamrahs is that they are considered pure and are not affected by anything used to stone them. If someone stones them with what has already been used to stone them, Malik believes that	"जमरात का हुक्म यह है कि वह पाक शुमार किए जाते हैं और उन पर रमी के लिए इस्तेमाल की जाने वाली चीज़ों का कोई असर नहीं होता। अगर कोई शख़्स उन्हीं कंकड़ियों से दोबारा रमी करे जो पहले इस्तेमाल हो चुकी हों, तो इमाम मालिक के

it does not satisfy the requirement. Ibn al-Qasim said that he said that if that is only a matter of a single pebble, it satisfies the requirement. Ibn al-Qasim gave that fatwa. The people of knowledge recommend taking the stones from Muzdalifah, not from the mosque. If someone takes more than he needs and still has some in his possession after stoning, he should bury them and not just throw them away. Ahmad ibn Hanbal and others said that.	नज़दीक यह काफ़ी नहीं होगा। इब्न अल-क़ासिम ने बयान किया कि इमाम मालिक ने फ़रमाया: "अगर यह सिर्फ़ एक कंकड़ी का मामला हो, तो वह काफ़ी हो जाएगी।" इब्न अल-क़ासिम ने इसी के मुताबिक़ फ़तवा दिया। अहल-ए-इल्म मुस्तहब समझते हैं कि कंकड़ियाँ मुज़दलिफ़ा से ली जाएँ, मस्जिद से न ली जाएँ। अगर कोई शख़्स अपनी ज़रूरत से ज़्यादा कंकड़ियाँ ले ले और रमी के बाद कुछ उसके पास बच जाएँ, तो उन्हें दफ़्न कर देना चाहिए, महज़ फेंक देना मुनासिब नहीं। इमाम अहमद बिन हंबल और दीगर उलेमा ने यही कहा है।"
Most, with the exception of Tawus, say that they should not be washed. He related that it is not good if the jamrahs and what is thrown are not washed free of impurity, but, if they are not, it still satisfies the requirement. Ibn al-Mundhir said that it is disliked to throw what has already been thrown	"अकसर उलेमा, सिवाए ताऊस के, इस बात के क़ाइल हैं कि कंकड़ियों को धोना ज़रूरी नहीं। ताऊस से रिवायत है कि अगर जमरात और रमी में इस्तेमाल होने वाली चीज़ें नजासत से पाक न की जाएँ तो यह अच्छा नहीं, लेकिन अगर उन्हें न भी धोया जाए तो रमी अदा हो जाएगी। इब्न अल-मुन्ज़िर ने कहा: "पहले से

but, nonetheless, it still satisfies the requirement since he did not know of anyone who obliges someone who does that to repeat it. We do not know of any reports stating that the Prophet washed the pebbles or commanded that they be washed. Tawus, as we stated, did wash them.	इस्तेमाल शुदा कंकड़ियाँ फेंकना मकरूह है, लेकिन इसके बावजूद रमी अदा हो जाती है, क्योंकि हमें किसी ऐसे आलिम का इल्म नहीं जिसने ऐसा करने वाले पर इआदा लाज़िम क़रार दिया हो।" हमें कोई ऐसी रिवायत मालूम नहीं कि नबी ने कंकड़ियों को धोया हो या उन्हें धोने का हुक्म दिया हो। अलबत्ता, जैसा कि हमने ज़िक्र किया, ताऊस कंकड़ियों को धोया करते थे।"
Throwing bits of mud at the jamrahs does not satisfy the requirement nor does anything except stone. That is the position of ash-Shafi'i, Ahmad and Ishaq. The People of Opinion say that it is permitted with dry clay. The same applies to anything that is part of the earth: it satisfies the requirement. Ath-Thawri said that if someone throws date-stones or mud, that does not satisfy the requirement. The Messenger of Allah threw	"जमरात पर मिट्टी के ढेले फेंकना काफ़ी नहीं होता, और पत्थर के अलावा किसी चीज़ से रमी अदा नहीं होती। यही मौक़िफ़ इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद और इस्हाक़ का है। अहल-ए-राय कहते हैं कि सूखी मिट्टी के ढेलों से रमी करना जायज़ है। इसी तरह हर वह चीज़ जो ज़मीन का हिस्सा हो, उससे रमी अदा हो जाती है। इमाम सौरी ने कहा: "अगर कोई शख़्स खजूर की गुठलियाँ या मिट्टी फेंके, तो उसकी रमी अदा नहीं होगी, क्योंकि रसूलुल्लाह ने कंकड़ियाँ

pebbles.	फेंकी थीं।"
There is disagreement about the size of what is thrown. Ash-Shafi'i said that the pebbles should be smaller in both length and width than a fingertip. Abu Thawr and the People of Opinion said that they should be like the pebbles used for flicking. We related that Ibn 'Umar used to stone the jamrah with something the size of sheep pellets. There is no sense in Malik's statement, 'I prefer them being larger than that' because the Prophet made a sunnah of stoning with something similar in size to date-stones. It is permitted to stone with anything that can be called a pebble, but it is better to follow the Sunnah. Ibn al-Mundhir said that.	"रमी में इस्तेमाल होने वाली कंकड़ियों के साइज़ के बारे में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। इमाम शाफ़ई ने कहा कि कंकड़ियाँ लंबाई और चौड़ाई दोनों में उंगली के पूरे के बराबर से छोटी होनी चाहिएँ। अबू थौर और अहल-ए-राय ने कहा कि वह उन कंकड़ियों जैसी होनी चाहिएँ जो उंगली से उछाली जाती हैं। हमने रिवायत किया है कि इब्न उमर जमरह की रमी बकरी की मेंगनी के बराबर कंकड़ियों से किया करते थे। इमाम मालिक के इस क़ौल में कोई ख़ास वज़्न नहीं कि: "मैं पसंद करता हूँ कि वह इससे कुछ बड़ी हों", क्योंकि नबी ने खजूर की गुठली के मुशाबेह साइज़ की कंकड़ियों से रमी को सुन्नत क़रार दिया है। हर वह चीज़ जिसे कंकड़ी कहा जा सके, उससे रमी करना जायज़ है, लेकिन सुन्नत की पैरवी करना ज़्यादा बेहतर है। इब्न अल-मुन्ज़िर ने यही कहा है।"

This is the sound position which cannot be opposed by anyone who is guided and follows. An-Nasa'i related that Ibn 'Abbas said, 'The Messenger of Allah said to me on the morning of al-Aqabah while he was on his camel, "Pick up some pebbles for me." I picked up seven pebbles the size of peas. When I put them in his hand, he said, "Something like these. Beware of excess in the din. Those before you were destroyed by excess in the din." His words about 'excess in the din indicate dislike of stoning of the jamrahs with large stones and the fact that doing that is part of excess. Allah knows best.	"यही दुरुस्त मौक़िफ़ है जिसकी मुख़ालफ़त कोई भी हिदायत-याफ़्ता और सुन्नत की पैरवी करने वाला शख़्स नहीं कर सकता। इमाम नसाई ने रिवायत किया है कि इब्न अब्बास ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ने यौम-ए-अक़बा की सुबह, जबकि आप अपनी ऊँटनी पर सवार थे, मुझसे फ़रमाया: "मेरे लिए कंकड़ियाँ चुन लो।" चुनाँचे मैंने मटर के दाने के बराबर सात कंकड़ियाँ चुन लीं। जब मैंने वह आप के हाथ में रखीं तो आप ने फ़रमाया: "ऐसी ही होनी चाहिएँ। दीन में ग़ुलू से बचो, क्योंकि तुमसे पहले लोगों को दीन में ग़ुलू ही ने हलाक किया था।" आप के इस फ़रमान "दीन में ग़ुलू" से मालूम होता है कि जमरात को बड़ी बड़ी पत्थरों से मारना मकरूह है, और ऐसा करना ग़ुलू में शुमार होता है। वल्लाहु आलम।"
If someone has a pebble left in his hand and he does not know which of the jamrahs it was for, he stones the first and the middle and the last one after it. If it has been a long time, he starts over again.	"अगर किसी शख़्स के हाथ में एक कंकरी बाक़ी रह जाए और उसे मालूम न हो कि वह किस जमरह के लिए थी, तो वह पहले जमरह, फिर दरमियानी जमरह, और फिर आख़िरी जमरह को दोबारा कंकरी

	मारे। और अगर काफ़ी वक़्त गुज़र चुका हो तो वह रमी अज़ सर-ए-नौ शुरू करे।"
Malik, ash-Shafi'i, 'Abd al-Malik, Abu Thawr, and the People of Opinion said that if someone puts one jamrah ahead of another, it does not satisfy the requirement unless he stones them in order. Al-Hasan, 'Ata' and some people say that it does satisfy it. Some people cite as evidence the statement of the Prophet: 'There is no harm in someone putting one rite before another.' He said, 'This is not more than a man who combines the prayer and fasting and makes up one of them before the other.' The first shows more caution. Allah knows best.	"इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई, अब्दुल मलिक, अबू थौर और अहल-ए-राए का कहना है कि अगर कोई शख़्स एक जमरह को दूसरे से पहले रमी कर दे, तो यह काफ़ी नहीं होगा जब तक कि वह तरतीब के साथ रमी न करे। हसन बसरी, अता और बाज़ दूसरे अहल-ए-इल्म कहते हैं कि यह काफ़ी हो जाता है। बाज़ लोगों ने इस पर नबी के इस फ़रमान से इस्तिदलाल किया है: "अगर किसी ने एक इबादत को दूसरी पर मुक़द्दम कर दिया तो कोई हरज नहीं।" उन्होंने कहा: "यह उस शख़्स की मानिंद है जो नमाज़ और रोज़े को जमा करे और उनमें से एक की क़ज़ा दूसरे से पहले अदा कर ले।" पहला क़ौल ज़्यादा मुहतात मालूम होता है। वल्लाहु आलम।"
They disagree about the stoning	"उलमा का इस बारे में इख़्तिलाफ़ है

done by someone who is ill and someone stoning on his behalf. Malik said that one may stone on behalf of someone ill or a child who cannot stone. The ill person takes care when he stones and says seven takbirs for each jamrah and he owes a hady. When a sick person recovers during the days of stoning, he stones for himself. According to Malik, he owes a sacrifice in addition to that. Al-Hasan al-Basri, ash-Shafi‘i, Ahmad, Ishaq and the People of Opinion say that one can stone on behalf of a sick person and they do not mention a sacrifice. There is no disagreement about stoning on behalf of a child who is unable to stone. Ibn ‘Umar used to do that. Ad-Daraqutni related that Abu Said al-Khudri said, ‘We said, “Messenger of Allah, we reckon that these jamrahs that are stoned decrease in size.” He said, “What is accepted of it is taken up. If it were not for that, you would see them like	कि बीमार शख़्स की तरफ़ से रमी की जाए या कोई दूसरा उसकी तरफ़ से रमी करे। इमाम मालिक ने कहा है कि बीमार शख़्स या ऐसे बच्चे की तरफ़ से रमी की जा सकती है जो ख़ुद रमी न कर सकता हो। बीमार शख़्स जब रमी करे तो एहतियात करे और हर जमरह पर सात तकबीरें कहे, और उस पर एक हद्य (कुर्बानी) भी लाज़िम होगी। अगर बीमार शख़्स अय्याम-ए-रमी के दौरान सेहतयाब हो जाए तो वह ख़ुद अपनी तरफ़ से रमी करेगा। इमाम मालिक के नज़दीक उस पर इसके साथ एक कुर्बानी भी लाज़िम होगी। हसन बसरी, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद, इस्हाक़ और अहल-ए-राए कहते हैं कि बीमार शख़्स की तरफ़ से रमी की जा सकती है, और वह किसी कुर्बानी का ज़िक्र नहीं करते। इस बात में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि ऐसे बच्चे की तरफ़ से रमी की जा सकती है जो ख़ुद रमी करने से आजिज़ हो। इब्न उमर ऐसा किया करते थे। दारक़ुत्नी ने रिवायत किया है कि अबू सईद ख़ुदरी ने फ़रमाया: "हमने अर्ज़

mountains.”’	किया: ‘या रसूलल्लाह, हमारा ख़याल है कि जिन जमरात को कंकड़ियाँ मारी जाती हैं उनका साइज़ कम होता जाता है।’ आप ने फ़रमाया: ‘जो कुछ उसमें से क़बूल कर लिया जाता है, उसे उठा लिया जाता है। अगर ऐसा न होता तो तुम उन्हें पहाड़ों की मानिंद देखते।’
Ibn al-Mundhir said that scholars agree that if someone wants to leave Mina to return to his country and come out of ihram without staying at Makkah, he can depart after midday when he has stoned during the day after the Day of Sacrifice. That is because Allah says, ‘Those who hurry on in two days have done no wrong.’ He can go as long as there is some of the day left. We related that an-Nakha‘i and al-Hasan said that someone who catches ‘Asr at Mina on the second day of tashriq should not leave until the following day. Ibn al-Mundhir said, ‘It is possible that they both said that	“इब्न अल-मुन्ज़िर ने कहा है कि उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि अगर कोई शख़्स अपने वतन वापस जाने और मक्का में क़ियाम किए बग़ैर एहराम से निकलने के लिए मिना से रवाना होना चाहे, तो वह यौम-ए-नहर के बाद वाले दिन रमी करने के बाद दोपहर ढलने के बाद रवाना हो सकता है। इसकी दलील अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: “जो शख़्स दो दिन में जल्दी करे उस पर कोई गुनाह नहीं।” चुनाँचे वह उस वक़्त तक रवाना हो सकता है जब तक दिन का कुछ हिस्सा बाक़ी हो। हमने रिवायत किया है कि नख़ई और हसन बसरी ने कहा: जो शख़्स दूसरे यौम-ए-तशरीक़ में मिना में अस्र पा ले, उसे अगले दिन तक वहाँ से नहीं

as a recommendation. We take the first view based on the literal text of the Book and the Sunnah.'	जाना चाहिए। इब्न अल-मुन्ज़िर ने कहा: "मुमकिन है कि इन दोनों ने यह बात इस्तिहबाब के तौर पर कही हो। हम पहले क़ौल को इख़्तियार करते हैं क्योंकि वह किताबुल्लाह और सुन्नत के ज़ाहिर नस् के मुताबिक़ है।"
They disagree about whether the people of Makkah can leave in the first departure. We related that 'Umar ibn al-Khattab said, 'Any of the people who wish can leave in the first departure except for Khuzaymah. They may only leave in the final leaving.' Ahmad ibn Hanbal used to say, 'I do not like those who leave in the first departure to be resident in Makkah.' He said, 'It is making light for the people of Makkah.' Ahmad and Ishaq took the meaning of 'Umar's words 'except Khuzaymah' to mean the people of Makkah. Malik used to say about the people of Makkah, 'Anyone with an	"उलमा का इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि आया अहल-ए-मक्का पहले नफ़र में रवाना हो सकते हैं या नहीं। हमने रिवायत किया है कि उमर बिन ख़त्ताब ने फ़रमाया: "लोगों में से जो चाहे पहले नफ़र में रवाना हो सकता है, सिवाए ख़ुज़ैमा के। वह सिर्फ़ आख़िरी नफ़र में रवाना होंगे।" इमाम अहमद बिन हंबल कहा करते थे: "मैं पसंद नहीं करता कि जो लोग पहले नफ़र में रवाना हों वह मक्का के रहने वाले हों।" उन्होंने कहा: "यह अहल-ए-मक्का के लिए हज्ज के मामले को हल्का समझना है।" इमाम अहमद और इस्हाक़ ने उमर के इस क़ौल "सिवाए ख़ुज़ैमा के" का मतलब अहल-ए-मक्का लिया है। इमाम मालिक अहल-ए-मक्का के

excuse can hurry on in two days, but if someone merely wants to lighten the business of the hajj for himself, that is not permitted.' So he thought that hurrying was for those who lived far away.	बारे में फ़रमाया करते थे: "जिस शख़्स के पास कोई उज़्र हो वह दो दिन में जल्दी रवाना हो सकता है, लेकिन अगर कोई शख़्स सिर्फ़ अपने ऊपर हज्ज के काम को हल्का करना चाहता हो तो यह जायज़ नहीं।" लिहाज़ा उनके नज़दीक जल्दी रवानगी उन लोगों के लिए थी जो दूर-दराज़ इलाक़ों से आए हों।"
One group said that the ayah is general and the allowance is for all people: the people of Makkah as well as others. It is for those who want to leave Mina either to reside in Makkah or to return to their homeland. 'Ata' agreed that it is for people in general. Ibn al-Mundhir said, 'It accords with the school of ash-Shafi'i, and we take that position.' Ibn 'Abbās, al-Hasan, 'Ikrimah, Mujāhid, Qatadah and an-Nakha'i said that there is nothing wrong with leaving on the second of the designated days and there is nothing wrong in remaining to the third	"एक गिरोह ने कहा है कि यह आयत आम है और इसमें दी गई इजाज़त तमाम लोगों के लिए है, ख़्वाह अहल-ए-मक्का हों या दूसरे लोग। यह इजाज़त उन लोगों के लिए है जो मिना से रवाना होकर या तो मक्का में क़ियाम करना चाहते हों या अपने वतन वापस जाना चाहते हों। अता भी इस बात के क़ाइल थे कि यह हुक्म तमाम लोगों के लिए आम है। इब्न अल-मुन्ज़िर ने कहा: "यह इमाम शाफ़ई के मज़हब के मुताबिक़ है, और हम भी इसी मौक़िफ़ को इख़्तियार करते हैं।" इब्न अब्बास, हसन बसरी, इक्रिमा, मुजाहिद, क़तादा और नख़ई ने कहा है कि मुक़र्रर दिनों में से दूसरे दिन

day. So the ayah means that all of that is permitted. This division is given attention since some Arabs criticised those who hurried on and some criticised those who did not. Therefore this ayah was revealed to remove any consideration of harm from either position.	रवाना होने में कोई हरज नहीं, और तीसरे दिन तक ठहरने में भी कोई हरज नहीं। लिहाज़ा आयत का मतलब यह है कि यह तमाम सूरतें जायज़ हैं। इस तक़सीम को इसलिए बयान किया गया क्योंकि बाज़ अरब जल्दी रवाना होने वालों पर तनक़ीद करते थे और बाज़ उन लोगों पर तनक़ीद करते थे जो जल्दी रवाना नहीं होते थे। चुनाँचे यह आयत नाज़िल हुई ताकि दोनों सूरतों से गुनाह और मलामत का तसव्वुर ख़त्म कर दिया जाए।"
Ali ibn Abi Talib, Ibn Abbas, Ibn Masud, and Ibrahim an-Nakha'i said that it means that anyone who hurries on is forgiven and whoever stays is forgiven. Their argument is based on the hadith of the Prophet: 'Anyone who makes hajj to this House and does not engage in sexual activity or wrongdoing emerges from his errors like the day his mother bore him.' So Allah's words	"अली बिन अबी तालिब, इब्न अब्बास, इब्न मसऊद और इबराहीम नख़ई ने कहा है कि इसका मतलब यह है कि जो जल्दी रवाना हो जाए वह भी बख़्शा गया, और जो ठहर जाए वह भी बख़्शा गया। उनकी दलील नबी की इस हदीस पर मबनी है: "जो शख़्स इस घर का हज्ज करे और न कोई जिन्सी अमल करे और न गुनाह, वह अपने गुनाहों से ऐसा निकलता है जैसे उस दिन जब उसकी माँ ने उसे जना था।"

'have done no wrong' wrong' is a general negation and absolution. Mujahid said that the ayah means: there is no wrongdoing for those who hurry on or stay until the following year. This report has an isnad. Abu-l-Aliyah said about the ayah, 'There is no wrongdoing for someone who remains godfearing for the rest of his life. The hajj is absolutely forgiven,' meaning that all his sins have departed provided he remains godfearing for the rest of his life. Abu Ṣāliḥ and others said that the ayah means that there is no wrongdoing for someone who is fearful of killing game and avoiding that which must be avoided in the hajj. He also said, 'Someone who is godfearing in his hajj and performs it fully is accepted.'	लिहाज़ा अल्लाह तआला के इस फ़रमान "उस पर कोई गुनाह नहीं" का मतलब आम नफ़ी और बराअत है। मुजाहिद ने कहा कि आयत का मतलब यह है कि जो लोग जल्दी रवाना हो जाएँ या अगले साल तक ठहरे रहें, दोनों पर कोई गुनाह नहीं। इस रिवायत की सनद मौजूद है। अबुल आलिया ने इस आयत के बारे में कहा: "उस शख़्स पर कोई गुनाह नहीं जो अपनी पूरी ज़िंदगी तक़वा पर क़ायम रहे। हज्ज मुकम्मल तौर पर बख़्श दिया जाता है।" यानी उसके तमाम गुनाह मिटा दिए जाते हैं, बशर्ते कि वह पूरी ज़िंदगी तक़वा पर क़ायम रहे। अबू सालेह और दूसरे लोगों ने कहा कि आयत का मतलब यह है कि उस शख़्स पर कोई गुनाह नहीं जो शिकार करने से बचे और उन चीज़ों से इज्तिनाब करे जिनसे हज्ज में बचना ज़रूरी है। उन्होंने यह भी कहा: "जो शख़्स अपने हज्ज में तक़वा इख़्तियार करे और उसे मुकम्मल तौर पर अदा करे, उसका हज्ज क़बूल होता है।"

those of them who are fearful of Allah.	“उन में से वह लोग जो अल्लाह से डरने वाले हैं।”
This statement is connected to forgiveness. It implies that there is forgiveness for those who are fearful of Allah. This is the interpretation of Ibn Masud and ‘Alī. Qatadah said, ‘Ibn Masud mentioned to us that forgiveness is reserved for those who remain fearful of Allah after finishing the hajj and avoid all acts of disobedience.’ Al-Akhfash said that it implies: ‘Forgiveness is for those who are fearful of Allah.’ One of them said that it refers to not killing game in ihram or in the Haram. It is said that there is safety for anyone who is fearful of Allah. This is related from Ibn ‘Umar. It is also said that it means safety for those who are godfearing. It is also said that it is connected to the remembrance inherent in the word, ‘Remember’ which begins the ayah, meaning that remembrance is confined to those who are fearful of Allah.	"यह बयान मग़फ़िरत के साथ मरबूत है। इसका मतलब यह है कि मग़फ़िरत उन लोगों के लिए है जो अल्लाह से डरते हैं। यही तफ़्सीर इब्न मसऊद और अली इब्न अबी तालिब से मनक़ूल है। क़तादा ने कहा: “इब्न मसऊद ने हमसे बयान किया कि मग़फ़िरत उन लोगों के लिए मख़सूस है जो हज्ज मुकम्मल करने के बाद भी अल्लाह से डरते रहें और हर क़िस्म की नाफ़रमानी से बचें।” अल-अख़फ़श ने कहा कि इसका मफ़हूम यह है: “मग़फ़िरत उन लोगों के लिए है जो अल्लाह से डरते हैं।” बाज़ अहल-ए-इल्म ने कहा कि इससे मुराद एहराम या हरम में शिकार न करना है। यह भी कहा गया है कि जो अल्लाह से डरता है, उसके लिए अमन है। यह क़ौल इब्न उमर से मरवी है। यह भी कहा गया है कि इसका मतलब यह है कि सलामती सिर्फ़ मुत्तक़ी लोगों के लिए है। यह भी कहा गया है कि इसका तअल्लुक़ आयत के आग़ाज़ में आने वाले लफ़्ज़ “याद करो” से है, यानी

Allah commands us to be fearful of Him and reminds us of the Gathering and Standing.	अल्लाह की याद सिर्फ़ उन लोगों को नसीब होती है जो उससे डरते हैं। अल्लाह तआला हमें अपना ख़ौफ़ इख़्तियार करने का हुक्म देता है और हश्र और मैदान-ए-क़ियामत में खड़े होने की याद दिलाता है।"
Among the people there is someone whose words about the life of this world excite your admiration, and he calls Allah to witness what is in his heart, while he is in fact the most hostile of adversaries. [2:204]	"लोगों में बाज़ ऐसे भी हैं जिनकी दुनियावी ज़िंदगी के बारे में गुफ़्तगू आपको बहुत पसंद आती है, और वह अपने दिल की बातों पर अल्लाह को गवाह बनाता है, हालाँकि हक़ीक़त में वह सबसे बढ़कर झगड़ालू और सख़्त दुश्मन होता है।" [अल-बक़रह: 204]
Among the people there is someone whose words about the life of this world excite your admiration,	"लोगों में बाज़ ऐसे भी हैं जिनकी दुनियावी ज़िंदगी के बारे में गुफ़्तगू आपको पसंद आती है।"
This ayah is here because Allah has just mentioned in His words a little earlier that the aspiration of some people is confined to this world: 'Our Lord, give us good in this world.' The believers are those	"यह आयत यहाँ इसलिए ज़िक्र की गई है कि अल्लाह तआला इससे कुछ पहले यह बयान फ़रमा चुका है कि बाज़ लोगों की ख़्वाहिश सिर्फ़ दुनिया तक महदूद होती है: "ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अता फ़रमा।"

who ask for the good of both the worlds. Hypocrites are mentioned because hypocrites make a display of faith while concealing disbelief. As-Suddi and other commentators say that it was revealed about al-Akhnas ibn Sharīq. His name was actually Ubayy and al-Akhnas was a nickname for him because on the day of the Battle of Badr, he withdrew (khanasa) from fighting the Messenger of Allah with three hundred men of his allies of the Banu Zuhrah. This will be explained in Al 'Imran. He was a man of sweet words and good appearance. He came to the Prophet and made a display of Islam and said, 'Allah knows that I am telling the truth, and then after that he ran away. On his way he passed some crops and animals belonging to some Muslims and burned the crops and hamstrung the donkeys. Al-Mahdawi said that Allah's words: 'But do not obey any vile swearer of oaths, and backbiter, slandermonger',	जबकि मोमिन वह हैं जो दोनों जहानों की भलाई माँगते हैं। मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र इसलिए किया गया है कि वह ईमान का इज़्हार करते हैं लेकिन कुफ़्र को छुपाते हैं। सुद्दी और दीगर मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि यह आयत अल-अख़नस बिन शरीक़ के बारे में नाज़िल हुई। उसका अस्ल नाम उबय्य था और "अल-अख़नस" उसका लक़ब था, क्योंकि बद्र के दिन वह अपने क़बीला बनू ज़ुहरह के तीन सौ आदमियों को लेकर रसूलुल्लाह से लड़ाई से पीछे हट गया था। इसकी वज़ाहत आल-ए-इमरान में आएगी। वह बड़ा ख़ुश-गुफ़्तार और ख़ुश-शक्ल आदमी था। वह नबी के पास आया, इस्लाम का इज़्हार किया और कहा: "अल्लाह जानता है कि मैं सच कह रहा हूँ।" फिर उसके बाद वह वापस चला गया। रास्ते में वह कुछ मुसलमानों की खेतियों और जानवरों के पास से गुज़रा, तो उसने खेतियों को जला दिया और गधों की कोंचें काट डालीं। अल-महदवी ने कहा कि अल्लाह तआला का यह फ़रमान भी उसी के

were also revealed about him as were the words: 'Woe to every fault-finding slanderer.'	बारे में नाज़िल हुआ: "और किसी ज़लील, बहुत क़समें खाने वाले, ऐब-जू, चुग़लख़ोर की बात न मानो।" इसी तरह यह आयत भी: "हर ऐब निकालने वाले, ताना देने वाले के लिए हलाकत है।""
Ibn 'Atiyyah said, 'It is not established that al-Akhnas became Muslim.' Ibn 'Abbas says that it was revealed about some hypocrites who spoke about those killed in the Raji expedition, saying that they should have stayed at home. Then this was revealed to describe the hypocrites while those who were martyred in Raji are referred to in the words: 'And among the people there are some who give up everything.'	"इब्न अतिय्या ने कहा: "यह साबित नहीं है कि अल-अख़नस मुसलमान हुआ था।" इब्न अब्बास कहते हैं कि यह आयत बाज़ मुनाफ़िक़ीन के बारे में नाज़िल हुई जिन्होंने वाक़िआ-ए-रजीअ में शहीद होने वालों के बारे में कहा था कि उन्हें अपने घरों में रहना चाहिए था। फिर यह आयत मुनाफ़िक़ीन की सिफ़त बयान करने के लिए नाज़िल हुई, जबकि रजीअ में शहीद होने वालों का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में किया गया है: "और लोगों में बाज़ ऐसे हैं जो अल्लाह की रज़ा के लिए अपनी जान तक क़ुर्बान कर देते हैं।"
Qatadah, Mujahid and a group of scholars said that the ayah was revealed about anyone who conceals disbelief, hypocrisy,	"क़तादा, मुजाहिद और अहल-ए-इल्म की एक जमाअत ने कहा कि यह आयत हर उस शख़्स के बारे में नाज़िल हुई है जो कुफ़्र, निफ़ाक़, झूठ

lying or vindictiveness while displaying the opposite of that in what he says. Therefore the meaning is general and unrestricted. This is akin to something at-Tirmidhi quotes as being contained in one of the books of Allah, which goes: ‘There are some slaves of Allah whose tongues are sweeter than honey while their hearts are more bitter than aloes. They appear to people to be like gentle sheep while they use the din to buy this world. Allah Almighty says: “Do they attempt to delude Me? Are they bold towards Me? I swear by My Self that I will destine for them a trial that will leave someone forbearing bewildered!”	या दिल की दुश्मनी को छुपाता है, जबकि अपनी गुफ़्तगू में उसके बरअक्स ज़ाहिर करता है। लिहाज़ा इसका मफ़हूम आम और ग़ैर महदूद है। यह उस रिवायत के मुशाबेह है जिसे तिर्मिज़ी ने नक़्ल किया है कि अल्लाह की बाज़ किताबों में यह बात मज़कूर है: "अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे होते हैं जिनकी ज़बानें शहद से ज़्यादा मीठी होती हैं, जबकि उनके दिल एलोह (कड़वी जड़ी-बूटी) से भी ज़्यादा तल्ख़ होते हैं। वह लोगों के सामने नर्म मिज़ाज भेड़ों की मानिंद ज़ाहिर होते हैं, मगर दीन के ज़रिये दुनिया हासिल करते हैं।" अल्लाह तआला फ़रमाता है: "क्या वह मुझे धोखा देने की कोशिश करते हैं? क्या वह मेरे मुक़ाबले में जुरअत करते हैं? मैं अपनी ज़ात की क़सम खाता हूँ कि मैं उन पर ऐसा फ़ित्ना मुसल्लत करूँगा जो बर्दबार शख़्स को भी हैरान व परेशान कर देगा!"
and he calls Allah to witness what is in his heart,	"और वह अपने दिल की बातों पर अल्लाह को गवाह बनाता है।"
He does this by saying, ‘Allah	"वह यह कहकर ऐसा करता है:

knows that I am telling the truth, whereas Allah knows that he is different to what he says. As Allah says: 'Allah bears witness that the hypocrites are certainly liars'.	"अल्लाह जानता है कि मैं सच कह रहा हूँ", हालाँकि अल्लाह जानता है कि वह अपनी बात के ख़िलाफ़ है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ यक़ीनन झूठे हैं।"
The reading of Ibn Masud reverses the position of 'Allahu' and 'yashhadu' in the ayah, (which would mean 'Allah bears witness to…') but the majority reading is stronger in censure because he remains adamant in holding to good words while something other than that is manifesting itself inside him.	"इब्न मसऊद की क़िराअत में आयत में "अल्लाह" और "यश्हद" की जगह बदल दी गई है, जिसका मतलब यह बनता है: "अल्लाह गवाही देता है…" लेकिन जम्हूर की क़िराअत मज़म्मत के एतिबार से ज़्यादा क़वी है, क्योंकि वह अच्छी बातों पर इसरार करता रहता है जबकि उसके बातिन में उसके ख़िलाफ़ चीज़ छुपी हुई होती है।"
Our scholars say that this ayah calls attention to the necessity of caution in dealing with both matters of the din and matters of the material world, and the need to verify the states of witnesses and qadis. It points out that a judge should not base his judgement merely on the outward states of people and any display of faith and	"हमारे उलमा कहते हैं कि यह आयत दीन और दुनिया दोनों मुआमलात में एहतियात बरतने की ज़रूरत की तरफ़ तवज्जोह दिलाती है, नीज़ गवाहों और क़ाज़ियों के हालात की तहक़ीक़ की अहमियत को ज़ाहिर करती है। यह इस बात की निशानदही करती है कि क़ाज़ी को सिर्फ़ लोगों के ज़ाहिरी हालात और उनके ईमान व नेकी के इज़हार की

rectitude they make, without investigating their inward, because Allah will make the inward states of people clear. Some people can speak sweetly while intending evil.	बुनियाद पर फ़ैसला नहीं करना चाहिए, जब तक कि वह उनके बातिन की तहक़ीक़ न कर ले, क्योंकि अल्लाह तआला लोगों के बातिनी हालात को ज़ाहिर फ़रमा देगा। बाज़ लोग मीठी बातें करते हैं जबकि उनके इरादे बुरे होते हैं।"
If it is said that this is contradicted by the words of the Prophet, 'I was commanded to fight people until they say, "There is no god but Allah" …' the answer is that that was at the beginning of Islam when people's Islam was sound, before corruption became widespread. That is what Ibn al-Arabi said. The sound position, however, is that a judge should judge by the outward until something contrary to it becomes clear, going by the statement of 'Umar ibn al-Khattab in al-Bukhari, 'O people, Revelation has come to an end. We now judge according to what appears to us of your actions. If	"अगर यह कहा जाए कि इस बात की तर्दीद नबी के इस फ़रमान से होती है: "मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से उस वक़्त तक क़िताल करूँ जब तक वह यह न कह दें: 'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं'…" तो इसका जवाब यह है कि यह इस्लाम के इब्तिदाई दौर की बात थी, जब लोगों का इस्लाम दुरुस्त और ख़ालिस होता था, इससे पहले कि फ़साद आम हो जाता। यह बात इब्न अल-अरबी ने कही है। ताहम सही मौक़िफ़ यह है कि क़ाज़ी को ज़ाहिरी हालात के मुताबिक़ फ़ैसला करना चाहिए, जब तक उसके ख़िलाफ़ कोई वाज़ेह बात ज़ाहिर न हो जाए। इसकी दलील उमर इब्न अल-ख़त्ताब का वह क़ौल है जो सहीह अल-बुख़ारी में मज़कूर

someone exhibits good, we consider him trustworthy and bring him near. We know nothing of what is concealed within him; Allah will call him to account for what is in his heart. If someone exhibits bad to us, we do not consider him trustworthy or believe him, even if it happens to be that his heart is good.’	है: “ऐ लोगो! वही का सिलसिला ख़त्म हो चुका है। अब हम तुम्हारे आमाल के ज़ाहिर के मुताबिक़ फ़ैसला करते हैं। जो शख़्स हमारे सामने अच्छाई ज़ाहिर करे, हम उसे अमानतदार समझते हैं और अपने क़रीब करते हैं। हमें उसके बातिन का कोई इल्म नहीं; अल्लाह उसके दिल की बातों का हिसाब लेगा। और जो शख़्स हमारे सामने बुराई ज़ाहिर करे, हम न उसे अमानतदार समझते हैं और न उसकी तस्दीक़ करते हैं, चाहे हक़ीक़त में उसका दिल अच्छा ही क्यों न हो।”
while he is in fact the most hostile of adversaries.	"हालाँकि हक़ीक़त में वह सबसे बढ़कर झगड़ालू और सख़्त दुश्मन होता है।"
The word ‘aladad’ (hostile) is derived from the word ladidan, meaning both sides of the neck so that the implication is that his hostility is deeply rooted. The word ‘khisam’ (adversaries) is a verbal noun from khasama, and it is also said to be the plural of khasm. Az-Zajjaj said that. It means	"लफ़्ज़ “अलद्द” (सख़्त दुश्मन या झगड़ालू) लफ़्ज़ “लदीद” से निकला है, जिसका मअनी गर्दन के दोनों किनारे हैं। इससे इशारा यह मिलता है कि उसकी दुश्मनी गहरी जड़ों वाली और पुख़्ता होती है। लफ़्ज़ “ख़िसाम” (झगड़ालू या मुख़ालिफ़) फ़ेअल “ख़ासम” से मसदर है, और यह भी कहा गया है

that he is the most vehement in argumentation when he speaks to you and replies to you and you find his words sweet, even though what he says is inwardly false. This indicates that argumentation is only permitted when the inward and outward are the same. We read in Sahih Muslim that 'A'ishah reported that the Messenger of Allah said, 'The man Allah most hates is "the most hostile of adversaries".'	कि यह "ख़सम" की जमा है। यह बात ज़ज्जाज ने कही है। इसका मतलब यह है कि जब वह तुमसे गुफ़्तगू करता है या जवाब देता है तो बहस व झगड़े में सबसे ज़्यादा सख़्त होता है, और तुम्हें उसकी बातें ख़ुशगवार महसूस होती हैं, हालाँकि उसके बातिन में उसकी बात झूठ पर मबनी होती है। यह इस बात की दलील है कि बहस व मुनाज़रा सिर्फ़ उसी वक़्त जायज़ है जब इंसान का ज़ाहिर और बातिन एक जैसे हों। सहीह मुस्लिम में रिवायत है कि आइशा बिन्त अबी बक्र ने बयान किया कि रसूल अल्लाह ने फ़रमाया: "अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा नापसंदीदा शख़्स वह है जो सबसे ज़्यादा झगड़ालू दुश्मन हो।"
When he leaves you, he goes about the earth corrupting it, destroying crops and animals Allah does not love corruption. [2:205]	"और जब वह तुम्हारे पास से जाता है तो ज़मीन में फ़साद फैलाने के लिए दौड़-धूप करता है, खेतियों और जानवरों को तबाह करता है, और अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता।" [अल-बक़रह: 205]
When he leaves you, he goes	"और जब वह तुम्हारे पास से जाता है

about the earth corrupting it,	तो ज़मीन में फ़साद फैलाने के लिए दौड़-धूप करता है।"
The verb 'tawalla' (leaves) is said to imply being misguided, angry and arrogant and 'sa a' (goes about) to imply scheming and striving to bring about reverses for Islam and its people, as Ibn Jurayj and others have said. It is also said that it is the action of a single person, so he turns his back and leaves you. Say is to go about on his feet, cutting off the road and corrupting it as Ibn 'Abbas and others say. Both forms of say are corruption.	"फ़ेअल "तवल्ला" (चला जाता है या मुँह मोड़ लेता है) के बारे में कहा गया है कि इसमें गुमराही, ग़ुस्सा और तकब्बुर का मफ़हूम पाया जाता है, जबकि "सआ" (दौड़-धूप करना) से मुराद इस्लाम और अहल-ए-इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िश करना और उनके लिए नुक़सानदेह हालात पैदा करने की कोशिश करना है, जैसा कि इब्न जुरैज और दीगर अहल-ए-इल्म ने कहा है। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद एक शख़्स का अमल है, यानी वह तुमसे पीठ फेर कर चला जाता है। "सआ" का मतलब अपने क़दमों से चल-फिर कर रास्ते काटना और ज़मीन में फ़साद फैलाना है, जैसा कि इब्न अब्बास और दीगर ने बयान किया है। "सआ" की दोनों सूरतें फ़साद ही हैं।"
destroying	" बर्बाद करता है।"
This is added to 'corrupting'. Although the ayah is held to refer specifically to al-Akhnas	"यह लफ़्ज़ "फ़साद फैलाने" पर मज़ीद इज़ाफ़ा है। अगरचे यह आयत ख़ास तौर पर अल-अख़नस के

burning crops and killing camels, aṭ-Tabari said that its meaning is general and should be extended to all who fit its description and merit the curse and punishment. Some scholars said that if someone kills a donkey or burns a haystack, he must be blameworthy and shame is attached to him until the Day of Rising. Mujahid said, 'What is meant is that wrongdoers work corruption in the earth so that Allah withholds the rain from it, causing crops and animals to die.' It is said that 'crops' are wives and 'animals' are children. The reason for this is that hypocrisy leads to disunity and fighting and that causes people to be killed. Az-Zajjaj expressed that idea. Say in the land is 'running' and this is an expression for causing sedition and contention between people. Allah knows best. We find in a ḥadith: 'When people see an oppressor and do not take hold of his hands [to stop him], Allah is about to envelop them	खेतियाँ जलाने और ऊँटों को हलाक करने के बारे में समझी जाती है, लेकिन तबरी ने कहा है कि इसका मफ़हूम आम है और हर उस शख़्स को शामिल है जिसमें यह सिफ़ात पाई जाएँ और जो लानत और अज़ाब का मुस्तहिक़ हो। बाज़ उलमा ने कहा कि अगर कोई शख़्स किसी गधे को मार डाले या भूसे का ढेर जला दे तो वह क़ाबिल-ए-मज़म्मत होता है और क़ियामत के दिन तक उस पर रुसवाई चिपकी रहती है। मुजाहिद ने कहा: "इससे मुराद यह है कि ज़ालिम लोग ज़मीन में फ़साद करते हैं, जिसके नतीजे में अल्लाह बारिश रोक लेता है, और उससे खेतियाँ और जानवर हलाक हो जाते हैं।" यह भी कहा गया है कि "खेतियाँ" से मुराद औरतें हैं और "जानवर" से मुराद बच्चे हैं। इसकी वजह यह है कि निफ़ाक़ इख़्तिलाफ़ और लड़ाई का सबब बनता है, और उसके नतीजे में लोग क़त्ल होते हैं। ज़ज्जाज ने इसी मफ़हूम को बयान किया है। ज़मीन में "सई" (दौड़-धूप) से मुराद भाग-दौड़ करना है, और यह लोगों

with a punishment from Him.'	के दरमियान फ़साद और झगड़ा पैदा करने के लिए बतौर-ए-इस्तिआरा इस्तेमाल हुआ है। और अल्लाह ही बेहतर जानता है। एक हदीस में आया है: "जब लोग किसी ज़ालिम को देखें और उसके हाथ न पकड़ें [यानी उसे ज़ुल्म से न रोकें] तो क़रीब है कि अल्लाह उन्हें अपने अज़ाब में घेर ले।"
crops and animals.	"खेतियाँ और जानवर।"
The root of the word 'harth' (crops) linguistically means splitting and the word for plough (mihrath) comes from it since it splits the earth. By extension harth comes to mean gaining and amassing wealth. We find in a hadith, 'Cultivate (ahrith) for this world as if you are going to live forever.' Harth is agriculture. Harrath is a ploughman. Other uses of the verb are ahratha mean to study thoroughly, to ride an animal until it is exhausted, and to poke the fire. Mihrath is also a poker according to al-Jawhari.	"लफ़्ज़ "हरस" (खेती) की अस्ल लुग़वी मअनी ज़मीन को चीरना और फाड़ना है। इसी से "मिहरास" (हल) का लफ़्ज़ निकला है, क्योंकि वह ज़मीन को चीरता है। फिर तवस्सु के तौर पर "हरस" का मअनी माल कमाना और जमा करना भी होने लगा। एक हदीस में आया है: "दुनिया के लिए इस तरह खेती करो (मेहनत करो) गोया तुम हमेशा ज़िंदा रहोगे।" यहाँ "हरस" से मुराद ज़िराअत है। "हर्रास" हल चलाने वाले को कहते हैं। इस फ़ेअल के दीगर इस्तेमालात में

	"अहरस" का मअनी किसी चीज़ का गहरा मुतालआ करना, किसी जानवर को इतना दौड़ाना कि वह थक जाए, और आग को कुरेदना भी है। "मिहरास" का एक मअनी आग कुरेदने की सलाख भी है, जैसा कि अल-जौहरी ने बयान किया है।"
The word 'nasl' (animals) denotes any progeny of a female. Its root meaning is 'to leave and fall'. The verb is used for hair falling out and feathers moulting. We find it used in the ayah: 'they will be sliding (yansiluna) from their graves towards their Lord' and: 'rush down (yansiluna) from every slope.' So the words in the ayah indicate planting and cultivating the earth, planting trees to bear fruit, and seeking increase in livestock which provide livelihood for a person. This refutes those who espouse abandoning secondary means.	"लफ़्ज़ "नस्ल" (जानवर या औलाद) हर उस पैदावार और नस्ल के लिए बोला जाता है जो किसी मादा से पैदा हो। इसका अस्ल मअनी "छोड़ना और गिरना" है। यही फ़ेअल बालों के झड़ने और परिंदों के पर गिरने के लिए भी इस्तेमाल होता है। यही लफ़्ज़ क़ुरआन की इस आयत में आया है: "वह अपनी क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ तेजी से निकलते हुए आएँगे", और दूसरी आयत में: "वह हर टीले से दौड़ते हुए उतरेंगे।" लिहाज़ा आयत के अल्फ़ाज़ ज़मीन में काश्तकारी करने, दरख़्त लगाने ताकि वह फल दें, और मवेशियों में इज़ाफ़ा हासिल करने की तरफ़ इशारा करते हैं, क्योंकि यही चीज़ें इंसान की मआशियत और रोज़ी का ज़रिया बनती हैं। यह उन लोगों के

	नज़रिये की तर्दीद है जो ज़ाहिरी असबाब इख़्तियार करने को तर्क करने के क़ाइल हैं।"
Allah does not love corruption.	"और अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता।"
Al-Abbas ibn al-Faḍl said that 'fasad' (corruption) means ruin. Said ibn al-Musayyab said that clipping dirhams forms part of corruption in the land. 'Aṭa' said, 'A man called 'Aṭa' ibn Munabbih assumed ihram in a jubbah and the Prophet told him to remove it.' Qatadah said of 'Ata', 'We heard that he tore it in half.' 'Ata' said, 'Allah does not love corruption.'	"अल-अब्बास बिन अल-फ़ज़्ल ने कहा कि "फ़साद" का मअनी तबाही है। सईद बिन अल-मुसय्यब ने कहा कि दिरहमों को तराशना भी ज़मीन में फ़साद की एक सूरत है। अता ने कहा: "अता बिन मुनब्बिह नामी एक शख़्स ने जुब्बा पहन कर एहराम बाँधा, तो नबी ने उसे वह उतारने का हुक्म दिया।" क़तादा ने अता के बारे में कहा: "हमने सुना कि उसने उसे दो टुकड़े कर डाला।" अता ने कहा: "अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता।"
The ayah is general to all kinds of corruption in the land, in respect of either property or the din, and that is the sound position, Allah willing. It is said that He does not love corruption in people of righteousness, or He does not	"यह आयत ज़मीन में हर क़िस्म के फ़साद को आम तौर पर शामिल है, ख़्वाह वह माल के बारे में हो या दीन के बारे में, और इंशा अल्लाह यही सही मौक़िफ़ है। यह भी कहा गया है कि अल्लाह नेक लोगों में फ़साद को पसंद नहीं करता, या यह कि वह फ़साद को बतौर-ए-दीन पसंद नहीं

love it as a din.	करता।"
When he is told to be fearful of Allah, he is seized by a feeling of might which drives him to wrongdoing. Hell will be enough for him! What an evil resting-place! [2:206]	"और जब उसे कहा जाता है कि अल्लाह से डरो, तो गुरूर और तकब्बुर उसे गुनाह पर आमादा कर देता है। उसके लिए जहन्नम ही काफ़ी है, और वह यक़ीनन बहुत बुरा ठिकाना है।"[अल-बक़रह: 206]
This describes the chief attribute of the unbeliever and the hypocrite: arrogance. It is disliked for a believer to fall into this. 'Abdullah said, 'It is enough wrong action for a man that he says to his brother, "Fear Allah," and he retorts, "Mind your own business! Someone like you advises me!"' The word ''izzah' (might) denotes strength and dominance, as it is used in. It is also said to mean zeal. It is said that it means unapproachable self-esteem. He exalts himself and when that arrogance takes hold of him, that leads him to commit wrong action. Qatadah said, 'It means that when he is told to slow down, he is increased in his advancing	"यह काफ़िर और मुनाफ़िक़ की सबसे बड़ी सिफ़त को बयान करता है, और वह है तकब्बुर। मोमिन के लिए यह नापसंदीदा है कि वह इसमें मुब्तला हो। अब्दुल्लाह ने कहा: "किसी आदमी के गुनाहगार होने के लिए यही काफ़ी है कि उसका भाई उसे कहे: 'अल्लाह से डरो' और वह जवाब दे: 'तुम अपने काम से काम रखो! क्या तुम जैसा शख़्स मुझे नसीहत करेगा?'" लफ़्ज़ "इज़्ज़त" ताक़त और ग़लबे के मअनी में आता है, और यह भी कहा गया है कि इससे मुराद जोश व हमीयत है। एक क़ौल यह भी है कि इसका मतलब ऐसा ख़ुद-पसंद वक़ार है जिस तक कोई पहुँच न सके। वह अपने आप को बड़ा समझता है, और जब यह तकब्बुर उस पर ग़ालिब आ जाता है तो वह उसे गुनाह पर

towards disobedience. It means that his pride leads him to commit wrong action, so that he falls into disbelief for the sake of might and the zeal of the Jahiliyyah. It is like the ayah: 'Those who disbelieve are full of vainglory and entrenched in hostility.' It is said that it means that arrogance and zeal make him refuse to accept the warning about the wrong action that is in his heart, which constitutes hypocrisy.	आमादा कर देता है। क़तादा ने कहा: "इसका मतलब यह है कि जब उसे रुकने के लिए कहा जाता है तो वह नाफ़रमानी में और ज़्यादा आगे बढ़ जाता है।" यानी उसका गुरूर उसे गुनाह पर उभारता है, यहाँ तक कि वह इज़्ज़त और जाहिलिय्यत की हमीयत की ख़ातिर कुफ़्र में जा गिरता है। यह उस आयत की मानिंद है: "जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वह गुरूर और सख़्त मुख़ालिफ़त में मुब्तला हैं।" यह भी कहा गया है कि इससे मुराद यह है कि तकब्बुर और हमीयत उसे उस बुराई से बाज़ आने से रोक देते हैं जो उसके दिल में मौजूद होती है, और यही निफ़ाक़ है।"
It is mentioned that a Jew needed something from Harun ar-Rashid and he kept going to his door for a year without his need being met. So he stood at his door and when Harun came out, he ran and stood in front of him. He said, 'Fear Allah, Amir al-Muminin!' Harun dismounted and went down	"ज़िक्र किया जाता है कि एक यहूदी को हारून अर-रशीद से कोई ज़रूरत थी, और वह एक साल तक उसके दरवाज़े पर आता रहा मगर उसकी हाजत पूरी न हुई। फिर एक दिन वह उसके दरवाज़े पर खड़ा हुआ, और जब हारून बाहर निकला तो वह दौड़ कर उसके सामने खड़ा हो गया। उसने कहा: "ऐ अमीरुल

into prostration. When he raised his head. He commanded that his need be met. When he returned, it was said to him, 'Amir al-Muminin! Do you dismount from your animal for the words of a Jew!' 'No,' he answered, 'but I remembered the words of Allah: "When he is told to have taqwa of Allah, he is seized by pride which drives him to wrongdoing. Hell will be enough for him! What an evil resting-place!" That is enough of a consequence and repayment.'	मोमिनीन! अल्लाह से डरिए!" हारून फ़ौरन अपनी सवारी से उतर गया और सज्दे में गिर पड़ा। जब उसने सर उठाया तो हुक्म दिया कि उसकी हाजत पूरी की जाए। जब वह वापस लौटा तो उससे कहा गया: "ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप एक यहूदी की बात पर अपनी सवारी से उतर गए?" उसने जवाब दिया: "नहीं, बल्कि मुझे अल्लाह तआला का यह फ़रमान याद आ गया: 'और जब उसे कहा जाता है कि अल्लाह से डरो तो गुरूर उसे गुनाह पर आमादा कर देता है। उसके लिए जहन्नम काफ़ी है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है।' यही अंजाम और बदला काफ़ी है।"
The usual meaning of the word 'resting place' (mihad) is a place prepared for sleep. It is also used for a child's cradle. Jahannam (Hell) is referred to as one because it is where the unbelievers will remain. It is also said that here 'Hell' is an appositive for 'resting-place'.	"लफ़्ज़ "मिहाद" (ठिकाना या बिछौना) का आम मअनी वह जगह है जो सोने के लिए तैयार की जाए। यह लफ़्ज़ बच्चे के गहवारे के लिए भी इस्तेमाल होता है। जहन्नम को भी "मिहाद" कहा गया है, क्योंकि काफ़िर उसमें हमेशा रहेंगे। यह भी कहा गया है कि यहाँ "जहन्नम" लफ़्ज़ "बुरा ठिकाना" की वज़ाहत और

	बदल के तौर पर आया है।"
And among the people there are some who give up everything, desiring the good pleasure of Allah. Allah is Ever-Gentle with His slaves. [2:207]	"और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए अपनी जान तक बेच देते हैं। और अल्लाह अपने बंदों पर निहायत मेहरबान है|" [अल-बक़रह: 207]
After speaking of the actions of the hypocrites, Allah talks about the behaviour of the believers. It is said that the ayah was actually revealed about Suhayb. He emigrated to the Messenger of Allah and some people of Quraysh followed him. He dismounted, took out what was in his quiver and took up his bow and said, 'You know that I am the best shot among you. By Allah you will not reach me until I have shot what is in my quiver and struck with my sword until nothing remains in my hands and then do what you wish.' They said, 'We will not let you leave us as a wealthy man when you came to us with nothing. Direct us to your	"मुनाफ़िक़ों के आमाल का ज़िक्र करने के बाद अल्लाह तआला मोमिनों के किरदार का बयान फ़रमाता है। कहा गया है कि यह आयत दरअसल सुहैब के बारे में नाज़िल हुई। वह रसूल अल्लाह की तरफ़ हिजरत कर रहे थे कि कुरैश के कुछ लोग उनके पीछे लग गए। उन्होंने अपनी सवारी से उतर कर तरकश में मौजूद तीर निकाले, कमान संभाली और कहा: "तुम जानते हो कि मैं तुम में सबसे बेहतरीन तीर अंदाज़ हूँ। अल्लाह की क़सम! तुम मुझ तक उस वक़्त तक नहीं पहुँच सकते जब तक मैं अपने तरकश के तमाम तीर न चला लूँ, और अपनी तलवार से उस वक़्त तक न लड़ूँ जब तक मेरे हाथ में कुछ बाक़ी न रहे, फिर जो चाहो करो।" उन्होंने कहा: "हम तुम्हें इस हाल में

property in Makkah and we will let you go.' They made an agreement with him to that effect and he did that. When he came to the Messenger of Allah, this ayah was revealed and the Prophet said to him, 'A profitable sale, Abu Yahya!' and recited it to him. Razin transmitted it. Said ibn al-Musayyab said that.	नहीं जाने देंगे कि तुम हमारे दरमियान मालदार बन जाओ, जबकि तुम हमारे पास ख़ाली हाथ आए थे। मक्का में अपने माल का पता हमें बता दो, हम तुम्हें जाने देंगे।" चुनाँचे उन्होंने इस शर्त पर सुहैब से मुआहिदा कर लिया और सुहैब ने ऐसा ही किया। जब वह रसूल अल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो यह आयत नाज़िल हुई, और नबी ने उनसे फ़रमाया: "ऐ अबू यह्या! यह सौदा बहुत नफ़ा बख़्श रहा!" फिर आप ने यह आयत उन्हें पढ़ कर सुनाई। इसे राज़ीन ने रिवायत किया है। सईद बिन अल-मुसय्यब ने भी यही बयान किया है।"
Commentators say that the idolaters took Suhayb and tortured him and Suhayb said to them, 'I am an old man. Your security will not be prejudiced if I am with other than you. Will you not take my wealth and leave me with my din?' They did that and he stipulated a camel and provision for himself and went	"मुफस्सिरीन कहते हैं कि मुशरिकीन ने सुहैब को पकड़ लिया और उन्हें तकलीफ़ें दीं। इस पर सुहैब ने उनसे कहा: "मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ। अगर मैं तुम्हारे अलावा किसी और के साथ रहूँ तो उससे तुम्हारी सलामती को कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा। क्या तुम मेरा माल लेकर मुझे मेरे दीन के साथ छोड़ नहीं देते?" चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया, और सुहैब ने अपने लिए

to Madinah where Abu Bakr, 'Umar and some men met him. Abu Bakr told him, 'A profitable sale, Abu Yahya!' Suhayb asked what he meant and he told him about the revelation of the ayah.	एक ऊँट और कुछ ज़ादे-राह की शर्त रखी, फिर मदीना रवाना हो गए। वहाँ अबू बक्र, उमर और चंद दूसरे लोगों ने उनसे मुलाक़ात की। अबू बक्र ने उनसे कहा: "ऐ अबू यह्या! यह सौदा बहुत नफ़ा बख्श रहा!" सुहैब ने पूछा कि इससे उनकी क्या मुराद है, तो उन्होंने उन्हें इस आयत के नाज़िल होने के बारे में बताया।"
Al-Hasan said, 'Do you know about whom this ayah was revealed? It was revealed about a Muslim who met an unbeliever and told him, "Say: 'There is no god but Allah'. If you say it, your property and life are safe." He refused to say it. The Muslim said, "By Allah, I will sell myself to Allah" and he advanced and fought until he was killed.' It is said that it was revealed about all those who command what is known to be right and forbid what is recognised as wrong and that is the way it was interpreted by 'Umar, 'Ali and Ibn 'Abbas. 'Ali and Ibn 'Abbas said, 'Two	"हसन बसरी ने फ़रमाया: "क्या तुम जानते हो कि यह आयत किस के बारे में नाज़िल हुई? यह एक ऐसे मुसलमान के बारे में नाज़िल हुई जिस की मुलाक़ात एक काफ़िर से हुई। उसने उस से कहा: 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कह दो। अगर तुम यह कह दोगे तो तुम्हारा माल और जान महफ़ूज़ हो जाएँगे। लेकिन उसने यह कहने से इंकार कर दिया। तब उस मुसलमान ने कहा: 'अल्लाह की क़सम! मैं अपने आप को अल्लाह के हाथ बेचता हूँ।' फिर वह आगे बढ़ा, लड़ा, यहाँ तक कि शहीद हो गया।" यह भी कहा गया है कि यह आयत हर उस शख़्स के बारे में नाज़िल हुई है जो नेकी का हुक्म देता है और

men fought and the one who was trying to make the corrupter change his ways said, "Be fearful of Allah!" The corrupter refused and pride took hold of him. So the one who was trying to change him sold himself to Allah and fought him. So the two fought.'	बुराई से रोकता है। यही तफ़्सीर उमर, अली और इब्न अब्बास से मनक़ूल है। अली और इब्न अब्बास ने फ़रमाया: "दो आदमियों में लड़ाई हुई। उनमें से जो शख़्स फ़साद करने वाले को उसकी रविश बदलने की कोशिश कर रहा था, उसने कहा: 'अल्लाह से डरो!' मगर फ़साद करने वाले ने इंकार कर दिया और तकब्बुर ने उसे अपनी गिरफ़्त में ले लिया। चुनाँचे उस शख़्स ने, जो उसे बदलने की कोशिश कर रहा था, अपने आप को अल्लाह के हाथ बेच दिया और उस से लड़ पड़ा। फिर दोनों ने जंग की।"
Al-Khalil said, ''Umar ibn al-Khattab heard a man reciting this ayah and said, "We belong to Allah and to Him we return. A man stood commanding what is known to be right and forbidding what is recognised as wrong and was killed.' It is said that 'Umar heard Ibn 'Abbas say, 'Two men fought,' when the reciter recited this ayah. He asked him about what	"ख़लील ने कहा: "उमर बिन ख़त्ताब ने एक शख़्स को यह आयत पढ़ते हुए सुना तो फ़रमाया: 'इन्ना लिल्लाहि वा इन्ना इलैहि राजिऊन।' एक आदमी नेकी का हुक्म देता और बुराई से रोकता हुआ खड़ा हुआ, फिर क़त्ल कर दिया गया।" यह भी कहा गया है कि जब क़ारी ने यह आयत तिलावत की तो उमर ने इब्न अब्बास को यह कहते हुए सुना: "दो आदमी आपस में लड़ पड़े थे।"

he had said and he explained it to him in this way. 'Umar said to him, 'May Allah bless you, Ibn 'Abbas!'	उमर ने उनसे पूछा कि उन्होंने क्या कहा है, तो इब्न अब्बास ने उन्हें उसी तरह उसकी वज़ाहत की। इस पर उमर ने फ़रमाया: "अल्लाह तुम्हें बरकत दे, ऐ इब्न अब्बास!"
It is also said that it was revealed about someone who leaps into the fight. Hisham ibn 'Amir attacked the ranks at Constantinople and fought until he was slain and Abu Hurayrah recited: 'And among the people there are some who give up everything, desiring the good pleasure of Allah.' Something similar is related from Abu Ayyub.	"यह भी कहा गया है कि यह आयत उस शख़्स के बारे में नाज़िल हुई जो जंग में बेख़ौफ़ होकर कूद पड़ता है। हिशाम बिन आमिर ने कुस्तुनतुनिया में दुश्मन की सफ़ों पर हमला कर दिया और लड़ते रहे यहाँ तक कि शहीद हो गए। इस मौक़े पर अबू हुरैरह ने यह आयत तिलावत की: "और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए अपनी जान तक बेच देते हैं।" इसी तरह की रिवायत अबू अय्यूब से भी मनक़ूल है।"
It is also said that it was revealed about those martyred in the Raji expedition. Qatadah said that it refers to the Muhajirun and Ansar. It is said that it was revealed about 'Ali when the Prophet left him on his bed on the night he went out to the cave as we will deal	"यह भी कहा गया है कि यह आयत वाक़िआ-ए-रजीअ में शहीद होने वालों के बारे में नाज़िल हुई। क़तादा ने कहा कि इससे मुराद मुहाजिरीन और अंसार हैं। यह भी कहा गया है कि यह आयत अली के बारे में नाज़िल हुई, जब नबी ने ग़ार की तरफ़ रवाना होने की रात

with in Surat at-Tawbah. It is said that the ayah is general and applies to everyone striving in the way of martyrdom for Allah's sake or changing something wrong. We have already mentioned the ruling on someone who attacks the ranks of the enemy. The rulings of someone who changes something wrong will come in Al Imran.	उन्हें अपने बिस्तर पर छोड़ा था, जैसा कि उसका ज़िक्र हम सूरह तौबह में करेंगे। यह भी कहा गया है कि यह आयत आम है और हर उस शख़्स को शामिल है जो अल्लाह की राह में शहादत के हुसूल के लिए कोशिश करता है या किसी बुराई को बदलने की जद्दोजहद करता है। हम पहले ही उस शख़्स के हुक्म का ज़िक्र कर चुके हैं जो दुश्मन की सफ़ों पर हमला करता है। और बुराई को बदलने वाले शख़्स के अहकाम सूरह आल-ए-इमरान में आएँगे।"
'Yashri means 'to sell'. 'Selling the self' means to expend it in obeying Allah's commands. The verb can also mean 'to purchase'. We see this interpretation of the ayah in the story of Suhayb because he purchased himself with his property and did not sell it, unless it is said that Suhayb offering to fight them was selling himself to Allah, in which case the word bears its	""यश्री" का मतलब "बेचना" है। "अपने आप को बेचने" से मुराद यह है कि इंसान अपने आप को अल्लाह के अहकाम की इताअत में खपा दे। यह फ़ेल "खरीदने" के मानी में भी आता है। आयत की यह तफ़्सीर हमें सुहैब के वाक़िए में नज़र आती है, क्योंकि उन्होंने अपने माल के बदले अपनी जान को खरीदा था, न कि बेचा था। अलबत्ता अगर यह कहा जाए कि सुहैब का उन लोगों से लड़ने की

normal meaning.	पेशकश करना अपने आप को अल्लाह के हाथ बेचना था, तो फिर यह लफ़्ज़ अपने अस्ल और मारूफ़ मानी ही में होगा।"
You who believe! enter Islam totally. Do not follow in the footsteps of Shaytan. He is an outright enemy to you. [2:208]	"ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के नक़्शे-क़दम पर न चलो। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।" [अल-बक़रह: 208]
You who believe! enter Islam totally.	"ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ।"
After Allah made it clear that people are either believers, unbelievers or hypocrites, He says, "Follow only one religion and agree on Islam and remain firm in it." Here the word *salm* means Islam as Mujahid said and as is related from Ibn 'Abbas. Part of that is seen in the words of the Kindi poet:	"अल्लाह तआला ने यह वाज़ेह करने के बाद कि लोग या तो मोमिन हैं, या काफ़िर, या मुनाफ़िक़, फ़रमाया: "सिर्फ़ एक ही दीन की पैरवी करो, इस्लाम पर मुत्तफ़िक़ रहो, और उसी पर मज़बूती से क़ायम रहो।" यहाँ "सिल्म" से मुराद इस्लाम है, जैसा कि मुजाहिद ने कहा है, और यही इब्न अब्बास से भी मनक़ूल है। इस मानी की ताईद किंदी शायर के इस क़ौल से भी होती है:"

I called my tribe to Islam (*salm*) when I saw them turn their backs on us.	"मैंने अपनी क़ौम को इस्लाम (सिल्म) की तरफ़ बुलाया, जब मैंने उन्हें देखा कि वह हम से मुँह मोड़ रहे हैं।"
This is calling them to Islam when Kindah apostasised after the death of the Prophet under al-Ashath ibn Qays al-Kindi. Another reason that it cannot mean 'truce or a peace treaty' here is because the Muslims were never commanded to enter into a truce in this way. Rather the Prophet was told to incline to peace if the enemy inclined to it, but not to initiate it. Aṭ-Tabari said that. It is said that Allah is here commanding those who articulate belief with their tongues to enter into it with their hearts as well. Tawus and Mujahid said that it means, 'Enter under the authority of the din.' Sufyan ath-Thawri says that it refers to all types of piety.	"यह शेर उस वक़्त का है जब नबी की वफ़ात के बाद किंदह क़बीला, अशअस बिन क़ैस किंदी की क़ियादत में मुर्तद हो गया था, और शायर उन्हें इस्लाम की तरफ़ बुला रहा था। एक और वजह यह है कि यहाँ "सिल्म" का मतलब "सुल्ह" या "अमन का मुआहिदा" नहीं हो सकता, क्योंकि मुसलमानों को इस तरह ख़ुद से सुल्ह में दाख़िल होने का हुक्म कभी नहीं दिया गया। बल्कि नबी को यह हुक्म दिया गया था कि अगर दुश्मन सुल्ह की तरफ़ माइल हो तो आप भी सुल्ह की तरफ़ माइल हो जाएँ, लेकिन ख़ुद इब्तिदा न करें। यह बात तबरी ने बयान की है। यह भी कहा गया है कि यहाँ अल्लाह तआला उन लोगों को हुक्म दे रहा है जो अपनी ज़बान से ईमान का इकरार करते हैं कि वह अपने दिलों से भी उसमें दाख़िल हो जाएँ। ताऊस और मुजाहिद ने कहा है कि इसका मतलब है: "दीन की इताअत

	और उसके हुक्म के तहत दाख़िल हो जाओ।" सुफ़यान सौरी कहते हैं कि इससे मुराद हर क़िस्म की नेकी और तक़्वा है।"
It is read both as *salm* (Warsh) and *silm* (Hafṣ) and they mean the same. This is the position of most of the Basrans and they use both to signify Islam and to signify 'truce'. Abu 'Amr ibn al-Ala distinguished between them and here he recited *as-silm* meaning Islam, and recited *as-salm* in *al-Anfal* and *Muhammad* where he said that it means 'truce'. Al-Mubarrad denied this difference. 'Aṣim al-Jahdari said that *silm* is Islam, *salm* is truce and *salam* is submission. Muhammad ibn Yazīd disliked this distinction and said, 'Language is not defined like this. Language is defined by oral transmission, not on the basis of analogy. Someone who makes a distinction like this requires	"इसे "सल्म" (वरश की क़िराअत) और "सिल्म" (हफ़्स की क़िराअत) दोनों तरह पढ़ा गया है, और दोनों का मानी एक ही है। यह अक्सर बसरी नहवियों का मौक़िफ़ है, और वह इन दोनों अल्फ़ाज़ को इस्लाम और "सुल्ह" दोनों मानों में इस्तेमाल करते हैं। अबू अम्र बिन अल-अला ने इन दोनों में फ़र्क किया है। यहाँ उन्होंने "अस्सिल्म" पढ़ा, जिस का मतलब इस्लाम है, जबकि सूरह अनफ़ाल और सूरह मुहम्मद में "अस्सल्म" पढ़ा, जहाँ उनके नज़दीक उसका मतलब "सुल्ह" है। अल-मुबर्रद ने इस फ़र्क का इंकार किया है। आसिम अल-जाहदरी ने कहा कि "सिल्म" इस्लाम है, "सल्म" सुल्ह है, और "सलाम" इताअत व फ़रमाँबरदारी है।

some evidence.' The Basrans said that *silm*, *salm* and *salam* are employed with the same meaning. Al-Jawhari said that *silm* and *salm* mean truce, derived from the root meaning of submission. At- Ṭabari says that the word means Islam.	मुहम्मद बिन यज़ीद ने इस फ़र्क को नापसंद किया और कहा: "ज़बान इस तरह मुतअय्यन नहीं की जाती। ज़बान की बुनियाद समाअ और नक़्ल पर होती है, क़ियास पर नहीं। जो शख़्स इस तरह का फ़र्क बयान करे, उसे उस पर कोई दलील पेश करनी चाहिए।" बसरी उलेमा कहते हैं कि "सिल्म", "सल्म" और "सलाम" सब एक ही मानी में इस्तेमाल होते हैं। अल-जौहरी ने कहा कि "सिल्म" और "सल्म" दोनों का मतलब सुल्ह है, और यह लफ़्ज़ अस्ल में "इताअत व फ़रमाँबरदारी" के मानी से माख़ूज़ है। तबरी कहते हैं कि यहाँ इस लफ़्ज़ से मुराद इस्लाम है।"
Regarding this ayah, Hudhayfah ibn al-Yaman said, 'Islam is divided into eight parts. The prayer is one part, zakat is one part, fasting is one part, hajj is one part, 'umrah is one part, jihad is one part, commanding what is known to be right is one part, and forbidding what is recognised as wrong is one part.	"इस आयत के बारे में हुज़ैफ़ा बिन यमान ने फ़रमाया: "इस्लाम आठ हिस्सों में तक़्सीम है। नमाज़ एक हिस्सा है, ज़कात एक हिस्सा है, रोज़ा एक हिस्सा है, हज एक हिस्सा है, उमरा एक हिस्सा है, जिहाद एक हिस्सा है, नेकी का हुक्म देना एक हिस्सा है, और बुराई से रोकना एक हिस्सा है। महरूम व नामुराद है वह शख़्स जिस के पास इस्लाम का कोई

Disappointed is he who has no part of Islam.’	हिस्सा न हो।”
Ibn ‘Abbas said that it was revealed about the People of the Book and the meaning is: ‘You who believe in Musa and ‘Isa, enter into Islam totally through Muhammad.’ It is reported in Sahih Muslim from Abu Hurayrah that the Prophet said, ‘By the One who has the soul of Muhammad in His hand, any Jew or Christian who hears this and then dies without believing in what I was sent with will be one of the people of the Fire.’	"इब्न अब्बास ने फ़रमाया कि यह आयत अहले-किताब के बारे में नाज़िल हुई, और इसका मतलब यह है: “ऐ वह लोगो जो मूसा और ईसा पर ईमान रखते हो! मुहम्मद के ज़रिए पूरे के पूरे इस्लाम में दाख़िल हो जाओ।” सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरह से रिवायत है कि नबी ने फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मुहम्मद की जान है! जो भी यहूदी या नस्रानी मेरे बारे में सुने, फिर उस हाल में मर जाए कि वह उस चीज़ पर ईमान न लाया हो जिस के साथ मुझे भेजा गया है, तो वह जहन्नम वालों में से होगा।”
‘Kaffatan’ means ‘totally’ and it is an adverb modifying ‘Islam’ or ‘believers’. It is derived from the expression, ‘kaffa’ meaning ‘prevented’. So none of you should be prevented from entering Islam. Kaff is stoppage. The hem	"“काफ्फ़तन” का मतलब है “पूरे तौर पर” या “मुकम्मल तौर पर”, और यह या तो “इस्लाम” की सिफ़त है या “ईमान वालों” की हालत को बयान करता है। यह लफ़्ज़ “कफ़्फ़” से निकला है, जिस का मानी है “रोकना”। यानी तुम में से किसी को भी इस्लाम में दाख़िल होने से न रोका

(kuffah) of a sleeve stops it from unravelling just as the scale (kiffah) of a balance collects what is weighed and keeps it from spreading. The hand (kaff) of a person is that which collects the things that benefit and harm him. The eyes of a blind (makfuf) man are prevented from seeing. The communal group is called kaffah because it prevents separation.	जाए। "कफ़्फ़" के मानी रोकने और थामने के हैं। क़मीस या आस्तीन का किनारा (कुफ्फ़ह) कपड़े को उधड़ने से रोकता है। इसी तरह तराज़ू का पलड़ा (किफ्फ़ह) वज़न की गई चीज़ को जमा रखता है और उसे फैलने से बचाता है। इंसान की हथेली (कफ़्फ़) भी इसी लिए कहलाती है कि वह फ़ायदा और नुक़सान की चीज़ों को समेटती है। अंधे शख़्स (मकफ़ूफ़) की आँखें देखने से रोकी गई होती हैं। जमाअत को भी "काफ्फ़ह" कहा जाता है क्योंकि वह लोगों को मुन्तशिर और जुदा होने से रोकती है।"
Do not follow in the footsteps of Shaytan.	"शैतान के नक़्शे-क़दम पर न चलो।"
Muqatil said, ‘‘Abdullah ibn Salam and his people asked for permission to recite the Torah in the prayer and to do some of what is in the Torah and this was revealed. It means: "It is better to follow the Sunnah now that Muhammad has been	"मुक़ातिल ने कहा: "अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों ने यह इजाज़त तलब की थी कि वह नमाज़ में तौरेत की तिलावत करें और तौरेत की बाज़ बातों पर अमल करें, तो यह आयत नाज़िल हुई। इसका मतलब यह है: 'अब जबकि मुहम्मद मबऊस हो चुके हैं, तो सुन्नत की पैरवी करना

sent than to follow the footsteps of Shaytan.'" It is also said that it means: 'Do not follow the path that Shaytan calls you to.'	शैतान के नक़्शे-क़दम की पैरवी करने से बेहतर है।' यह भी कहा गया है कि इसका मतलब है: "उस रास्ते पर न चलो जिस की तरफ़ शैतान तुम्हें बुलाता है।"
If you backslide after the Clear Signs have come to you, know that Allah is Almighty, All-Wise. [2:209]	"फिर अगर तुम वाज़ेह निशानियाँ आ जाने के बाद भी फिसल जाओ, तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त, हिकमत वाला है।" [अल-बक़रह: 209]
If you backslide	"अगर तुम फिसल जाओ।"
In other words, if you turn back from the path of righteousness. The root of *zalal* (backslide) relates to the foot slipping and so it is used metaphorically for reverting from beliefs, opinions and other such things.	"यानी अगर तुम राहे-रास्त से फिर जाओ। "ज़लल" (फिसलने) की अस्ल जड़ क़दम के फिसलने से मुतअल्लिक़ है, इसी लिए यह लफ़्ज़ मजाज़ी तौर पर अक़ाइद, आराअ और इसी तरह की दूसरी चीज़ों से फिर जाने के मानी में इस्तेमाल होता है।"
after the Clear Signs have come to you,	"वाज़ेह निशानियाँ तुम्हारे पास आ जाने के बाद,"
This may refer to the miracles of the Prophet or to the ayahs	"अगर ख़िताब मोमिनों से हो तो

of the Quran if it is addressed to the believers. If it is addressed to the people of the Book, the Clear Signs are what came in their Books telling them about Muhammad. The ayah contains evidence that the punishment of a man of knowledge for a wrong action is greater than the punishment of an ignorant person and is also evidence that someone who has not heard the call of Islam is not an unbeliever by the fact of not observing its laws. An-Naqqash related that when Kab al-Ahbar became Muslim, he used to study the Qur'an. The one who was teaching him recited to him: 'Know that Allah is Ever-Forgiving, Forbearing.' Kab said, 'I do not think that that is how it is.' A man passed by them and Kab asked, 'How do you recite this ayah?' The man answered, 'Know that Allah is Almighty, All-Wise.' Kab said, 'That is correct.' The Name 'Aziz signifies the One Who cannot be stopped from doing	इससे मुराद नबी के मुअजिज़ात या क़ुरआन की आयात हो सकती हैं। और अगर ख़िताब अहले-किताब से हो तो "वाज़ेह निशानियाँ" से मुराद वह बातें हैं जो उनकी किताबों में मुहम्मद के बारे में आई थीं। इस आयत में इस बात की दलील है कि किसी आलिम शख़्स की ग़लती पर सज़ा, जाहिल शख़्स की सज़ा से ज़्यादा सख़्त होती है। इसी में इस बात का भी सुबूत है कि जिस शख़्स तक इस्लाम की दावत न पहुँची हो, वह सिर्फ़ इस बिना पर काफ़िर नहीं कि उसने इस्लाम के अहकाम पर अमल नहीं किया। अन-नक़्क़ाश ने रिवायत किया है कि जब कअब अल-अहबार मुसलमान हुए तो वह क़ुरआन का मुतालआ किया करते थे। जो शख़्स उन्हें क़ुरआन पढ़ा रहा था, उसने यह आयत यूँ पढ़ी: "जान लो कि अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बर्दबार है।" कअब ने कहा: "मेरा ख़याल नहीं कि यह आयत इस तरह है।" इतने में एक शख़्स उनके पास से गुज़रा, तो कअब ने उससे पूछा: "तुम यह आयत कैसे पढ़ते हो?" उसने जवाब दिया: "जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त, हिकमत

anything He wills, and the Name Hakim signifies the One Who is wise in what He does.	वाला है।" कअब ने कहा: "यही दुरुस्त है।" अल्लाह का नाम "अज़ीज़" उस ज़ात को ज़ाहिर करता है जिसे अपने इरादे के किसी काम से रोका नहीं जा सकता, और "हकीम" उस ज़ात को ज़ाहिर करता है जो अपने हर काम में हिकमत वाला है।"
What are they waiting for but for Allah to come to them in the shadows of the clouds, together with the angels, in which case the matter will have been settled? All matters return to Allah. [2:210]	"वह किस चीज़ का इंतज़ार कर रहे हैं, सिवाए इस के कि अल्लाह उनके पास बादलों के सायों में फ़रिश्तों के साथ आ जाए, फिर फ़ैसला कर दिया जाए? और तमाम मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटाए जाते हैं।" [अल-बक़रह: 210]
What are they waiting for but for Allah to come to them in the shadows of the clouds	"वह किस चीज़ का इंतज़ार कर रहे हैं, सिवाए इस के कि अल्लाह उनके पास बादलों के सायों में आ जाए।"
This is referring to those who do not enter into Islam and implies obstinacy on their part. Qatadah, Abu Jafar Yazid ibn al-Qaqa and aḍ-Dahhak recited	"यह उन लोगों के बारे में है जो इस्लाम में दाख़िल नहीं होते, और इसमें उनकी ज़िद और हटधर्मी की तरफ़ इशारा है। क़तादा, अबू जाफ़र यज़ीद बिन अल-

zilal instead of *zulal*. Abu Ja'far read 'angels' in the genitive, as being in apposition to 'clouds'. It implies 'with the angels'. This is an Arabic usage. Zulal is the plural of zullah. Al-Akhfash says that if it is in the genitive, it means 'in the angels'. He says that the nominative reading is better as is evidenced in other ayahs like 6:158 and 89:22. The reading of 'Abdullah has: 'What are they waiting for but for Allah and the angels to come to them'. Qatadah says that it refers to the angels coming to take their souls. It is also said to refer to the Day of Rising, and that is more likely.	क़अक़ा और ज़ह्हाक ने "ज़िलाल" पढ़ा है, "ज़ुलल" के बजाय। अबू जाफ़र ने "अल-मलाइका" को हालत-ए-जर में पढ़ा, ताकि वह "अल-ग़माम" (बादलों) के ताबे हो जाए। इस सूरत में मानी होगा: "फ़रिश्तों के साथ"। यह अरबी ज़बान का एक मारूफ़ उस्लूब है। "ज़ुलल", "ज़ुल्लह" की जमा है। अख़फ़श कहते हैं कि अगर यह हालत-ए-जर में हो तो उसका मानी होगा: "फ़रिश्तों में"। वह कहते हैं कि हालत-ए-रफ़अ वाली क़िराअत ज़्यादा बेहतर है, जैसा कि दूसरी आयात, मसलन 6:158 और 89:22 में उसकी ताईद मिलती है। अब्दुल्लाह की क़िराअत में है: "वह किस चीज़ का इंतज़ार कर रहे हैं, सिवाए इस के कि अल्लाह और फ़रिश्ते उनके पास आ जाएँ।" क़तादा कहते हैं कि इससे मुराद फ़रिश्तों का उनकी रूहें क़ब्ज़ करने के लिए आना है। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद क़ियामत का दिन है, और यही बात ज़्यादा राजिह मालूम होती है।"
Abu-l-'Aliyah and ar-Rabi'	"अबू अल-आलियह और रबीअ ने

said that the angels will come to them in the shadows of the clouds and Allah will come to them in whatever way He wishes. Az-Zajjaj said, 'It implies "in the shadows of the clouds and among the angels". It is said that the words should not be taken literally in respect of Allah. It means for the command and judgment of Allah to come to them. It is said that it means that the reckoning and punishment that Allah has promised them is lying in wait for them in the shadows, as we find in the ayah: 'Then Allah came upon them from where they least expected it.' This means that He will cause them disappointment. This is what az-Zajjaj said. The first is the view of al-Akhfash. It is also possible that what is being referred to is the repayment they will receive for their wrong actions and that this particular usage is employed to intensify the threat and to convey alarm. This is also the	कहा है कि फ़रिश्ते बादलों के सायों में उनके पास आएँगे, और अल्लाह जिस तरह चाहेगा उनके पास आएगा। ज़ज्जाज ने कहा: "इस का मतलब यह है: 'बादलों के सायों में और फ़रिश्तों के दरमियान।'" यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला के बारे में इन अल्फ़ाज़ को ज़ाहिरी मानी पर महमूल नहीं करना चाहिए। इस का मतलब यह है कि अल्लाह का हुक्म और फ़ैसला उनके पास आएगा। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद वह हिसाब और अज़ाब है जिस का अल्लाह ने उनसे वादा किया है, जो उनके लिए सायों में घात लगाए बैठा है, जैसा कि इस आयत में है: "फिर अल्लाह उन पर वहाँ से आया जहाँ से उन्हें गुमान भी न था।" यानी अल्लाह उन्हें नाकामी और रुसवाई से दोचार करेगा। यह बात ज़ज्जाज ने कही है। पहला क़ौल अख़फ़श का है। यह भी मुमकिन है कि यहाँ उनके बुरे आमाल की सज़ा मुराद हो, और इस उस्लूब को धमकी को शदीद करने और ख़ौफ़ पैदा करने के लिए इख़्तियार किया गया हो। इसी तरह

case elsewhere in the story of the approach of Nebuchadnezzar.	का अंदाज़ बुख़्त नसर के हमले के क़िस्से में भी पाया जाता है।"
The word 'coming' can entail all these ideas because its root linguistically means to aim for something and so the ayah means: 'What are they waiting for but for Allah to show them something by means of one of His created forms, with the aim of repaying them and judging their affairs?'	"लफ़्ज़ "आना" इन तमाम मआनी को शामिल हो सकता है, क्योंकि लुग़वी एतिबार से इस की अस्ल का मानी किसी चीज़ की तरफ़ क़स्द और इरादा करना है। लिहाज़ा आयत का मतलब यह है: "वह किस चीज़ का इंतज़ार कर रहे हैं, सिवाए इस के कि अल्लाह अपनी मख़लूक़ की किसी सूरत के ज़रिए उन्हें कोई चीज़ ज़ाहिर करे, ताकि उन्हें बदला दे और उनके मामलात का फ़ैसला करे?"
Allah also has the capability to originate an event to which He refers by the words 'coming' or 'settling'. So here He can originate an action which He calls 'coming'. But His actions are without any cause or instrument. Glory be to Him! As transmitted by Abu Salih, Ibn 'Abbas said, 'This is part of what is unknowable and should not be explained.' So some people were silent about its interpretation and others	"अल्लाह तआला इस बात पर भी क़ादिर है कि वह कोई ऐसा फ़ेल पैदा फ़रमाए जिसे वह "आना" या "आगे बढ़ना" के अल्फ़ाज़ से ताबीर करे। चुनाँचे यहाँ वह एक ऐसा फ़ेल पैदा कर सकता है जिसे वह "आना" नाम दे। मगर उसके अफ़आल किसी सबब या आले के मुहताज नहीं। वह पाक और बुलंद है! अबू सालेह की रिवायत के मुताबिक़ इब्न अब्बास ने फ़रमाया: "यह उन उमूर में से है जिन की हक़ीक़त मालूम नहीं की जा सकती, इस लिए

interpreted it as we have mentioned. It is said that 'fi' (in) here means 'bi' (through), so He comes to them through clouds. There is also the ḥadith which states: 'Allah will come to them in a form…', meaning a form which is to test them. It is not permitted to take this and similar things which come in the Quran and in reports as meaning movement in a place, movement in general, or disappearance, because such things are attributes of physical bodies. Allah is greatly exalted and elevated, the Master of Majesty and Nobility. He is far beyond being anything like physical bodies.	इस की तफ़्सीर बयान नहीं की जानी चाहिए।" चुनाँचे कुछ लोगों ने इस की तफ़्सीर में ख़ामोशी इख़्तियार की, जबकि कुछ ने इस की तावील उसी तरह की है जैसा कि हम ने ज़िक्र किया। यह भी कहा गया है कि यहाँ "फ़ी" के मानी "बि" के हैं, यानी अल्लाह बादलों के ज़रिए उनके पास आएगा। इसी तरह हदीस में आया है: "अल्लाह उनके पास एक सूरत में आएगा..." यानी ऐसी सूरत में जो उनके इम्तिहान के लिए होगी। क़ुरआन व हदीस में आने वाले इस तरह के अल्फ़ाज़ को हरकत, किसी जगह मुन्तक़िल होने, आम जिस्मानी हरकत, या ग़ायब होने के मानी में लेना जाइज़ नहीं, क्योंकि यह सब जिस्मानी मख़लूक़ात की सिफ़ात हैं। अल्लाह तआला, जो जलाल और बुज़ुर्गी का मालिक है, इन तमाम सिफ़ात से बहुत बुलंद व बरतर है। वह जिस्मों की मुशाबहत से पाक है।"
The word for 'clouds' (ghamam) in this ayah means 'thin fine white clouds. They	"इस आयत में "ग़माम" से मुराद बारीक, नरम और सफ़ेद बादल हैं।

are called that because they cover, for the verb ghamma means 'to cover'.	उन्हें यह नाम इस लिए दिया गया है क्योंकि वह ढाँप लेते हैं, और "ग़म्म" का मानी है "ढाँपना"।"
in which case the matter will have been settled	"फिर फ़ैसला कर दिया जाएगा।"
Muadh ibn Jabal recited, 'qada'u-l-amr'. Yahya ibn Ya'mar recited 'qudiyy' l-umur' in the plural. Most have: 'qudiya-l-amr'. It means that the matter being settled is a reference to the repayment and the punishment of the people of disobedience. Although most readings have 'turja'u-l-umur' ('All matters return to Allah'), Ibn 'Amir, Ḥamzah and al-Kisai have 'tarji'u-l-umur'. Both readings are good and have the same meaning. All affairs return to Allah, before and after. He calls attention to remembering that on the Day of Rising things that belonged to the kings of this world will disappear.	"मुआज़ बिन जबल न "क़ज़ाउल-अम्र" पढ़ा है। यह्या बिन यअमर ने जमा के सिग़े के साथ "क़ुदियतिल-उमूर" पढ़ा। जबकि अक्सर क़िराअतों में "क़ुदियाल-अम्र" है। इसका मतलब यह है कि जिस मामले का फ़ैसला किया जाएगा, उससे मुराद नाफ़रमान लोगों को बदला देना और उन्हें सज़ा देना है। अगरचे अक्सर क़िराअतों में "तुर्जअुल-उमूर" ("तमाम मामलात अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाते हैं") आया है, लेकिन इब्न आमिर, हमज़ह और किसाई ने "तर्जिअुल-उमूर" पढ़ा है। दोनों क़िराअतें दुरुस्त हैं और दोनों का मानी एक ही है। तमाम मामलात पहले भी और बाद में भी अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं। इसमें इस बात की तरफ़ तवज्जोह दिलाई गई है कि क़ियामत के दिन

	दुनिया के बादशाहों की मिल्कियतें और इक़्तिदार सब ख़त्म हो जाएँगे।"